मासिक ई-पत्रिका
भोजपुरी
2015 अगस्त, अंक 7

आखर

एगो डेग भोजपुरी साहित्य खाति

ISSN 2395-7255

www.aakhar.com
www.facebook.com/Aakhar
@aakharbhojpuri

प्रकाशन / संपादन मंडल :
संजय सिंह , सिवान
देवेंद्र नाथ तिवारी , वर्धा
शशि रंजन मिश्र , नई दिल्ली
नबीन कुमार , दुबई

तकनीकी -एडिटिंग, कम्पोजिंग
अश्विनी रूद्र , न्यू यॉर्क
अनिमेष कुमार वर्मा , अबू धाबी

छाया चित्र सहयोग
स्वयम्बरा बक्सी , पी. राज सिंह,
अजय कुमार, शायक आलोक

आखर पता
ग्राम पोस्ट- पंजवार (पोखरी)
सिवान , बिहार 841509

क़ानूनी सलाहकार
ललितेश्वर नाथ तिवारी , पटना

ISSN: 2395 –7255

आखर

वर्ष: 2015, अगस्त। अंक 7। **ई - पत्रिका**

सब पद अवैतनिक बा।

भोजपुरी लगे सब कुछ बा ..
प्रमोद तिवारी

भोजपुरी लोकगीत : क्रान्ति के स्वर
देवेंद्र नाथ तिवारी

आजादी, इंसान से देश तक
श्वेताभ रंजन

बतकूचन
सौरभ पांडे

भोजपुरी के पहचान : तब आ अब
मनोरमा सिंह

कलाम साहेब के कमी हमेशा अखरी
तंग इनायतपुरी

भोजपुरी में आजाद भारत आ रसूल अंसारी
मुन्ना कुमार पांडे

ग़रीब के बेटी
अतुल कुमार राय

परामर्श मंडल
प्रभाष मिश्र , नासिक
अतुल कुमार राय , बनारस
धनंजय तिवारी , मुंबई
चंदन सिंह , पटना
बृज किशोर तिवारी , सोनभद्र
सुधीर पाण्डेय , दुबई
पंडित राजीव , फ़रीदाबाद
अजित तिवारी , दिल्ली
अमित मिश्र, डुमरांव

प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरूरी नइखे की संपादक के विचार लेखक के विचार से मिले । लेख पे विवाद के जिमेदारी लेखक के बा।

संपर्क : आपन मौलिक रचना , लेख ,कविता , फोटो , विचार आखर के ईमेल-आईडी aakharbhojpuri@gmail.com पे भेज सकेनीं। सुविधा खातिर रचना हिंदी यूनिकोड में ही भेजीं।

मुख्य पृष्ठ छाया/आवरण : पवन (कार्टूनिस्ट)

www.aakhar.com | facebook/Aakhar | Twitter : @aakharbhojpuri

www.bhojpurisahityangan.com

आखर के फुलवारी

आपन बात :	आखर जमात	4
बतकूचन :	सौरभ पाण्डेय	5
कलाम के राम :	आखर टीम	8
कलाम साहेब के कमी हमेशा अखरी :	तंग इनायतपुरी	9
भोजपुरी के लगे सबकुछ बा, बस कर्ण सिंह जइसन लोग नइखे :	प्रमोद कुमार तिवारी	11
भोजपुरी (कविता) :	किशोर शरण शर्मा	15
भोजपुरी ना पहिले कवनों पहचान के मोहताज रहे ना अब :	मनोरमा सिंह	16
करोड़ों भोजपुरीआ के आवाज कब बनी संसद :	प्रभाष मिश्र	17
भोजपुरी संस्कृति के वर्तमान स्वरूप :	प्रो॰ राजगृह सिंह	19
भोजपुरी में बांग्ला भाषी विद्वानन के योगदान :	संतोष पटेल	21
कंत्राकी वाक :	राज मोहन	24
बिन्दु दुनाली के सोन्हु-नीमक :	अश्विनी रुद्र	25
गाँव अभी ले, ना आइलऽ बुद्धन :	नवनीत नीरव	30
आजादी, इंसान से देश तक :	श्वेताभ रंजन	31
सावन (कविता) :	सोनी पाण्डेय	32
तमन्ना (कविता) :	हृषिकेश चतुर्वेदी	32
उ लोग अपना के खेवनहार बतावेला, : बड़ा तरस आवेला उ लोग पर :	निराला	33
माई (कविता) :	अनन्या प्रसाद	34
झूठ :	अनूप श्रीवास्तव	35
सादगी (लघुकथा) :	डा॰ उमेश जी ओझा	36
ईमानदारी (लघुकथा) :	समता सहाय	36
भोजपुरी नाटक : अलबेला :	निलय उपाध्याय	37

नन्ही कली के कहानी बरगद दादा के जुबानी :	ज्योत्सना प्रसाद	39
दू गो कविता :	चंद्रभूषण पाण्डेय	43
दू गो कविता नुरैन के :	नुरैन अंसारी	44
बिहार : काल्हु ना आज ! :	अमित मिश्र	45
तिरंगा (कविता) :	गोरख मस्ताना	46
औपनिवेशिक परिवेश वाला: भोजपुरी अंचल, रसूल अंसारी आ कुछ कविताई	डा॰ मुन्ना पाण्डेय	47
छनुकी चर्चा :	शशि रंजन मिश्र	51
गरीब के बेटी :	अतुल कुमार राय	52
भोजपुरी लोकगीत, क्रान्ति के स्वर:	देवेंद्र नाथ तिवारी	54
नील के नीलामी :	अमित झा	56
दिल जब बच्चा था जी (भाग-7) :	बृजकिशोर तिवारी	59
सपना:हकीकत से अंजान (भाग-2) :	जलज कु॰ अनुपम	60
टुटही पलानी :	नथुनी प्र॰ पाण्डेय	63
मुजरिम :	स्वस्ति आनयन	64
असल मायने में डिजिटल इंडिया:	गौरव सिंह	66
अन्हार :	आलोक पाण्डेय	69
बेटी मरे त मरे कुँवार (समीक्षा) :	शशि रंजन मिश्र	70
कबिरा खड़ा बाजार मे (समीक्षा) :	यशवंत कु॰ सिंह	71
हथेली में समय (भाग-5) :	अनिल प्रसाद	74
राखी डे –एगो दिन भाई बहिन के रिश्ता के नाम :	अनिमेष कु॰ वर्मा	76
राउर बात :	आखर के ओर से	78
निहोरा :	आखर के ओर से	79

आपन बात

अगस्त के महीना भारतीय इतिहास के गौरव गाथा गावत आवेला । सभे एकरा आगमन के प्रतीक्षा करेला। उल्लास उमंग आ राष्ट्रीय चेतना के ज्वार अपना चरम पर रहेला। काहें ना रहे ? जवन जंग पलासी के मैदान में शुरु भइल रहे उ 190 साल बाद एहि महीना में आपन लक्ष्य प्राप्त कइलस। 1947 में आजादी मिलल, लेकिन एकर पटकथा 5 साल पहिलहीं लिखा गइल रहे। उहो अगस्त के महीना रहे। “भारत छोड़ो आंदोलन” के बाद साफ हो गइल रहे कि अंग्रेजी शासन के दिन नियरा आइल बा। 15 अगस्त 1947 के सदियन के सपना साकार भइल। आपन ध्वज आ आपन शासनाध्यक्ष मिललें। देश एगो नया राह पर चल पड़ल।

भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में भोजपुरियन के योगदान के लेके कुछ लोग बड़ा टेढ़ नजर राखेला। 1857 के क्रांति के पहिलका भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष मानल जाला। एह संघर्ष के बिगुल फूंके वाला लाल रहलन-मंगल पांडेय। एह क्रांति के परवान चढ़ावे वाला रहलन – वीर कुँवर सिंह। एह क्रांति में सर कटावे वाला भोजपुरिया लोगन के संख्या हजारन में रहे। स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन आ भारत छोड़ो आंदोलन के इतिहास भोजपुरिया अवदान के उल्लेख कइला बिना कवनो काम के ना रह जाई। बंगाल के आध्यात्म, महाराष्ट्र के जुझारुपन आ पंजाब के ताव लेले, एक हाथ में लाठी आ दूसरा हाथ के अंगुरियन में कलम के स्याही लपेटले मातृभूमि के सेवा में अपना के समर्पित क देले रहे भोजपुरिया समाज। बेशक आज के आजादी अतीत में भोजपुरिया समाज के रक्त में नहा के प्रकट भइल बा।

मंगल पांडे फाँसी पर, राजिंदर जेलखनवा,
हँसि-हँसि जान दिहले माई के ललनवा !
अमर - सुहागिन के मँगिया उदास तबो,
जियरा में आस रहे, पुरे के सपनवा !!

संसद में भारतीय संविधान के प्राण बसेला। इहे संविधान के संजीवनी देला आ इहे संविधान खातिर प्रश्न बनके भी खड़ा हो जाला। दुनिया के सबसे विशाल संविधान अपना आँचर में समेटले बा भारतीय विविधता के, समानता आ स्वतंत्रता के मूल्यन के आ सबसे बढ़के सांस्कृतिक समादर के अवधारणा के। भाषा संस्कृति के एक पीढ़ी से दूसरा पीढ़ी तक ले जाले। संविधान द्वारा कुछ अइसन भाषा के अंगीकार कइल गइल बा जवन भाषा सदियन से भारतीय अस्मिता के अपना गोदी में खेलवले बाड़ी सन। समय-समय पर विधायिका के सामने कुछ भाषा आपन दावेदारी प्रस्तुत करेली सन संविधान में शामिल होखे खातिर। एह दावेदारी पर ध्यान दिहल जाला आ समर्थ भाषा के संविधान में शामिल कइल जाला। आज के समय के दुर्भाग्य ई बा कि एह स्वाभाविक प्रक्रिया के कई लोग बाधित क के आपन स्वार्थ साधे पर आमादा बा। भोजपुरी एहि बाधा के शिकार बिया। आपन यशस्वी सामर्थ्य लेके भी भोजपुरी विधायिका के घर के सामने कातर नजर आ याचना भरल आँख लेले खाड़ बिया। संवैधानिक प्रक्रिया के सामने एगो सवाल खड़ा बा। एह सवाल के जवाब कब तक मिली, केहू नइखे जानत। हँ ! एतना तय बा कि तब तक ना मिली जब ले संस्कृति के प्राकृतिक बहाव में बनावटी आ स्वार्थ से प्रेरित अवरोध उत्पन्न कइल जाई।

डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम हमनी के बीचे ना रहनी। एगो विचारक, एगो उत्प्रेरक, एगो वैज्ञानिक के साथे सपना देखावेवाला एगो मार्गदर्शक हमनी के बीचे ना रहनी। जन्म से लेके महाप्रयाण तक जवन आदमी आपन राह बनावत, राह के बाधा मिटावत देश के सर्वोच्च पद प्राप्त कइलस उ अपना पाछे मानव मूल्यन के अइसन लकीर छोड़ गइल, जवन युग-युग तक पूजल जाई। भारतीय लोकतंत्र के विशालता आ मजबूती के जीवंत दस्तावेज बा कलाम साहेब के जीवन यात्रा। अगर आँखि में सपना आ जिगर में जुनून रहे त केहू कहीं तक जा सकेला। होई सिद्धांत रुप में कहीं ई दर्शन ! भारतीय जनमानस एह दर्शन के जियेला आ भारत के लोकतंत्र एकरा खातिर समान अवसर उपलब्ध करावेला। नमन बा देश के मानस पटल पर अमिट छाप छोड़ के धरा धाम से विदा लेबे वाला कर्मयोगी के।

सावन के महीना सुखल जमीन पर हरियाली लेके आवेला। रस से भरल महीना अपना साथे सौंदर्य के झुलूआ लेके आवेला। संकोच के बंधन टूट जाला। प्रियतम के इंतजार में प्रेयसी कजरी गावे लागेले। आपन दरद कबो अपना ननद से त कबो अपना गोतिनी से कहत तनिको संकोच ना करे। कबो कबो त प्रकृति से निवेदन आ शिकायत दुनू होला।

घेरी घेरी आइल बदरिया, सजन नाहीं अइले ए रामा,
धीरे धीरे बरसो बदरिया, सजन नाहीं अइले ए रामा !

प्रियतम के आ गइला के बाद झुलूआ झुले के निवेदन आ निवेदन के पक्ष में जबरदस्त तर्क दियाला –

झूला लागल कदम की डारी, झूलें कृष्ण मुरारी ना,
राधा झूले कान्ह झुलावे, कान्हा झूले राधा झुलावे,
पारा पारी ना !

भाई-बहिन के पवित्र रिश्ता के मजबूत बंधन से बान्हे वाला रक्षाबंधन के भोजपुरिया समाज में खास महत्व बा। हमनी के समाज में मान्यता बा कि पत्नी के रक्षा पति करी , बहिन के रक्षा भाई करी आ माई के रक्षा बेटा करी। पति-पत्नी आ माई-बेटा के रिश्ता के परिभाषा दुनिया के हर समाज में प्रायः एके लेखा बा , बाकिर भाई-बहिन के रिश्ता के जवना संजीदगी से हमनी के समाज परिभाषित कइले बा उ अद्वितीय बा। भाई अपना बहिन खातिर आपन सर्वस्व लुटावे खातिर तैयार रहेला त बहिन भी भाई खातिर अपना जान पर आ जाले। राखी के पावन त्यौहार पर सभके शुभकामना।

रउआ स्नेह के माला में गुंथाइल “आखर” के हर फूल आपन महक बिखेर रहल बा। एहि कड़ी में प्रस्तुत बा आजादी के जश्न मनावत, भोजपुरी के उपेक्षा के प्रश्न उठावत साहित्य के विविध रुप में सनाइल, सावन के सौंदर्य आ राखी के मिठास लेले आखर के नवका अंक। विश्वास बा सावन में रउआ नेह के बरखा में “आखर” भींज के जुड़ा जाई।

- आखर टीम

www.bhojpurisahityangan.com

बतकूचन...

सौरभ पाण्डेय

ए बबुआऽऽ.. चढ़ल त बाड़ऽ.. नाहियो गिरलऽ त दू डाढ़न के बीच में ओइजे अँड़स जइबऽ ! अबहीं जानत नइखऽ.. आ अँड़सि गइलऽ त निकहे एगो ड्रामा हो जाई.. " - जॉली के फेंड़ा प चढल देखि के सानू से ना रहाइल।

"चुप रहो ! ..भोत चढ़ा हूँ ट्रीज पे.. आ'म श्योऽ.. आऽ'म डैम श्योऽऽ.. " - जॉली सानू के डपट दिहलस। सानुए के उमिर के, भा एक-दू बरिस एने-ओने के जॉली। ओकरा सानू के चिड़कावल इचिको ना रूचल। तेरह-चौदह बरिस के सानू लागल पं. धरीछन मिसिर से पूछे - "का नाना, ईहो 'ऊहे' हवे का ? चढ़ल त बाडे नीमी के फेंड़ा प.. आ मार 'आम-आम' कइले बाड़े ? ई काहें ?" दुआर प बिटोराइल जमात ! लागल सभे मुँह बवले हा-हा हा-हा करे।

पं० धरीछन मिसिर के लइकी के बेटा हऽ सानू। पाहुन के आपन गाँवहीं में नीमन खेत-पथार बा। खात-पीयत परिवार हऽ। पं. धरीछन मिसिर ग्रामविकास आ पंचायतीराज महकमा के जाने कौ गो परियोजनन के अध्यक्ष-उपाध्यक्ष पद के शोभा बढ़ा चुकल बानीं आ अपनहीं अवकाश लेके आपन सामाजिक आ साहित्यिक रसूख प, आजु पाँच बरिस भइल, पानी चढ़ावत बानीं। उहाँ का एक सुरुए से ललित मन-मिजाज के रसिक रहल बानीं, एहसे कवि -कोविदन के सङ-संघाती उनका बड़ा रूचेला। धन आ समय जब मनमाफिक होखो त मिजाज के परवाज तनिका बेसिये उछाह में रहेला । कार्मिक जीवन से अवकाश लिहला का बाद से त पण्डितजी समाज-कल्याण आ 'भोजपुरी भासा-विकास' में आपना के झोंक देले बानीं। गाँव-जवार के 'अखिल भारतीय' भा 'राष्ट्रीय' जइसन शब्दन से शुरु भइल सायेदे कवनो सामाजिक भा 'भोजपुरी' संस्था होखी जे उहाँ का नाँव आ असीस से जुआत-पाकत नइखे। पण्डितजी के सम्पादन में चौंसठ-पैंसठ पन्ना के एगो अनियतकालीन भोजपुरी पत्रिकओ निकलेले - 'भोजपुरी बहाव'।

सही कहाओ त मिसिरजी के ई खूब ज्ञान बा, जे साहित्य खलसा रचनाधरम के निर्वाह ना हऽ। ई त कलम-कीट लोग होले, जे साहित्य खातिर तप के मौका आ भासा-संवर्धन खातिर स्वाध्याय के अवसर के अपना प सरसत्ती माई के असीस आ किरपा बूझेले ! आ, एह जोगे मीलल बरदान के जन-समाज के जागरन खातिर अपना कान्हे धराइल जिम्मेवारी बूझेले ! पढ़ाई-लिखाई आ स्वाध्याय से तनिका फरिक होके सोचला प भासा आ साहित्य एगो अलगे दुनिया के सीढ़ी बुझाले ! पण्डितजी के एक सुरुए से ई खूब बुझाइल बा, जे साहित्य आ भासा खातिर चढ़त-चढ़ावत अवाज के पाछा निकहा एगो 'गणितओ' के वजूद होला, जेकरा सधला प अगिला के समाजिक पहुँच-प्रतिष्ठा में गजबे के उठान हो जाला। बनारस-बलिया, पटना-छपरा, राँची-टाटा तक ले उहाँ का जाने कौ गो साहित्यिक गोष्ठियन के शोभा बढ़ा चुकल बानीं। आ, अइसना गोष्ठियन में अवसर आ आसन भेंटात रहो, एकरा प खूब नजर रहेला। एह खातिर उहाँ का सहियाइ के जुगतो भिड़ावत रहेनीं ! पण्डितजी के आशु-तुकबन्दी लोग 'ऊहँ-ऊहँ' करत बड़ा रस लेके सूनेला । भलहीं, विधा-विधान आ भासा-शिल्प के मजगर जानकार आपन कपार कूटत रहो । बाकिर, पण्डितजी के विचार में ऊ कपार-कूटू लोग खलसा कलम-कीट लोग हऽ ! माने, जवन असली फ़ायेदा आपन रसूख बनावला में बा, ऊ कलम के घिसाई आ माई-भासा के बोलाई में नइखे ! होइयो ना सके। ई कूल्हि खेल पण्डितजी के निकहा मालूम बा।

चार दिन भइल, एही पं. धरीछन मिसिर के दुआर प एक हाली फेर से चहल-पहल भइल रहे । बड़कू आ माझिल जाना मये परिवार सङे आइल बा लोग। माझिल जाना अपना छोटका का नाँवें 'हरलाल-बाबा' तर रामार्चा आ कीर्तन-जागरन करवावे के बाड़े। रेवाड़ी, हरियाणा में ऊ एगो फैक्टरी में बड़हन ओहदा प बाड़े। जॉली एही माझिल जानाके बड़का लइका हऽ। उनकर

सौरभ पाण्डेय

सौरभ पाण्डेय जी के पैतृकभूमि उत्तरप्रदेश के बलिया जनपद के द्वाबा परिक्षेत्र हऽ। रउआ पचीस बरीस से सपरिवार इलाहाबाद में बानीं । पिछला बाइस बरीस से राष्ट्रीय स्तर के अलग-अलग कॉर्पोरेट इकाई में कार्यरत रहल बानी। आजकाल केन्द्रीय सरकार के परियोजना आ स्कीम के संचालन खातिर एगो व्यावसायिक इकाई में नेशनल-हेड के पद पर कार्यरत बानी । परों को खोलते हुए (सम्पादन), इकड़ियाँ जेबी से (काव्य-संग्रह), छन्द-मञ्जरी (छन्द-विधान) नाँव से राउर किताब प्रकाशित हो चुकल बाडी स। साहित्य के लगभग हर विधा में रउआ रचनारत बानीं आ हिन्दी आ भोजपुरी दूनो भासा में समान रूप से रचनाकर्म जारी बा । साहित्यिक संलिप्तता के दोसर क्षेत्र बा - सदस्य प्रबन्धन समूह ई-पत्रिका,"ओपनबुक्सऑनलाइन डॉट कॉम' ; सदस्य परामर्शदात्री मण्डल त्रैमासिक पत्रिका 'विश्वगाथा'।

www.bhojpurisahityangan.com

मेहरारू आ दूनो लइकवा आपस में अब अपना माईभासा भोजपुरी में ना, बलुक हिंग्लिश में बोलेला लोग। एगो अइसन बोली जवन ना सोझ हिन्दी हऽ आ ना सोझ अंग्रेज़ी हऽ ! पूरा फेंटुआ ! बाकी आजकाल खूब चलन में बा, बिसेसकर टीप-टाप समाज में।

दुपहरिया बाद सुरुज मरुआए लागेले त हइसना दुआरन प अकसरहाँ चहल-पहल तनि ढेर बढ़ जाला। चाह-पानी के बेरा हो जाला ! आ तवना प बतकही के कड़ी में कड़ी जुटत जाले, ओरियइबे ना करे । लोग बिटुराइल रहले । पण्डितजी बड़ा अनमनाइल बुझासु। भोजपुरी भासा के भविष्य आ वर्तमान प रहि-रहि के उहाँ का सुरिया जासु । बिसुनपुर के रामधारी मौर्या के छोटका लइका निर्दोस कुमार बीएचयू से भासा में एमए कऽ के आइल बा। ई पढ़कुआ त एक जरिये के रहे, सुरुए के खुराफातियो हऽ। बरिस भर भइल, कुछ जवानन के अपना सङे लेके भोजपुरी का नाँवें एगो संस्था सुरु कऽ देले बा, बे पं. धरीछन मिसिर के आपना सङे जोरले।

"..कोंहँड़ आ करइला रोपी लोग, इहँवों.. जवन खनदानी रोपत आइल बा लोग !.." - पण्डितजी के पारा पूरा चढ़ल रहले - "हइसनन से भोजपुरी अठवाँ सूची में आई ? मजाक भइल बा ? बबुआ ककहरा सीखले ना, चलले तुलसी रामायन बाँचे ?"

तले निर्दोस कुमार ओनिये झटकत लउकले। पण्डितजी तनिके में चुपा गइले। निर्दोस पालागी करत सोझ सुरु हो गइले, बिना कवनो बिसेस भूमिका के - "हमनी के एगो पत्रिका सुरु करे के बानी जा पण्डितजी.. सोचल गइल हऽ जे एह क्षेत्र के भोजपुरी साहित्य में रुचि राखे वाला सभ केहू के जगह दियाओ.. राउरो लेख के दरकार बा, बिसेस कऽके ई, जे अपना क्षेत्र में भोजपुरी के बिकास प आजु ले का काम भइल बा, सभ घटना आ दस्तावेज के समेटत.. त एगो बढिमा रपट बन जाई.."

मिसिरजी चुप सुनत रहले। निर्दोस कहत गइले - "आ तवना प एह बिसय के सोझत हमनी के राउर आजुले भइल अनुभव आ कोसिस के जग-जाहिर करल चाहऽतानी जा ! सरकार कवनो होखो, अइसे कुछऊ ना करी, जले ओकरा आपन दूरगामी फ़ायेदा ना लउकी.. तबहूँ राउर आजुले भइल अनुभव आ कोसिस के बतावल आ जनवावल भोजपुरी खातिर जरूरी बा.. रिपोट बन जाए के चाहीं.."

"त सरकारो फ़ायेदा के तराज़ू आ अवसर के बटखरा ले के बइठे लागल नू आजकाल ?" - पण्डितजी खखरले।

"ई कवन बात क दिहनीं रउआ जी ? कवन सरकार पहिले एगो पाटी ना होले ?.. ई ना होखित त भोजपुरी काहें आजुले बेचारी बनल बीया ?"

"भोजपुरी काहें बेचारी बनल बीया ? बबुआ, बेचारी त बनल बीया इहवाँ के लोगन के गद्दारी आ मुँहचोरी से ! के ठाढ़ होता हमनी सङे हो ?.. हम अकसरे का का कऽ सकेनीं ?"

"अब ई त रउआ जनिये कहीं.. के ना रउआ सङे बा, भा ना रहे ? राउर अपने लोगन के सरकार रहे.. का हो गइल फेर ?.. हावा त कौ हाली बन्हाइल बाकि ऊहो हावा हवे भर ले रहि गइल.."

"ए बबुआ, ढेर अकुताई नीमन ना हऽ.. कवनो भासा गिनाले अपना इतिहास से, अपना साहित्य से, आ सबले बेसी समाज में कमाई उपलब्ध करावे के ताकत से.. खलसा, फूल-चनरमा, बादल-बिजुरी, बाग-पहाड़ आ रूप-गुन लिखले आ गवले कवनो भासा अठवाँ सूची में ना आ जाई.. भोजपुरी के अबहीं ढेर सफर करे के बा.. "

"अब ईहे बोलब का पण्डितजी ?" - निर्दोस कुमार त चढ़ि उठले - "पढ़ले बानीं रउआ भोजपुरी साहित्य निकहा नू ? गहिराई से ? बताईं कवन मानक आ कसौटी के पूरा नइखे करत ई भोजपुरी ? का कमी बा ?" - निर्दोस एइजे ना रुकले - "पण्डितजी, ई रउआ से कहावो जे अठवाँ सूची में भासा त ऊ-ऊ गिनाइल बाड़ी सऽ, जेकर बोलनिहार कुछ लाख भर ले बाड़े.. साहित्य के नाँव प कतना भासा में कायदा से गद्य साहित्य ले नइखे..! का बोली केहू ?"

"होस राखऽ निर्दोस कुमार, बउरा जनि ! .. जतना तहार उमिर नइखे, ओह से बेसी दिन हो गइल हम अपना माईभासा खातिर आंदोलन कऽ रहल बानीं.. गाँधी मैदान में अखिल भारतीय अस्तर के जुटान भइल रहुए.. हम ओह घरी अपना पीठी प लाठी खइले बानीं.. तब तूँ हाफ-पाएँट में घूमत एगो लइका होखबऽ"

"जी निकहे मालूम बा !.. महामहोपधिया तारकेसर सरनजी अस तपस्वी प टिटकारी पराइल रहे.. एह से जे ऊ राउरे ना, कवनो पाटी-पोल्टिक्स का पाछा ना रहसु.. ओही जुटान के नू बतियावत बानीं रउआ ? आ, तवना प ओही लाठी तनइले राउर संस्था के सलाना सरकारी अनुदान मीले लागल ! पण्डितजी, आजु के भोजपुरी समाज के एही लगले कूल्हि आगा-पाछा बूझे आ जाने के बा.. राउर लेख एगो दस्तावेज होखी" - निर्दोस ओही में पोल्हावत अस बोलले।

"जा ठीक बा, बुझाई त लीख देब.. "

"त हम कबले आईं ?"

"अब ई हम अबहियें कइसे कहि दीहीं ? तहरा मन के दिल्ली में सरकार का बनल, एही प चोन्हाइल फीरऽ तारऽ का तूँ ?"

"चोन्हात नइखीं ए बाबा.. हम निहोरा करऽ तानी.. "

तले मिसिरजी के माझिल लइका महेसर मिसिर केतली में चाह लेले आवत लउकले - "जॉलीऽऽऽ.. जग में जरा पानी और कुछ और ग्लास लेते आना बेटा.. हरी अप माइ सन.. "

निर्दोस कुमार के देखते महेसर मिसिर के मुँह में कसइली कुँचइला अस होखे लागल। तबो तनि अँगरात बोलले - " का हो निर्दोस कुमार ? सूनऽतानी जे आजकाल बऽड़ नेता भइल बाड़ऽ ?"

"नेता ? ई रउरा से के कहल हा जी ?"

"के कहल हा ? ई भला दबाये वाली बात हऽ निर्दोस कुमार ? .. खैर खून खाँसी खुसी बैर प्रीत मधुपान .. ई कूल्हि दबवले ना दबाए ! सुनले बाड़ऽ नू ? बाबूजी कहत रहनीं जे कवनो संस्था

आकि कवनो एनजीओ के मालिक भइल बाड़ऽ ? बढ़ऽ लोग भाई, बढ़ऽ लोग ! हमनी के त हर-हमेसा सङहीं बानीं जा.. "

"के जाने रउआ का का अनेरिया कूल्हि सुनले बानीं जी.. आकि रउआ हमरा के रिगा रहल बानीं.. हम त भोजपुरी भासा के संवर्धन खातिर एगो कोसिस कऽ रहल बानीं.. आ अठवाँ सूची में एहू के गिनती हो जाओ.. जेसे यूपीएससी में एकरों में पर्चा दिया सको.. आजु के लइकवने के फायेदा होखी.. हमनी के का बा एमे ?"

"जब हतने हुलास बा.. त बाबूजी के सङे चले में कवन बेजायँ रहे ? का बूझऽ तारऽ, जे संस्था आ समीती बनवले कूल्हि मीलि जाई ? कूल्हि मांग मना जाई ?"

फेर महेसर मिसिर दुआर प बइठल लोगन के सुनावत लगले ओरऽहे - "भाई, देखीं कहवाँ से कहवाँ जा रहल बा जमाना ? जेकरा चलेका लूर ना रहे, ओकरा पाँखि जाम रहल बा ! ई त बुझाते नइखे जे ई ओही रामधारी के लइका हवे, जे फजिरे-फजिरे हमनी के दुआर प मार हरियर-हरियर तरकारी बोझ देसु ! का ऊ लोग होत रहले हा.. आ का अब जमाना हो रहल बा ?!!.."

निर्दोस कुमार पित्ते झरख उठले। महेसर के एह वक्रोक्ति के झाँस निर्दोस के कपार पर सोझ कील ठोकत अस बुझाइल। तले जॉली हाथ में कुछ गिलास लेले ठढ़ हो गइल।

"का नाँव ह ए बबुआ ? कौ में पढ़े लऽ ?" - निर्दोस बात के नजाकत बूझत आ ओहके सम्हारत लगले लइकवा से पूछे। बाकिर, जॉली ओजुगे गिलास पटकत उहवाँ से चल दिहलस। महेसर मिसिर बूझि गइले जे उनकर लइका के ई बेवहार केहू से इचिको ना ओड़ाई। निर्दोसो उनका लइका के एह बुद्धि प छन दे बोल सकेला। एह से अपनहीं दाँत चिपोरत कहि उठले - "भाई, आजु के लइका हवे स इन्हनीं के.. ढेर भोजपुरी ना बोलऽ सऽ। हाँ, बूझे में कवनो कमी नइखे !"

"हरे राम भजीं ! पण्डितजी के घरवे में भोजपुरी के हई हालत जी ?"

"एहमें हालत के का बात बा निर्दोस कुमार ? भोजपुरी सीखले आजु के लइका का करिहें सऽ ? आ सीख लिहले सऽ त दोसरो भासा के बोली बिगड़ जाई ! ना ढंग से अंगरेजी बोलाई आ ना हिन्दी.. का तहरा ईहो बुझात नइखे ?"

"ई त राउर कुतर्क बा, ए भाईजी ! का हिन्दी बोले वाला अंगरेजी भासा में ना चल सके ?" निर्दोस के मन खऽट हो गइल रहे - "आ छोड़ीं मालिक ! अब बुझाइल, जे भोजपुरी खातिर अबले का आ कइसन कोसिस चलत रहे.."

पं. धरीछन मिसिर दूनो जाना के संवाद सूनत संवाद के दिसा आ दासा दूनो बूझि गइले - "हम आजु साल भर से बूझऽ त दर्जननन मेल आ रपट दिल्ली भेज रहल बानीं। बाकिर, का कहल जाओ, एक हाली फेर से कमर कसे के पर रहल बा.. भर जोर आवाज उठा रहल बानीं.. बाकि सरकार त कान में कडुआ तेल डलले सूतल बीया.. आवऽता इलेक्सन.. फरियाइये जाई अबकी.. "

निर्दोस कुमार शब्द-शब्द प आपन बात तवलत बोले लगले -

"पण्डितजी, राजनीति में केहू के अगर बात नइखे सइँतात आ बनत.. त ओह खीस में अपना विरोधी पाटी आ ओह के बनल सरकार के गरियावल ठीक नइखे नू ? ऊहो भोजपुरी भासा के नाँव प ? कवनो बनत-बुझात बात घिनही अस्तर प चल जाई.. आ ईहे हो रहल बा.. भोजपुरी भासा के नाँव प आजुले खलसा राजनीति हो रहल बा.. ई रउआ से नीमन के जानी ?" - निर्दोस आपन कूल्हि समेटत बोले लगले - "ई बताईं जा, जे काहें कांग्रेस वाली सरकार बीजेपी के कार्यकर्ता कूल्हि के सम्मेलन के 'हाय-तोबा' पा कान दीहित ? आ आजु बीजेपी सरकार काहें कंग्रेसियन भा कवनो दोसरा पाटी के कार्यकर्तन के भोकारी पारल सूने जाओ ? कवनो पाटी आपन पाटीवालन के कहल्का सूनी, कि दोसर पाटी वालन के कहल सूनी ? आ हेने पाटी वाला लोगन के 'पेंदा' में बेंवतिये नइखे जे खखारि के अपना-अपना आला-कमानन का सोझा उचिरो लोग ! चाहें कांग्रेस के लोग होखो, भा बीजेपी के झंडाउठाऊ लोग होखो.. भोजपुरी के दुर्दासा के बड़हन कारन त एइजा बा.. ई के बूझऽता ? के आपन पाटी-पोल्टिक्स के छाँड़ि के एगो नागरिक के तौर प बोल रहल बा ? भोजपुरिहा क्षेत्र में केने बाड़े अइसन नेता लोग जे भासा आ आपना अस्मिता खातिर आपन पाटी के मंतव्य आ मनभेद भुला के सङहीं ठाढ़ होता लोग ? नाँव लीहीं ? ना मीली केहू ! इहँवा त आपना-आपना पाटी के झंडाउठाऊ किरमिचिया लोग बा जे अपना पाटी से 'टामी छूः' सुनते एक-दोसरा प भूँके लागऽता ! काहें एक मन आ एक लक्ष्य भइला के बावज़ूद लोग एक सुर में नइखे बोलत ? काहें एगो 'ईर घाट' से बोलऽत लउकऽता, तऽ दोसरका 'मीर घाट' से बोलत लउकऽता ! आ दूनो बोलऽता भोजपुरिये प ! वाह ! ईहे बात रही, त छोड़ीं आंदोलनन आ हड़ताल के ! जब बुझाई आ राजनीतिक फ़ायदा लउकी त भोजपुरी भासा खातिर ईहो सरकार सोची ! मने, पूरा आपन नाफ़ा-नुकसान देख के ! अब कांग्रेस के समय त गइल ! बाकिर, ऊ जबले सरकार में रहे, भोजपुरी के नाँवे भरोसा आ उमेद के खेल खेलते रहि गइल ! अबकी सरकार बदलल बा.. एह सरकार के सलाहकारन के फ़ायेदा बुझाई त भोजपुरियो प सोचाई.. भोजपुरी के नाँव प कवनो संस्था से, भले ऊ कतनो पुरान होखो भा नवा होखो, हमरा कवनो उमेद नइखे.. ई लोग आपन-आपन दोकान चला रहल बा लोग ! बस एही लायक आ दासा के जोग बीया ई भोजपुरी !." पण्डितजी ई कूल्हि सुनते पहिले त तमतमइले। बाकिर सम्हर गइले।

निर्दोस कुमार कूल्हि कहत चले के ठाढ़ भइले, आ, सभ के सुनावत बोलत गइले - "सचकी, ई भोजपुरी प दोकान चलावले कहाई.. भोजपुरिहा लोग आपन-आपन पाटी आ नेता धइले, 'टामी छूः' सुनते भर में जोर-जोर से भूँके वाला टामी हो गइल बा लोग.. आ भोजपुरी बेचारी एह टमियन के झोंझ के 'भुँकार' भर बन के रहि गइल बीया.."

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ॰ ए॰ पी॰ जे॰ अब्दुल कलाम के लिखल बायोग्राफी "अग्नि की उड़ान" से

कलाम के राम

आखर टीम

कलास में नाया माहटर आइल रहन। उंच शरीर, चौरस माथ, बड़-बड़ आँख आ नाक के नीचे धारीदार मोंछ बड़ा रोबदार रहन। उज्जर धोती के लूँगी बना के पहिरले, आधा बांह के उज्जर बुशर्ट, माथ पे त्रिपुंड टीका आ हाथ में बेंत उनकर ब्राह्मणत्व के पहिचान रहे। कक्षा पाँच के कलास रहे तमिल भाषा के, आ आज नयका माहटर के पहिला बेर ओह कक्षा के पढ़ावे के रहे।

पहिला हाली कक्षा में रोब देखावे के रहे। लईकन के कंट्रोल में राखे के रहे। माहटर कनखी से तिकवत पूरा कक्षा के आगे से पाछे आ पाछे से आगे घूम घूम के निहरले। एक हांथ के बेंत से दोसर हाथ पे थपकी देत माहटर के एह रूप लईकन के अस लागे की कवनों बकरी के झुंड के आगे दाँत निपोरले बाघ चलत होखे। पाछे से आगे आवते उ अगिला बेंच के सोझा खाड़ हो गईले। हरेक बेंच पे चार लईका बईठल रहे लोग। माहटर साहेब एगो लईका के खड़ा कर दिहले।

"अरे ! उठ आ पाछे के बेंच पे बयिठ। रामेश्वरम मंदिर के प्रधान पुजारी के लईका के साथे तू कईसे बईठ गईले ? आगे से तोरा पाछे बईठे के बा।"
एगो मुसलमान के लईका पुजारी के लईका के साथे बईठे, ई बात उ माहटर के ना पचत रहे।

उ लईका आंखे लोर भरले उठल आ , पाछा के बेंच पे बईठ गइल। पूरा क्लास मौन रहे, आगे के बेंच के लईका सब भी उदास रहलें की उ लोग के सबसे निमन साथी के एह से पाछे कर देवल गइल की उ मुसलमान रहे आ जाली वाला टोपी पहिरले रहे। स्कूल के समय खतम भईल त उ लईका छुटल तीर जईसन क्लास से निकलल। लोर बान्ह तूर के हहास लेखा गाल पे बहत रहे। उ भागत जाये आ पाछा से ओकर साथी सब ओकरा के पुकारत।

"कलाम, रुक जो भाई। आज अनेत हो गइल बा। तू हमार दोस्त हवे उ माहटर ना। प्रधान शिक्षक जी से कहाई। भाई एक बार रुक जा। मिल के जो भाई... "

बाकी कलाम ना रुकले। सीधे आपन घरे जाके फुक्का फाड़ के रोअले। बाबूजी पुछलें त उ कुछ कहस ना।

बाबूजी पुछस- बोल बेटा, का भईल ह इसकुल में ? कवनों मारल ह तोरा के? केहु से लड़ाई भईल ह ?

बाकी कलाम कुछ कहस ना खाली रोवत रहलें। उनकर बाबूजी सोचलें जब एकर मन अहथिर होई त खुदे बताई। ज्यादा समय ना बितल की रामेश्वरम मंदिर के प्रधान पुजारी लक्ष्मण शास्त्री के नौकर कलाम के जोहत आइल।

"बबुआ चलऽ, पंडी जी बोलवात बानी।"
कलाम के लागल की रामानन्द आपन बाबूजी के बता देले बाड़ें। कहीं पंडी जी खिसियाईल मत होखस की पंडी जी के लईका के साथे मुसलमान कलाम कईसे बईठल। उ नौकर उनकर बाबूजी से कुछ कहलस त उहो साथे जाये के कहले। डेरात सकुचात कलाम उ नौकर के साथे आपन इयार रामानन्द के घरे चलले। ओकर दुआर पे पहुँचते कलाम चिहा गईले। पंडी जी दुआर पे खटिया पे बईठल रहन। माहटर साहेब सोझे कुर्सी पे आ रामानन्द ओहिजे खाड़ रहे।

पंडी जी कलाम के देखते खड़ा होके गले लगा लिहले। रामानन्द आ कलाम के अंकवारी में भर के उ माहटर के डंटले- "शिक्षक के काम ह लईकन के एकता, सदाचार, सहिष्णुता , आपसी प्रेम-भाईचारा के शिक्षा देवे के। शिक्षक के काम जाति-धरम आ भेदभाव के जहर मासूम लईकन के दिमाग में बईठावे के काम ना ह। इ कवनों आदर्श शिक्षक के गुण ना ह आ जे अईसन करत बा, उ समाज खाति बड़हन अपराधी बा। आ इ अपराध रउरा भी कर देनी। हमार नजर में जैसे रामानन्द ओईसही कलाम। रवा के कलाम से माफी मांगे के पड़ी।"

ओह माहटर के बुझाईल की केहु उनका पे लाखों घईला पानी फेंक देले होखे। शरम से मुड़ी गाड़ के चुपचाप सुनत रहन। उनका पंडी जी के बात से गलती के एहसास भईल आ कलाम के गला लगा के माफी मंगले। एह घटना के बाद कलाम आउर रामा के इयारी आउर गहिर भईल।

एकरा पहिले सपना साँच होखों, रउरा सपना देखे के पड़ी

- डा॰ अब्दुल कलाम

www.bhojpurisahityangan.com

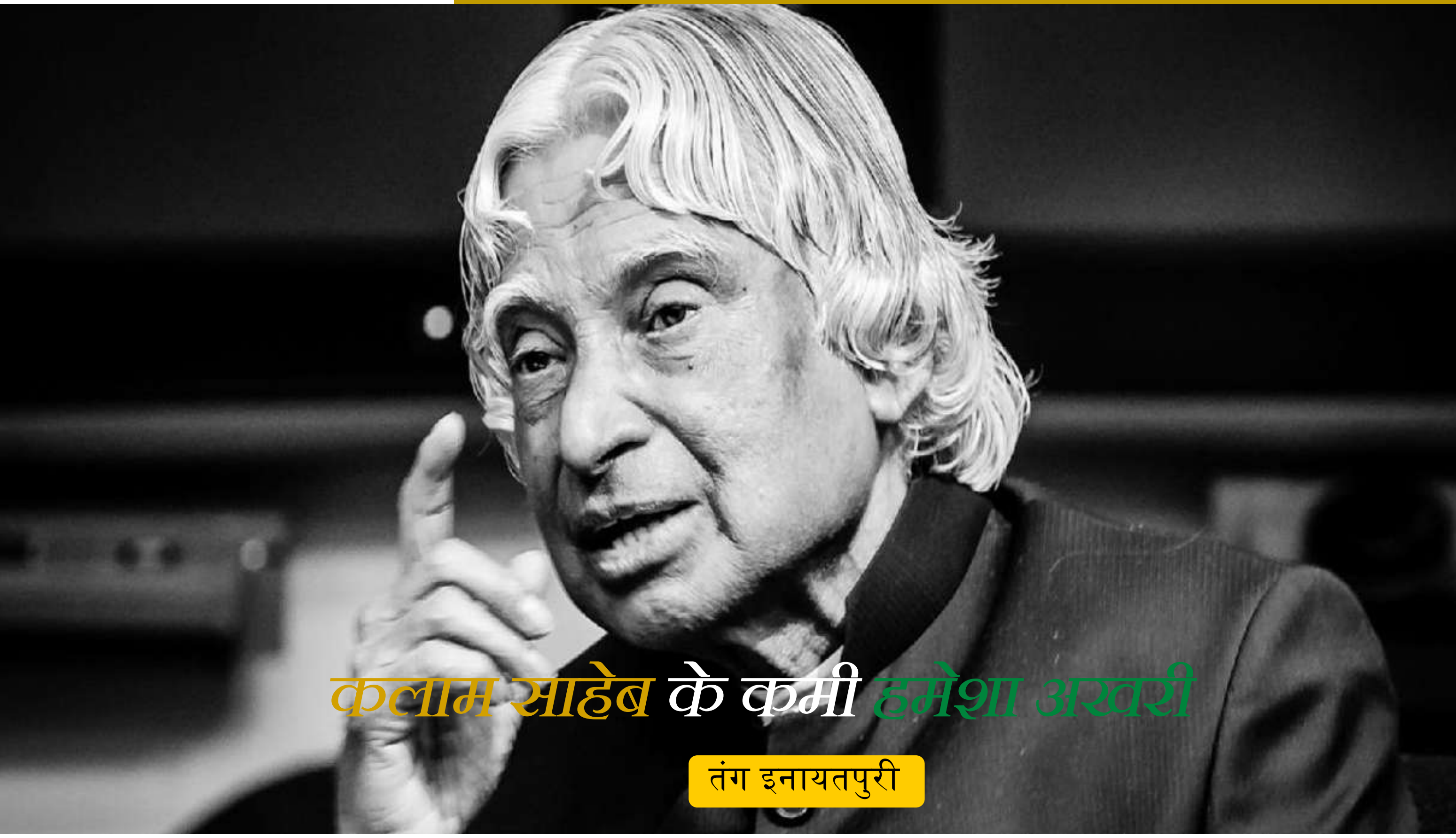

कलाम साहेब के कमी हमेशा अखरी

तंग इनायतपुरी

आज संउसे देश मर्माहत बा। होखहूँ के चाहीं, काहे कि हमनी के एगो बहुत बड़हन आ कीमती मनई के खो देले बानी सन जेकर कमी आवे वाला दिन में पूरा हो जाव एकर कवनों उमेद दूर-दूर ले नइखे आवत। अइसे, हमनी के एगो खास कमाल बा, उ ई कि जेकरा के जीयत जिनगी के हमनी के बहुत जियादा कीमत ना दीले सन ओकरो खातिर ओकरा ना रहला पर घईलन लोर बहा दीले सन। हमरा बुझाता कि एही मौका-बे-मौका खातिर हमनी के लोर आ लच्छेदार भाषण दुनू रिजर्व राखीले सन, जवन सही समय पर ढंग से काम आवेला। रो-गा के हमनीओ के तृप्त हो जाइलेसन आ समाजो हमनी के घड़ियाली आँसू पर विश्वास क लेला। अब आउर का चाहीं?

अइसे त जे दुनिया में आइल बा, ओकरा एह दुनिया से जाहीं के पड़ी। बाकी कुछ लोग मुअलो के बाद जीयत रहेला आ कुछ लोग जीयतो रहेला त मुअले खानी। डा० अब्दुल कलाम साहेब आज हमनी के बीच नइखीं, बाक़िर काहे दुन अइसन लागता कि जेनहीं ताकीं, ओनहीं से उहाँ का जइसे हमनी के तरफ ताकत होखीं। एगो सौम्य व्यक्तित्व, बुलंद हौसला आ असाधारण सोंच। ओइसन जइसे पुरनमासी का रात में समुन्दर खानी। उहाँ से काबों केहु पत्रकार सवाल कइले रहे कि एह देश में रउरा कवन चीज के सबसे कमी महसूस होता? तऽ उहाँ का जवाब देहनी- हमरा "सवाल" के कमी महसूस होता। "जवाब" त वातावरण में तैर रहल बा बाक़िर केहु सवाल पूछे वाला नइखे। जवाब उदास आ चुप बा काहे कि केहु सवाल पुछवइया नइखे। रउरा सांच मानी कि एगो विद्वाने अइसन सुलझल जवाब दे सकेला। आज के राजनीति के हिम्मत नइखे जे अइसन जवाब दे देव। राजनीति त सवाल के डरे भागल फिरेला। अगर कलाम साहेब राजनीतिज्ञ रहतीं त ना उहाँ के अइसन जवाब सोंच पइतीं, ना जवाब देवे के हिम्मत पड़ित

तंग इनायतपुरी

तंग इनायतपुरी (सुनील कुमार तंग) जी आजू के समय में देश बिदेश में एगो जानल मानल कवि के रूप में स्थापित बानी। इंहा के सीवान के रहे वाला हईं आ पैतृक भूमि पिलुई (दाउदपुर) हा। पेशा से हस्तरेखा आ अंगुलांक विशेषज्ञ हईं तंग जी। हास्य-व्यंग के रूप में, मजाहिया शायर के रूप में आ मंच संचालक के रूप में इंहा के भोजपुरी, हिन्दी आ उर्दू के सैकड़ों कवि सम्मलेनन में देश-बिदेश में आपन एगो अलग पहचान बना चुकल बानी। देश के शीर्षस्थ पत्र-पत्रिका में तंग जी के रचना प्रकाशित होते रहेला। दु बरिस पहिले, भोजपुरी में उंहा के काव्य-संग्रह "केहु मन पड़ल" प्रकाशित हो चुकल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

। सांच बात ई बा कि उन्नइस सौ बावन से ले के आज तक के राजनीति उहे काम कइले बिया जवना में ओकरा तात्कालिक फायदा होखे । कबो-कबो, कवनों –कवनों नीमन काम जाने अनजाने राजनीति से हो गइल बा जवना गौरव के बखान कइल जा सकेला। शायद ओही नीमन काम में, एगो काम कलाम साहेब के राष्ट्रपति बनावल भी माने के चाहीं, जवना खातिर राजनीति आपन पीठ जाने कहिया ले थपथपाई ? अइसे ई बात त तय हो गइल बा कि राष्ट्रपति का रूप में एगो गैर राजनीतिक आदमी एह देश के आम जनता के दिल में राजनीतिक लोग से जियादा बढ़िया जगह बनावे में कामयाब भइल । आज के अइसन राजनीति का तरफ से कलाम साहेब के राष्ट्रपति बनावे के प्रस्ताव साचहुं कबो-कबो आश्चर्यजनक लागेला। बाक़िर प्रभु के महिमा आ जनता के हृदय के पुकार । अब दोसरका टर्म में सउंसा देश के चहला के बावजूदो अगर कुछ राजनीतिक दल ना बनावे के चहलस त एमए का अचरज बा ? राजनीति त आजले इहे कइलेहीं बिया। इहे कम नइखे कि एगो गैर-राजनीतिक आ विद्वान आदमी के, एके टर्म सही, ओह बेरा के संसद बतौर राष्ट्रपति स्वीकार त कइलस । खैर .... ।

आज से कुछ महीना पहिले 4 फरवरी 2015 के दिल्ली से हम मुशायरा में बहरीन जाये खातिर एयर इण्डिया के बिमान के बिजनेस क्लास में बइठल रहनी। बिमान उड़े के कुछ मिनट पहिले हमरा बगल वाला सीट पर उहाँ के आके बइठनी। पहिले त हमरा बिसवासे ना भइल कि उहें के होखब, बाकिर जब उहाँ के साथे दू जाना लैपटाप ले ले आके बइठल लोग त आ बिमान के एयर होस्टेस लोग खास धेयान उहाँ पर देवे लागल त हमरा बुझा गइल कि इहाँ के कलामे साहेब हईं। चाह के भी कुछ जियादा बात करे के स्कोप ना रहे । बाकिर हम ताके में रहनी । जब एयर होस्टेस लोग कुछ खाये-पीये के पूछे आवे त उहाँ के इन्कार कर दीहीं। हम बगल में रहनीं त हमरा पे के ध्यान देव ? एह से उहाँ के संगे-संगे हमरो चाय-नाश्ता भेंटाइल मुश्किले रहे। अतने में उहाँ के धेयान हमरा तरफ गइल त हल्का मुस्कइनी आ एयर होस्टेस के बोला के हमरा तरफ इशारा कइनी कि इनका के खियाव लोग। हमरो से कहनी कि "हम हेल्थ के पॉइंट ऑफ व्यू से जरा कम खाते हैं, आप लीजिये।"आनन-फानन में सारा खाये वाला समान हमरा लगे आ गइल। ई उहाँ के सहजता के अइसन उदाहरण बा जवना खातिर हम सोचियों ना सकत रहनी । तीन-चार घंटा में बिमान बहरीन पहुँच गइल । क़ायदा के मोताबिक बिजनेस क्लास के सवारी पहिले उतरेला। हमहूँ उहाँ के संगे-संगे बाहर निकलनी। बिमान के गेट तक भारत के राजदूत उहाँ के रिसीव करे आइल रहलें। जब उहाँ के ग्रीन लाइन वाला रास्ता से बाहर जाए खातिर मुड़नी, जहां से हमरा सामान्य लोग वाला रास्ता से जाये के रहे, तऽ एक बेर फेर हमरा तरफ मुड़नी, मुस्कइनी आ हाथ हिलावत ग्रीन लाइन वाला रास्ता में आगे बढ़ गइनी। हमरा उर्दू के एगो शेर याद पड़ल – "आप से झुक के जो मिलता होगा, उसका कद आपसे ऊंचा होगा।

"कलाम साहेब अब हमनी के बीच में नइखीं बाकिर हम भगवान से प्रार्थना करेब कि राजनीति के सद्बुद्धि देस। अइसे त आज के छिछला राजनीति त अइसन लोग के महत्वपूर्ण पद देहल आपन गलती मानतिया बाकिर अगर ओकरा नजर में गलती ह तबो भगवान से बिनती बा कि अइसन गलती के राजनीति के हिम्मत देस, जवना से भारत के हौसला हिन्द-महासागर जस आ माथा हिमालय जस होत रहो। ई ईश्वर के किरपे नू बा जे जीवन के आखिरी सांस तक लोक कल्याण में आ आपन साधना-तप आ ज्ञान के भण्डार नवकी पीढ़ी के बाँटत उहाँ के एह दुनिया से कूच कइनी हं। अइसनका एगो अवतारिये पुरुष का नसीब होला। हम एह देश के जन-जन का ओर से आ समूचा दुनिया के मानवता का ओर से भाव में सनाइल श्रद्धांजली अर्पित करतानी।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी के लगे सबकुछ बा, बस कर्ण सिंह जइसन लोग नइखे

प्रमोद कुमार तिवारी

16वीं सदी के इंग्लैंड के एगो लेखक जॉन स्कैल्टन अंग्रेजी के बारे में लिखले बाड़े कि,'हमनी के भाषा (अंग्रेजी) में अतना गंवारपन बा आ ऊ अतना अरुचिकर बिया कि अगर केहू ई चाहे कि ऊ भाषा में सुंदरता ला देबे त ओकरा के अंग्रेजी में एकरा खातिर नीमन शब्द ना मिली।' एही इंग्लैंड के एगो लेखक रोजर एशम लिखले बाड़े कि 'जहां ले लैटिन आ ग्रीक भाषा के मामला बा ओकरा में हर बात एतना बढ़िया ढंग से कइल जा सकत बा कि ओकरा से नीमन के कल्पना ना कइल जा सके, एकरा उल्टा अंग्रेजी में सब लेखन विषयवस्तु आ शैली दूनो मामला में अतना घटिया स्तर के कइल जाला कि ओकरा से अउर खराब स्तर के रचना केहु चाहियो के ना कर सके।'

ध्यान दीं कि ई लोग वही देश में बइठ के ई बात कहत रहे जवना के आज विश्वभाषा के रूप में प्रतिष्ठित महान भाषा अंग्रेजी के जन्मदाता कहल जाला। इंग्लैंड आ अंग्रेजी भाषा के रिश्ता, कवनो भाषा के भविष्य ओकर प्रगति-अवनति आदि के समझे खातिर नीमन उदाहरण हो सकेला। कवनो भाषा न हवा में पैदा होखेले न हवा में जिंदा रहेले। भाषा के ताकत ओकरा के उपयोग करेवाला लोग से मिलेला। बाकिर इहो सच्चाई बा कि खाली प्रयोग कइला से भा ओकरा में गवला, बजवला से भाषा बहुत दूर तक ना पहुंचेले। पहिले के समय में खाली भाषा के मौखिक रूप से काम चल जात रहे बाकिर अब ना चल पाई, खास कर के आज के ग्लोबल समय में जब हर समय आदमी कई गो भाषा के बीच में जी रहल होखे। आज आदमी चाह के भी कई गो भाषा के बिना पढ़ले, सुनले देखले ना रह सकेला। ऊ टीवी के रूप में होखे, सामान के रैपर के रूप में होखे भा मोबाइल के बटन आ दूसर सामग्री के रूप में होखे। चाहे-अनचाहे कुछ भाषा में काम करहीं के पड़ी आ धीरे-धीरे ओकर अइसन आदत हो जाई कि दूसर भाषा बाउर लागे लागी। एक नजर से देखले पऽ लागी कि ई सब स्वाभाविक बा एकरा में का कइल जा सकेला बाकिर हम जोर दे के कहल चाहत बानीं कि ई सब प्रकृति भा ईश्वर के इच्छा ना हऽ। जवना किताबन आ भाषा के भगवान के रचल कह के भा देव आ अल्लाह के भाषा कह के स्थापित कइल गइल, उहो असल में आदमिए के काम रहे। आ एह सब के पीछे एगो खास तरह के ताकत, एगो सोचल-समझल रणनीति आ राजनीति काम तभियो कइले रहे, आ आजो कर रहल बिया। ऊ चाहे संस्कृत के पूरा समाज से काट के कुछ लोग के मुट्ठी में बंद राखे के काम रहल होखे चाहे आज ज्ञान आ शक्ति के खाली अंग्रेजी भाषियन के कब्जा में राख के एगो बड़हन समूह के ज्ञान, सत्ता आ जागरूकता से दूर राखे के मामला होखे। एह सब के मूल में वर्चस्व के इच्छा से भरल खास तरह के राजनीति रहत आइल बा। भोजपुरी के लगातार उपेक्षा के उदाहरण कवनो नया बात ना ह, ई ओही सामंती मानसिकता के प्रतीक ह जवन मानेला कि फलनवा जाति के लइका हमरा सोझा खाटी पऽ कइसे बइठ सकेला। तनी सा एकरा के बदल के कहीं त बात इहे बा कि श्रमिकन, गरीबन, मजदूरन के भाषा के अपना अंग्रेजी, बंगाली के बराबर आठवीं अनुसूची में कइसे बइठावल जा सकेला? ठीक बा जांता पीसत घरी ई लोग गीत गावेले, रोपनी करत घरी कुछ खिस्सा कहानी सुना लेवेले, इहो ठीक बा कि महानगरन में सेवा करे खातिर मजदूरन के बहुत जरूरत बा एह से छठ सठ मनावे के छूट दे दीहल गइल बाकिर एकर मतलब ई थोड़ी बा कि एह लोग के भाषा आ संस्कृति के अपना भाषा के बराबरी पऽ खड़ा कऽ दीहल जाव? ई उहे मानसिकता ह जवना के कारण भारत के जनसंख्या के लगभग 9 प्रतिशत आदिवासी लोग के अपना प्रमुख भाषा के संवैधानिक मान्यता दिलावे में 56 साल लाग गइल तब जा के एगो संताली के प्रवेश मिल पाइल। जवना 'तुलु' भाषा के केरल आ कर्नाटक के सीमा के करीब 20 लाख से जादा लोग (बहुसंख्यक आदिवासी) बोलेले ओकर तऽ ढेर लोग नामे ना सुनले होई।

असल में मूल मुद्दा भाषा हइए ना ह, आ मानकता के सवाल भी कवनो खास महत्व ना राखे। कवनो भाषा के बोलेवाला के संख्या, ओकर पुरानापन, समृद्ध इतिहास, संस्कृति, देश-विदेश में ओकर

www.bhojpurisahityangan.com

महत्व ई सब हाथी के देखावे वाला दांत हऽ जवना से ऊ एगो ऊख तक ना ऊखाड़ सके। खाए वाला दांत भीतर ढंकल छुपल रहेला, गते गते आपन काम करत रहेला आ एक दिन धीरे से पता चलेला कि सिंधी भा डोगरी भा कोंकणी आठवीं अनुसूची के भाषा बन गइल आ बहुत लोग के पतो ना चलल। ई उहे मानसिकता ह जवना के कारण विद्यापति के मैथिली के कवि कहे में दिक्कत ना होखे, तुलसीदास के अवधी के कवि माने में समस्या ना आवे, सूरदास के ब्रज के रचनाकार कहला प केहू के पेट ना दुखाला बाकिर जइसहीं भोजपुरी क्षेत्र में पूरा जिनगी गुजारेवाला, 'कवन ठगवा नगरिया लूटल हो' कहेवाला कबीर के भोजपुरी के कवि कहल जाला लोगबाग के राजनीति लउके लागेला, *जइसहीं 'श्रम कउ ईसर जानि कै,जड़ पूजहिं दिन रैन' कहेवाला रैदास के भोजपुरिया कहल जाला समस्या आवे लागेला। हाले में रैदास पर केंद्रित एगो अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में हम रैदास के भोजपुरी से जोड़नी त जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के हमार एगो दोस्त प्रोफेसर बधाई देत कहले कि 'बाकी सब ठीक था बस रैदास को भोजपुरी से जोड़ना थोड़ा खटक रहा था।' भोजपुरिया हक के नगरी लुटेवाला ठग सब के हमनी आज तक ना पहिचान पइनीं जा। कबीर के संदर्भ में एह दोहरा व्यवहार के प्रो. मैनेजर पांडेय सहित दूसर विद्वान लोग उठावत रहल बा बाकिर हिन्दी के पाठ्यक्रम आ आम जन में रामचंद्र शुक्ल के पंचमेल खिचड़ी वाला बात आ कबीर के कवि ना मानेवाला बात अतना भीतर तक धंसल बा कि एह लोग के बात कमजोर पड़ जाला। कबीर के खूब मान्यता मिलल, उनुका प खूब शोध भइल, खूब सेमिनार भइल बाकिर भोजपुरी से जोड़ के हिन्दी में भइल स्तरीय काम खोजे जाइब त रउआ के निराशा मिली। शायद एकर एगो कारण ई बा कि कबीर आ रैदास जइसन लोग विद्यापति आ तुलसीदास जइसन शास्त्र से ना जुड़ल रहे, ई लोग आम श्रमिक वर्ग के साथे जुड़ल रहे, चरखा चलावत रहे, जूता सीयत रहे आ लिखित के तुलना में मौखिक रूप से अपना बात के लोग तक पहुंचावत रहे। ई लोग बाकी लोगन के ई छूट देत रहे कि जेकर जइसे मन होखे ओइसे कविता के लाभ उठावे। एही से आम जन के पक्ष में खड़ा हो के जब गुरु नानक सिख धर्म के स्थापना कइले त गुरुग्रंथ साहब में तुलसीदास (जिनका महाकवि होखे में कवनो संदेह नइखे) के पद ना लीहले बलुक कबीर आ रैदास के पद शामिल कइले।*

ई सब बात एह से कह रहल बानीं कि होश संभरला के बादे से भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल होखे के बारे में सुन रहल बानीं, ई सुनत सुनत आ भोजपुरी में लेखन करत करीब 15 साल हमरो के हो गइल। दू तीन गो लेख हमहूं एह विषय पऽ बड़ा उम्मीद से लिखले रहीं। 2003 में हमनी के रंगश्री के बैनर के नीचे भोजपुरी के पहिलकी वेबसाइट (हमरा समझ से) भोजपुरी.ओआरजी के सहयोग से एगो बड़ कार्यक्रम जेएनयू में कइले रहनी जा, जवना में नामवर सिंह, मैनेजर पांडेय सहित ढेर सारा विद्वान लोग हिस्सा लेले रहे। ओकरा में ना खाली आठवीं अनुसूची खातिर प्रस्ताव पारित भइल रहे बलुक प्रो. मैनेजर पांडेय के एह सुझाव पऽ कि पहिले एकरा के साहित्य अकादमी के भाषा बनावे पर जोर दीहल जाव, सैकड़न लोगिन के हस्ताक्षर के साथे एह प्रस्ताव के साहित्य अकादमी के दिहल गइल रहे। ओही कार्यक्रम में नामवर सिंह शायद पहिला बेर सार्वजनिक मंच प भोजपुरी में बोलत एह भाषा के ऋण स्वीकार कइले रहलन आ ई कहले रहलन कि- 'भोजपुरी हिन्दी के रीढ़ रहल बिया।'

बाद में जब 2008 में 'द संडे इंडियन' भोजपुरी के प्रकाशन शुरू कइनीं जा त पहिलका अंक के कवर स्टोरी 'छा गइले भोजपुरिया' नाम से रहे जवना में साहित्य, राजनीति, भाषा, संस्कृति से जुड़ल तमाम लोग के परिचय दीहल गइल रहे आ ओकरा में मुलायम सिंह यादव, रामविलास पासवान, प्रभुनाथ सिंह, अखिलेश यादव, मोतीलाल वोरा से ले के केदारनाथ सिंह, गोविंदाचार्य, छन्नू लाल मिश्र तक के ना खाली विचार छपल रहे बलुक ऊ अंक आ बाद के अंक संसद में लगातार भेजल जात रहे। एकरा बाद आठवीं अनुसूची में शामिल करे के ले के 'तनी संसद हिलावऽ त जानीं' 'संसद में भोजपुरिया, कुछ त करऽ भइया' जइसन कवर स्टोरी के साथे ओह पत्रिका के ढेर सारा अंक निकालल गइल। जब एक बार एह मुद्दा के ले के हम शरद यादव आ रघुवंश प्रसाद सिंह से व्यक्तिगत रूप से साक्षात्कार लेले रहीं त लोग साहित्य आ भाषा के मानकीकरण के लेके संकोच जाहिर कइले रहे। तब हमनीं के साहित्य प केंद्रित एगो विशेषांक निकलले रहीं जा जवना में करीब डेढ़ सौ साहित्यकारन के रचना के साथ चर्चा कइल गइल रहे। तब ओंकारेश्वर पांडेय 'हजार साल पुरान भाषा भोजपुरी के दरद' शीर्षक से लेख लिख के बतवले रहले कि भोजपुरी अपनहूं लोग से ठगा रहल बिया।' अजीत दूबे सहित ढेर सारा लोग लगातार आठवीं अनुसूची में दावेदारी के ले के लिखत रहे। बाकिर सरकार एह मुद्दा पऽ एकदम गंभीर ना तब रहे ना आज बिया, काहे कि ऊ लोग के पता बा कि मजदूर लोग भावुक होला ढेर शोर मचाई तऽ गृहमंत्री चिदंबरम जइसन एक वाक्य भोजपुरी बोल के फेर से 5 - 10 साल खातिर भरमा दिहल जाई।

प्रमोद तिवारी

भभुआ बिहार के रहे वाला प्रमोद कुमार जी , केंद्रीय विश्वविद्यालय गांधीनगर , गुजरात मे असिस्टेंट प्रोफेसर बानी । ईंहा के भोजपुरी आ हिन्दी साहित्य खातिर लगातार काम कर रहल बानी । पत्र पत्रिकन में प्रमोद जी के रचना आकर्षण के केंद्र होली स । भोजपुरी भाषा आ साहित्य के ईंहा के अपना लेखनी से बरिआर चोख धार देले बानी । एह घरी गांधीनगर गुजरात मे बानी ।

साहित्य अकादमी में मान्यता के सवाल त अउरो मजेदार बा। एकर इतिहास सत्ता आ प्रभाव के अद्भुत नमूना प्रस्तुत करेला, तनी देखल जाव-

1952 में सरकार साहित्य अकादमी के स्थापित करे के प्रस्ताव पारित कइलस आ 12 मार्च 1954 के ई काम करे शुरू कऽ देलस। ओह घरी संविधान के आठवीं अनुसूची में खाली 14 गो भाषा रहली सऽ बाकिर साहित्य अकादमी में 15 गो भाषा रहे, अबुल कलाम आजाद आ जवाहरलाल नेहरू के कहला से ओकरा में अंग्रेजियो के शामिल कइल गइल रहे। 1957 में ओकरा में 'सिंधी' भाषा के शामिल कऽ लीहल गइला ई अलग बात बा कि तब ले सिंधी 8वीं अनुसूची में शामिल ना भइल रहे। अब ई सवाल मत पूछब सभे कि सिंधी भारत के कवना राज्य के भाषा हवे। ई खोजे में बहुत मुश्किल आई। असल में विभाजन के बाद कई लाख सिंधी लोग पाकिस्तान से भारत आइल रहले आ देश के अलग-अलग शहर (खास तौर से दिल्ली, मुंबई जइसन बड़ शहरन में) में बस गइल रहले। ई लोग काफी प्रभावी अमीर आ शिक्षित लोग तभियो रहले आ आजुओ बाड़े।(दिल्ली में सिंधी अकादमी बहुत दिन से बा।) एगो पार्टी के बुजुर्ग आ उपेक्षित नेता सिंध से ही आइल हवन। जल्दिए यानी 1967 में 'सिंधी' भाषा आठवीं अनुसूची में भी शामिल हो गइल। 1962 में जयकांत मिश्र 'मैथिली' के साहित्य अकादमी में शामिल करे के प्रस्ताव रखले। एकर चर्चा जनरल काउंसिल के दू गो राष्ट्रीय बैठक में भइल, एही दौरान राजस्थानी, कोंकणी, छतीसगढ़ी, मालवी, खासी, अवधी, भोजपुरी, मगही अउर ब्रजबोली के भी अकादमी में शामिल करे चर्चा भइल। एकरा बाद साहित्य अकादमी के मान्यता कवना भाषा के दीहल जाव एकरा खातिर सुनीति कुमार चटर्जी के अध्यक्षता में भाषा विशेषज्ञ लोग के एगो समिति के गठन भइल। ई समिति कवनो भाषा के अकादमी में शामिल करे खातिर पांच गो मानंदड बनवलस:

1. संरचना के स्तर पऽ का ऊ भाषा स्वतंत्र भाषा बिया आ कि कवनो दूसरा भाषा के अंग बिया।
2. का ओह भाषा में कम से कम 300 साल से लगातार साहित्य के परंपरा आ इतिहास मौजूद बा।
3. का साहित्यिक अउर सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में ओह भाषा के उपयोग प्रचुर संख्या में आज के तारीख में भी लोग कर रहल बाड़े।
4. का ओह भाषा के संबंधित राज्य के मान्यता मिलल बा या (अउर) फिर, का कुछ विश्वविद्यालय में ऊ निर्देश के माध्यम बिया या(अउर) फिर, अध्ययन के स्वतंत्र विषय बिया।
5. ओकरा बोलेवाला लोग के संख्या, ओकरा में वर्तमान समय में लिखल जाए वाला साहित्य (कथा साहित्य, निबंध, दूसर साहित्य, पत्रिका आदि) पऽ भी विचार कइल जाव।

समिति एह मानदंड पऽ मैथिली के सफल पवलस आ 1965 में एकरा के मान्यता दे दिहलस। 1968 ई. में फ्रांस में जन्मल, दून स्कूल में पढ़ल, कश्मीर के आखिरी महाराजा हरि सिंह के पुत्र डॉ. कर्ण सिंह 'डोगरी' के अकादमी में शामिल करे के प्रस्ताव रखले। एह प्रस्ताव के सुनीति कुमार चटर्जी के अध्यक्षता वाली नया समिति के सोझा राखल गइल। समिति 1969 के बैठक में निर्णय लिहलस कि डोगरी के लगे '300 साल से लगातार साहित्य के परंपरा आ इतिहास नइखे', आ ई आधुनिक साहित्यिक अभिव्यक्ति (माडर्न लिटररी कम्युनिकेशन) के भाषा नइखे। एकर प्रयोग कवनो स्कूल आ महाविद्यालय में निर्देश के भाषा के रूप में चाहे स्वतंत्र विषय के रूप में भी ना होखेला। कुल मिला के पांच गो मानदंड में से 'डोगरी' कायदे से दू गो शर्त के एकदमे पूरा ना करत रहे आ दू गो के आधा अधूरा पूरा करत रहे। बाकिर ओही साल 'डोगरी' साहित्य अकादमी के भाषा बन गइल। साहित्य अकादमी के दस्तावेज बतावत बा कि कुछ लोग के सहानुभूति के कारण नियम में ढील दिहल गइल। (A certain amount of sympathy seems to have guided the committee which decided to interpret the criteria liberally and consequently recommended that Dogri be recognized by the Academy.) एही सुनीति कुमार चटर्जी के अध्यक्षता में भोजपुरी, कोंकणी, मगही, मणिपुरी आ राजस्थानी के मान्यता के ले के 1970 में फेर बैठक भइल जवना में समिति मगही, मणिपुरी आ राजस्थानी के साहित्यिक महत्व के स्वतंत्र भाषा सर्वसम्मति से मान लिहलस। भोजपुरी आ कोंकणी के मामला खटाई में पड़ गइल काहें कि एकर दावा करेवाला स्थापित विद्वान बैठक में शामिले ना भइले। एगो पुरान शेर ह- 'तवारिखों ने देखे हैं ऐसे भी दिन, लम्हों ने खता की सदियों ने सजा पायी'। बैठक में शामिले ना होखेवाला ई महापुरुष के रहले, इनकर नाम अभी पता नइखे चल पावल। खैर 1971 में मणिपुरी आ राजस्थानी के मान्यता दे दीहल गइल बाकिर कवनो गुप्त कारण से मगही के हटा दीहल गइल। आगे चल के मानदंड में से कम से कम 300 साल के परंपरा वाला बात भी हटा दीहल गइल। बाद में भोजपुरी, कोंकणी, खासी आ नेपाली के मान्यता के ले के अकादमी के जनरल काउंसिल के सब सदस्य लोग से आ राज्य सरकार से सम्मति मांगल गइल। जवना महान, भाषा प्रेमी विद्वान लोग से सम्मति मांगल गइल रहे ऊ लोग के गंभीरता के ई आलम रहे कि 79 लोग में से खाली 14 जना एह महत्वपूर्ण मुद्दा पऽ प्रतिक्रिया देले, 14 में से 6 लोग के कवनो मत ना रहे, आ एगो सदस्य, जे वित्तीय सलाहकार रहले उनुका के ई चिंता रहे कि 'अउर भाषा के शामिल करे से पहिले फंड के जोगाड़ करे के चाही'। जहां तक राज्य के प्रतिनिधि लोग के गंभीरता के बात बा, कुल 13 गो लोग से सम्मति मांगल गइल रहे जवना में से

www.bhojpurisahityangan.com

खाली 4 लोग विचार रखले रहले। हमरा पूरा विश्वास बा कि एह चार में यूपी आ बिहार के लोग ना रहल होई। खैर, 1974 में नेपाली खातिर पं. बंगाल सरकार आ भारत सरकार के आग्रह प आ जनरल काउंसिल के सदस्य लोग के सहमति से नेपाली के मान्यता के मुद्दा राखल गइल। बहस के बाद नेपाली आ कोंकणी के 1975 में मान्यता दे दीहल गइल बाकिर भोजपुरी आ खासी भाषा के बहरिया दीहल गइल। सामान्य जानकारी खातिर बता दिहीं कि नेपाली, मणिपुरी आ कोंकणी के 8वीं अनुसूची में मान्यता 1992 में दिहल गइल। साहित्य अकादमी के भाषा होखे खातिर एगो महत्वपूर्ण आधार बोलेवाला लोग के संख्या ह, कुछ उदाहरण प ध्यान दिहल जाव-

कोंकणी – 15 लाख 22 हजार

बोडो- 12 लाख

सिंधी - 17 लाख (कच्छी जोड़ के 25 लाख)

डोगरी – 22 लाख

(स्रोत : एलआईएस-इंडिया, भारतीय भाषा संस्थान)

अब भोजपुरी से का तुलना कइल जाव, अइसहीं बता देत बानीं कि अकेले आजमगढ़ के जनसंख्या 46 लाख, गोरखपुर के 45 लाख आ गाजीपुर के 36 लाख हऽ।

कुल मिला के मुख्य बात ई बा कि जब डोगरी के मान्यता देबे के मन होला त सारा नियम कानून के ताखा प रख दीहल जाला आ बाद में लोग कुछ न बोले एह से नियम के बदल भी दीहल जाला बाकिर भोजपुरी के नांव अवते सब कानून आ नीयम इयाद आवे लागेला, काहें? एह से कि हमनी के लगे कवनो कर्ण सिंह नइखन। सवाल इहो उठत बा कि का भाषा आ प्रतिभा कर्ण सिंह जइसन लोग के मोहताज होखेले। डोंगरी आ कर्ण सिंह से हमार कवनो व्यक्तिगत शिकायत नइखे, ऊ कई भाषा आ दर्शन के विद्वान हउअन, हमरा विश्वविद्यालय (जेएनयू) के चांसलर रहले, तीन चार गो व्यक्तिगत मुलाकात में बहुते सहृदयी आ समय के पाबंद लगले, बाकिर एतने सहृदयी रहले त दूसर भाषा खातिर भी उनुका के आवाज उठावे के चाहत रहे। हम भारत के हर भाषा से प्यार करेनी आ मानेलीं कि एक आदमी द्वारा बोलल जाएवाला भाषा के भी बचावे के चाही, ओकरा के सरकार द्वारा सुविधा मिले के चाही। अंडमान निकोबार के बोआ सिनियर के मुअला के साथे जब उनुकर 'बो' भाषा 2010 में खतम हो गइल त ऊ एगो राष्ट्रीय शोक के विषय रहे काहें कि ओकरा साथे एगो संस्कृतियो खतम हो गइल रहे।

ई कहे में हमरा कवनो संकोच नइखे कि अइसन कई गो भाषा बाड़ी स जवन सत्ता के कारण भा एक दू गो भाषा प्रेमी के कारण महत्वपूर्ण हो गइली स। जवना में एगो परिवार में 3-3 गो साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता लोग पावल जाले आ हर साल खोजे के पड़ेला कि अबकी केकरा के दीहल जाव।

ओइसहूं भोजपुरी के मामला में केंद्र सरकार के उपेक्षा आ आठवीं अनुसूची भा साहित्य अकादमी के बात का कइल जाव, शुरुआत त अपना घर, अपना जिला आ राज्य से होला। आज ले भोजपुरी उत्तर प्रदेश आ बिहार के राजकीय भाषा ना बन पाइल। दैनिक व्यवहार से दूर उर्दू खाली राजनीतिक तुष्टिकरण के चलते दूनो राज्य के दूसरकी राजभाषा बिया। उत्तर प्रदेश, बिहार आ झारखंड मिला के करीब 25-26 गो भोजपुरिया जिला में रहेवाला मुसलमान उर्दू बोलेले कि भोजपुरी। हमनी के आज ले ई ना समझ पइनी जा कि भाषा के संबंध धर्म से ना इलाका से होला। मुहम्मद साहब बलिया में जनमल रहतन त 'कुरान' भोजपुरी में लिखले रहतन ठीक ओइसहीं जइसे कि मलिक मोहम्मद जायसी अवधी में पद्मावत लिखले भले लिपि फारसी होखे। अइसहीं अगर तुलसी दास अरब में जनमल रहतन त रामचरित मानस अरबी में लिखाइल रहत। बाकिर ई बात मूरख बना के राजनीतिक रोटी सेंकेवाला नेता लोग के आ उनुका गुलाम लोग के कइसे समझावल जा सकेला। भोजपुरी में ढेर सारा शब्द उर्दू (मूल रूप से अरबी-फारसी के, उर्दू के आपन शबद ना होखे) के आइल बा, जइसे अकसरहां लोग बोलेले कि 'फजीरे फजीरे कने से आवत बाड़' इहां फजीरे फज्र से बनल बा जवना के मतलब सुबह होला, फज्र के नमाज पढ़ल जाला।

असल बात बा कि भोजपुरिया लोग हमेशा से पिछुआइल रहेवाला हऽ। एह सच्चाई के मान लेवे के चाही कि झूठे हमनी के भाषा प्रेमी भा भोजपुरी प्रेमी होखे के दावा करेनीं जा, अगर सांच पूछल जाव त हमनी के भाषा से कवनो प्रेम नइखे। बंगाल के सुनीति कुमार चाटुर्जा भोजपुरी आ मगही ना जान पइले ई हमरा समझ में आवत बा बाकिर भोजपुरी इलाका से आवेवाला हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, नामवर सिंह, केदारनाथ सिंह, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, मैनेजर पांडेय से ले के अरुण कमल तक लोग भोजपुरी के महत्व ना देबे आ ऊ खाली एह से साहित्य अकादमी के भाषा ना बन पावे कि कवनो प्रतिनिधि मिटिंग में ना पहुंचल त एह से शर्मनाक बात कवनो भाषा खातिर अउर का हो सकेला। अगर एह लोग के हिन्दी के लोग मान लिहल जाव तऽ सवाल उठत बा कि ठेठ भोजपुरी वाला लोग जइसे, हवलदार त्रिपाठी, अरुणेश नीरन, अक्षयवर दीक्षित, पांडेय कपिल, सदानंद साही, अशोक द्विवेदी, नागेन्द्र प्रसाद सिंह, प्रो. ब्रजकिशोर जइसन लोग का करत रहले। खाली लेख लिख दिहला आ पत्रिका छाप दिहला से राउर बात सरकार तक कइसे पहुंच जाई। ओइसहूं सरकार तनी ऊंचा सुनेले। अउर का कहीं सिवाय ई अफसोस जाहिर कइला के कि काश! भोजपुरियो एगो कर्ण सिंह पैदा कऽ देले रहत।

(नोट- साहित्य अकादमी से संबंधित कुल्ही संदर्भ साहित्य अकादमी के आधिकारिक वेबसाईट http://sahitya-akademi.gov.in/ से आ श्री डी.एस.राव के किताब *श्री डिकेड्स साहित्य अकादमी प्रकाशन, वर्ष-1985 आ फाइव डिकेड्स, साहित्य अकादमी प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष-2004 से लीहल गइल बा।)*

भोजपुरी

किशोर शरण शर्मा

गुंजित आज भइल भोजपुरी, सगरे देश-जहान में,
सप्त राग कल-कल निनाद ले, गाँव-गाँव हर प्राण में।
चलऽ चलीं हमहूँ कुछ गाईं, आपना खाँटी बोली में,
एकर अविरल शब्द अनूठा, चलऽ बताईं टोली में,
हमरा टोली में सब साथी विविध देश के, भाषा के,
सभे बखानऽ ला अपना के, अपन-अपन परिभाषा के,
ओमें चलऽ बखानी हमहूँ भोजपुरी प्रतिमान में।
हम भोजपुरिया हिन्दी गवलीं, लिखलीं ग्रन्थ अनेक,
अंगरेजी में नाम कमइलीं, देश-देश अभिषेक,
अबसे भी पहचान बनाईं, अपना बोली-बानी में,
घर-घर में फइलाईं एके देश-देश रजधानी में,
एकरा शब्दन में मानवता, जोस भरल अभियान में।
संत कबीर के अक्खड़पन बा, एमें बिरह भिखारी के,
राष्ट्रगीत रघुवीर सुनवलें स्वतंत्रता सुखकारी के,
कोटि-कोटि जिव्हा पर बइठल ई आपन भोजपुरी बा,
ई चन्दन के सौरभ भइया, मस्तक के ई रोरी बा,
एकरा के समृद्ध करीं जा, दे के स्थान विधान में।

(ई कविता पहिले भी कई गो पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित हो चुकल बा)

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपूरी ना पहिले कवनो पहचान के मोहताज रहे ना अब

मनोरमा सिंह

भोजपूरी ना पहिले कौनो पहचान के मोहताज रहे ना अब । भोजपूरी के लोकसाहित्य, संगीत के परंपरा बहुत गौरवशाली बा, ऐतना कि हिन्दी में ज्यों के त्यौं अपना लिहल गईल बा। कबीर, तुलसी सब इहे भोजपूरी अवधी के परंपरा के बाड़ें, हिन्दी जबले राष्ट्रभाषा ना रहे, राजकाज के भासा चाहे मुगल के समय में फारसी होखे आ अंग्रेजन के समय अंग्रेजी, कैथी, लोकसाहित्य देस के कौनों माटी में आपन माटी के बोलीए में लिखल गईल। एही से जब हिन्दी राष्ट्रभाषा बनल त ओकर विरासत बहुत समृद्ध हो गईल लेकिन हिन्दी के राष्ट्रभाषा बनला के बाद से भोजपूरी के दिमाग, प्रतिभा आ सृजन सब हिन्दी के लगे चल गईल। भिखारी ठाकुर, महेन्दर मिसिर आ राहुल सांकृत्यायन जईसन स्तर के मौलिक लेखन फेर भोजपूरी साहित्य में ना आईल। हां भोजपूरी फिलिम आ गीत के एल्बम के बाजार दिनदुना रात चौगुना बढ़ल बा, लेकिन उ गरब से बेसी शरम बनके सामने आईल बा। दोसर बात इहो ह कि जवन भासा रोजगार आ सरकारी कामकाज के भाषा ना होखे ओकरा में एगो पेशेवर तेवर आ समकालीनता ना आ पावेला, उ भासा घर-परिवार, जवार -पथार आ एक्के बोली बोलेआला लो के संगे संवाद करें के भूमिका में सिमट जाले, काहे कि भाषा के सबसे बरियार संबंध शिक्षा के माध्यम आ रोजगार से बा। एगो उदाहरण दे तनी, हिन्दी के ही बात करीं त 1947 के बाद से बदलत समय के साथ कदम-ताल मिलावे खातिर हिन्दी में आपन सम्प्रेषण आ अभिव्यक्ति के समृद्ध करे खातिर भोजपूरी, अवधी, खड़ी बोली, उर्दु आ अंग्रेजी सबके शब्द अपनावल गईल बा। भोजपूरी में अईसन ना हो सकल काहे कि भोजपूरी बोलेवाला भी स्कूल में हिन्दी आ अंग्रेजी में पढ़ले बा अउर त अउर हिन्दीं में पढ़ेवाला भी हाली हाली अंग्रेजी में जाए के सोचेला, काहे कि बढ़िया नौकरी आ पईसा ओही भाषा में बा। नाहीं त अईसन ना होईत कि जौन गांव में सड़क, दवाखाना तकले नईखे उहां एगो इंगलिश मीडियम स्कूल के बोर्ड जरूर बा आ माईयो-बाप सब छोड़ के कौनो सरकारी स्कूल के बदले आपन बाल-बच्चा के इहे इंगलिश मीडियम स्कूले में पढ़ावे के चाहेले। अब कईसे उ बच्चा बड़ होके भोजपूरी में लौट के आयी? ओकरा खातिर भोजपूरी घरे-अंगना दुआर पर बोले वाला एगो भासा बनकर रह गईल, जेकरा उ लोक-साहित्य रीति-रिवाज आ गीतन में सहेजे के कोसिस करीं आपन माटी से जुड़ल रहे खातिर।

देखल जाव त हिन्दी के हालत भी कवनो बहुत बढ़िया नईखे, जे भोजपूरी के दर्द समझी उ हिन्दीओ के सच जानत बा। हां इ जरूर बा कि हिन्दी के राष्ट्रभाषा बनला के बादो उ सब क्षेत्रीय भासा के हाल तनि बरियार बनल रहल बा जेकर आपन लिपि बा जैसे मराठी, बंगाली आ दक्षिण भारत के सब भाषा। पहिलहु से इ सब भाषा के साहित्य बहुत समृद्ध रहे आ बादो में लगातार लिखल गईल बा, एह सब भाषा में विश्व साहित्य के टक्कर के लेखक आ लेखन होत रहल बा। साथे-साथ सरकारी स्कूल में शिक्षा के माध्यम भईला के कारण भी एह सब भाषा में एगो बड़हन आबादी आपन भाषा में पढ़ लिख के तैयार भईल बाटे, नौकरी आ रोजगार खातिर इ लो केतनो अंग्रेजी भा दोसर अउर कौनों भाषा सीख लेस आ अपना लेस बाकि इनकर आपन भाषा भी साहित्य के संगे—संगे इतिहास, भूगोल, गणित, भौतिकी, रसायन आ जीवविज्ञान सब ज्ञान देवे में सक्षम ह, इहे आत्मविश्वास एगो भोजपूरिया के लगे लईखे। सवाल इहे बा काहे? आंकड़ा में देखल जाव त पूरा देस में 15 करोड़ से बेसी लोग के मातृभाषा भोजपूरी ह आ करीब साठ लाख लोग नेपाल, मॉरीशस, सुरीनाम, गुयाना, ट्रिनिदाद, टोबैगो, फिजी जईसन देस में बाड़े जिनकर भासा भोजपूरी ह, संख्या के हिसाब से इ बहुत बड़ आबादी ह आ इहे भोजपूरी के ताकत ह। लेकिन इहो देखे के पड़ी कि इ ताकत केतना आपन भासा के साथ बा, भोजपूरी के बारे में इ तथ्य झुठलावल ना जा सकेला कि इ संख्या में जौन आपन देस के लोग बाड़ें उनकर भाषा हिन्दीओं बा, आ जब हिन्दी सत्ता, ताकत, सरकार आ कारपोरेट के भासा नईखे त भोजपूरी के अंदाज लगावल जा सकेला। अब बात करतनी आखिर संविधान के आंठवा सूची में भोजपूरी के आ गईला से का फायदा होखि? फिलहाल खाली एगो नेपाल में भोजपूरी के संवैधानिक दरजा हासिल बा उहां प्राथमिक, माध्यमिक स्तर पर भोजपूरी के पाठ्यक्रम आ पाठ्यपुस्तक बा । लेकिन अभी भी इ औपचारिकता जादा बा व्यहारिक तौर पर उहां भी नेपाली आ अंग्रेजी आ भारत में काम करे खातिर हिन्दी सबके पहिला पसंद ह ।

मनोरमा सिंह

सिवान , बिहार के रहे वाली मनोरमा जी , स्वतंत्र पत्रकार के रुप मे अपना लेखन शैली से बहुते प्रभावित कईले बानी । कई गो पत्र पत्रिका आ अखबार खाति ईंहा के लगातार लिख रहल बानी । एह समय ईंहा के बंगलोर मे बानी ।

सांच कहल जाव त भासा ओकरा बोलेवाला लोग से ही बांची, संख्याबल के आंकड़ा त खाली राजनीति खातिर बा। हाले देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी बिहार के दौरा पर गईल रहनी, आपन साभा में हजारों लाखन लोग के बीच भाषण के शुरूआत भोजपूरी में कईलन, मारे भीड़ के करेजा गदगद हो गईल। हई देखि प्रधानमंत्री जी हमनी के भासा बोलतानि, बाकि ई ज्यादा लो के मन नईखे पड़त कि 2013 दिसंबर में पटना में आयोजित अखिल भारतीय भोजपूरी साहित्य सम्मेलन बिहार से आवेवाला भाजपा के एगो बड़हन नेता रविशंकर प्रसाद कहले रहउन कि मोदी जी जईसे प्रधानमंत्री बनिहें भोजपूरी भासा के संविधान के आंठवा सूची में जगह मिल जाईं लेकिन भईल का? पिछला साल केन्द्रीय गृह मंत्रालय की ओर से ऐ मामला पर विचार करे खातिर एगो समिति के गठन भईल रहे, एही 14 जुलाई उ समिति भोजपूरी भासा के संविधान के आठवां सूची में रखे के प्रस्ताव खारिज कर देलस। इ समाचार बिहार यूपी लेले पूरा देस आ विदेस समहर भोजपूरी के करेज मे रखेआला लोग खातिर बहुत मन छोट करेवाला ह। बाकि जब जब चुनाव होला सब पार्टी के नेता लोग से आश्वासन आ भरोसा मिलत रहेला,एही बीचे लालू यादव, नीतिश कुमार आ राजीव प्रताप रूड़ी जी जईसन बड़हन नेता लो धुंआधार भोजपूरी बोलके लोग के लुभावत रहेले, रउवा लो के साईत याद होखे 2012 में कांग्रेस के बड़का नेता पी. चिदंबरम जी भी भोजपूरी में कहले रहन ,'हम रउवा सब के भावना समझतानी' उहो भोजपूरी के संवैधानिक मान्यता देवे के सवाले प इ बात कहले रहन। कहे के बात इ कि भोजपूरी भासा के संवैधानिक मान्यता, सरकारी काम काज के भासा बनावे के लड़ाई आ संघर्ष अबले ओहिजुईए बा। लेकिन एकर मतलब ई ना ह कि लड़ाई बीचे में छोड़ देबे के बा, समय लागि त का हो गईल, सरकार आ व्यवस्था के बादाखेलाफी कईला के बादो लगल रहे के काम बा, जुटल रहे के काम बा। इंटरनेट आईला के बाद से बहुत कुछ बदलल बा ओकरे में एगो जागरूकता आपन भासा के लेकर भी बा, लोग लिखत—पढ़त बाड़ें आ आपन जड़ी, आपन पहचान के बचावे ओकरा के सहेजे आ ओकरा साथ गरब से आगहु बढ़े के चाहत बाड़ें। आंठवा सूची में भोजपूरी के जगह मिली कि ना मिली इ समय बतायी बाकि एतने भर से इ भरोसा जरूर मिलता कि भोजपूरी के भबिष्य ओतना निरास करेवाला नईखे।

प्रभाष मिश्र

करोड़ो भोजपुरिया के आवाज कब बनी संसद ?

संसद के माने ह कि ऊ देस के जनता के आवाज बनके ओह लोग के भविष्य के जरुरत के समय रहते अपना नीतिगत पहल के माध्यम से पूरा करो। संसद , देस के हर तरह के जरुरत के पूरा करे खातिर आ जनता के प्रति आपना जबाबदेही के ईमानदारी से पूरा करे खातिर कृतसंकल्पित बावे। देस के जनता , जब अपना मांग के राज्य चाहे स्थानीय स्वशासन ईकाई से पूरा होत ना देखेला त ऊ केंद्र सरकार कावर ताकेला। देस के संविधान में केंद्र आ राज्य सरकार के बीच कवनो झगड़ा , काम के ले ना होखे , एह खातिर स्पष्ट रुप से काम के बंटवारा भईल बा। कुछ काम संघ सरकार के जिम्में बा त कुछ राज्य सरकार के जिम्में आ कुछ के दुनु सरकार के जिम्में राखल बा।

भाषा के संविधान में मान्यता खातिर आंठवा अनुसूची बा , जवना में अभी लें बाईस गो भाषा के मान्यता मिल गईल बा। भोजपुरी एह आंठवा अनुसूची में शामिल करे योग्य , संविधान के शुरुआत से ही रहे बाकिर ओह समय में भी भोजपुरी के जगहा एह अनुसूची में ना मिलल। देस के पचीस करोड़ लोग के आवाज आ संचार के माध्यम भोजपुरी के अगर सरकार एह लायक ना समझो कि ओकरा के सांविधानिक मान्यता देबे से हिचिको , त ई ऐतना बड़हन आबादी खातिर बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण बात बा। भोजपुरी के सांविधानिक मान्यता के ले के हर दशक में आंदोलन, सम्मेलन , धरना प्रदर्शन आ सरकार से मांग भईल बा कि भोजपुरी के संविधान में मान्यता मिलों।

संसद में मय चीझ पर बहस होखे , ना होखे बहस भोजपुरी पर गूंग - बहीर बनल भोजपुरीआ सांसद लो , कब आवाज ऊठईब लोगीन भोजपुरी पर।

पचीस करोड़ लोग के संपर्क भाषा जवना के साहित्य बहुत बरिआर बा , जवना के सांस्कृतिक इतिहास से देस के इतिहास आलोकित होला , के संविधान के मान्य भाषा के रुप में जगहा देबे में ऐतना आना - कानी समझ से परे बा। भोजपुरी क्षेत्र के कई गो प्रधानमंत्री भी एह देस में भईले बाकिर भोजपुरी असहीं अपना मान्यता खातिर टुकुर टुकुर ताकते रह गईल। संविधान में मान्य भाषा होखे के हर शर्त के पूरा करत भोजपुरी आजो अपना वाजिब सम्मान खातिर पेड़ा जोहता।

भोजपुरी खाली एगो भाषायी पहचान ना ह , इ अपना में जीवन जिए के एगो परंपरा , पद्धति आ संस्कृति के अद्भुत सम्मिश्रण के अमिट छाप लेले सदियों से विश्व समाज के सोझा बा। भोजपुरी

www.bhojpurisahityangan.com

अपना संपर्क भाषा आ व्यवहारिक भाषा के रुप में सबसे बेसी बोले आला संख्या बल के बादो भारत में अपना उचित सम्मान के राह ताकता जबकि विश्व में फईलल कई गो देस में जहंवा भोजपुरी बोलल जाला ओजी ओकरा मान्यता मिल गईल बा आ भोजपुरी ओजी के विधि सम्मत भाषा ह । भोजपुरी भाषी दोसर देस के भोजपुरीआ प्रेमी आजो एह बात के ले के बहुत उत्साह के संगे आसा लगईले बाड़े कि जल्दिए भोजपुरी के ओकरा जननी देस में सांविधानिक मान्यता मिल जाई।

भोजपुरी के सांविधानिक मान्यता खातिर देस भर में सैकड़ो भोजपुरीआ संस्था लागल बाड़ी सन । एह संस्था सन में आपसी तालमेल के कमी के बादों आंठवा अनुसूची में भोजपुरी के शामिल करावे के सवाल पर मय संस्था एकसंगे आवाज बुलंद कर तरी सन । भोजपुरी के राष्ट्रीय आ प्रांतीय अकादमी भी एह भाषा के सरकारी मान्यता खातिर आपन मांग , विभिन्न मंच से राखत रहेला ।

भारत एगो विविधता आला देस ह जवना में तरह तरह के संस्कृति आ भाषा आदि के अनूठा समन्वय बा। भोजपुरी हमनी के राष्ट्र के सामसिक संस्कृति के आ भाषायी इतिहास के औरु गोटहन करेला। भोजपुरी के सांविधानिक मान्यता मिलला से एह भाषा के साहित्य में उत्तरोत्तर विकास होई , लोग के रोजगार मिलो एह भाषा के माध्यम से ओह खातिर एगो बड़हन डेग भी इ भविष्य में साबित हो सकेला।

भारत के राजनीति आज खाली वोट आ सत्ता के गुलाम बनके रह गईल बा ना त हेतना व्यापक रुप से फईलल भाषा के ऐतना दिन अपना वाजिब हक के पावे खातिर इंतजार ना करे के पड़ीत। वोट के पहिले त खूब भरोसा दिआला कि अगर सरकार हमरा पार्टी के बनी त मान्यता जरुर मिली , बाकिर सत्ता पावते आपन वादा भुलाए के लरी लागल बा । चाहे कवनो पार्टी होखे ऊ एह बात के स्वीकार त करेला कि ह भोजपुरी के संविधान के मान्य भाषा के दर्जा मिले के चाही बाकिर कबो खुल के एह बिषय पर संसद में चर्चा करावे से कतराला लोग । संसद के त मतलब ह कि जनमानस के वृहद मांग पर ध्यान देत कुछ डेग आगे बढ़त नीतिगत पहल कईल जाव बाकिर एजी त एह बिषय पर चर्चे नईखे होखत । भोजपुरीआ क्षेत्र के राजनीतिक दल के भी एह मूलभुत मांग पर कवनो ध्यान नईखे । भाषा कबो एजी सक्रिय राजनीतिक प्रणाली के अंश ही नईखे रहल ।

वोट के पहिले वादा कईले
कईले वादा भोजपुरी के मान दिआवे के
देखत - देखत केतना दिन बीतत गईल
ना बोलल केहु एको बार संसद में
भोजपुरी के मान्य भाषा बनावे के ।

भोजपुरी संविधान के आंठवा अनुसूची में आज ना त काल्ह शामिल जरुर होई , काहे कि हेतना बड़हन समूह के केहु कब ले अनदेखी कर सकेला , बाकिर एह भाषा के अभी ले शामिल ना भईला पर घोर आश्चर्य होला कि कईसन गूंगा हो गईल बा हमनी के संसद कि हेतना बड़हन आवाज के ऊ ना त सुनता ना एपर कुछ बोलता । ऊ दिन जरुर आई जब भोजपुरी के सांविधानिक दर्जा प्राप्त होई बाकिर , ई दिन हाली से काहे नईखे आवत ? का देस के संसद में भोजपुरी भाषी सांसद लोग के अपना भाषा के वाजिब मांग पर बोले में लाज लागता ? भोजपुरी क्षेत्र के प्रतिनिधि के तौर पर चुनाईल हर भोजपुरीआ सांसद के ई नैतिक जिम्मेवारी बनता कि ऊ अपना माई भाषा के संविधान सम्मत भाषा में शामिल करावे खातिर आवाज ऊठावस आ जरुरत पड़ता पर आंदोलन करस । अगर भोजपुरीआ सांसद लो सक्रिय रहित त शायद अभी ले भोजपुरी संविधान के मान्य भाषा बन गईल रहित।

आसा त हर सरकार से रहे आ आजो ओहींग बावे
देख आंठवा अनुसूची में भोजपुरी कबले जगहा पावे।

प्रभाष मिश्र

छपरा, बिहार के रहे वाला प्रभाष मिश्रा जी भोजपुरी में लगातार लिख रहल बनी आ आखर के साथे जुड़ल बानी। इहाँ के कहानी आ कविता दुनु में हाथ सधल बा। फिलहाल इहाँ के नासिक में कार्यरत बानी।

प्रो. राजगृह सिंह

भोजपुरी संस्कृति के वर्तमान स्वरुप

जनम लेते ही आदमी भोजन आ अभिव्यक्ति के प्रक्रिया प्रारंभ कर देला । भोजन जिए के पहिलिका साधन ह आ अभिव्यक्ति समाजिक बने के पहिलका सोपान । मनुष्य बोल के चाहे संकेत क के आपन आंरभिक जरुरत पूरा करेला । बालक ई काम हँस के चाहे रो के पूरा करेला । रोवल भूख के चाहे पीड़ा के अभिव्यक्ति ह । बालक के हंसी आ रोवल से बोली पैदा होला । उहे बोली कालांतर में लोकभाषा आ फेरु लोक साहित्य के भाषा के रुप ग्रहण क लेला । लोकभाषा के संचित आ विकसित रुप लोक संस्कृति हवे । भोजपुरी संस्कृति ओही लोक संस्कृति के पर्याय ह ।

आज भोजपुरी, लोकभाषा बोली से विकसित होके साहित्य के रुप ग्रहण कर चुकल बिआ । एकरा के आज के परिपेक्ष्य में जन साहित्य भी कहल जा सकेला । भोजपुरी अब देस आ क्षेत्र विशेष तक सीमित नईखें । एगो अंतर्राष्ट्रीय पहचान बन गईल बा । बीस करोड़ लोगन के विचार प्रकट करे वाला जे भाषा बन गईल होखे ओकरा के एगो छोट दायरा में बांध के नईखे राखल जा सकत ।

एह भाषा के दोसरका संस्कार बड़ा आकर्षक बा । संविधान सम्मत आ देस के एकमात्र संपर्क भाषा हिंदी जे राष्ट्रभाषा के रुप में संकल्पित बा ओकरो जनम क्षेत्र भोजपुरिए क्षेत्र ह । आ सांच पूछी त भोजपुरी भाषा हिंदी के भले जननी ना हो सके बाकिर धाई त जरुर ह । भोजपुरी भाषा के एगो आपन संस्कार बा जवना से हिंदी आ उर्दू के अलावा कई एक गो बोली जईसे बज्जिका , अंगिका , नगपुरिआ , मागधी आदि संपोषित होला ।

भोजपुरी संस्कृति बड़ी पुरान हिअ । ई अपना क्षेत्र के जनम आ विकास के साथे जुड़ल बिआ । अनादिकाल से भोजपुरी के एगो आपन अलौकिक पहचान रहल बा । ढ़ेढ़ापन , अक्खड़पन , सादगी , आंच बोली , सोच विचार, दृढ़ प्रतिज्ञ , कृषि , अतिथि , सेवा , यायावरी आ ज्ञानार्जन जईसन सद्गुण एकरा विरासत में मिलल बा । ई सब गुण कमोबेस आजो बा । ई बात सही बा कि जमाना के संगे भोजपुरीआ विचार आ ओकरा संस्कृति में भी बदलाव आईल बा । आजादी के पहिले एकर आपन सोच आ चरित्र रहे । आज भोजपुरी के आपन बहुत कुछ इतिहास भुला के विश्व-संस्कृति के संगे डेगे - डेग मिला के चले के बाध्यता बा । ई संस्कार छोड़ल भी ना जा सके ।

भाषा आ क्षेत्र में भोजपुरी , विदेस में अंग्रेजी , फ्रेंच आ क्रियोल जईसन समर्थ साहित्य के प्रभावित कईले बिआ ।अपना देस में उत्तर भारत के तमाम भाषा कवनो ना कवनो रुप में भोजपुरी से प्रभावित बा ।भोजपुरी के इतिहास में राजनीतिक बदलाव भी स्वभाविक बा । १८५७ में बाबू कुंवर सिंह आ मंगल पांडे जईसन लोग अब उपलब्ध नईखन , चंपारण सत्याग्रह के गांधी जी आ १९४२ के " करो या मरो " आंदोलन के राजेदर बाबू , जगजीवन बाबू , बाबा राघव दास , चित्तू पांडे, जयप्रकाश नरायण जईसन लोगन के जुग भी गुजर गईल बाकिर १९७४ के संपूर्ण क्रांति आ जेपी के जरावल चिराग भोजपुरी क्षेत्र में अभी ले बुझल नईखे ।

भोजपुरी संस्कृति के एगो लमहर पहचान बा ओकर ओकर त्याग , तपस्या आ दृढ़ प्रतिज्ञा , "परचा- परचा कट मरे तबो ना छोड़े टेक" चाहे "आन- बान - शान ह , भोजपुरी हमनी के पहचान ह" ई संस्कार भोजपुरी विरासत में मिलल बा आ आजो एकर अंश शेष बा ।

भोजपुरी संस्कृति के एगो दोसर पहचान भी ह " धर्मभिरुता" । धर्म प्रिय समाज में धर्म भिरुता ओकर एगो गुण मानल जाला ।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी संस्कृति में एही वजह से सोलह संस्कार के समावेश भईल । सरिता बुधु के अनुसार - मारिशस में आजो कम से कम आठ गो संस्कार भोजपुरी के संगे जुड़ के जिअता । धर्म भिरुता के वजह से ई संस्कृति विश्व स्तर पर आलोचना के शिकार भी भईल बाकिर एकर सार्थर यस के नकारल ना जा सके । आध्यात्मिक आ दार्शनिक यस एह संस्कृति के रीढ़ बन गईल । संत कवि आ दार्शनिक विचारक के हटा दिहल जाव त भोजपुरी में एगो बड़हन रिक्तत्ता पैदा हो जाई । धरणीदास , कबीरदास , मूलकदास , रैदास , बाबा गोरखनाथ , कीनाराम आदि संत के परंपरा आज के लक्ष्मीसखी आ कई एक कवि लोगन के माध्यम से चल रहल बा । बटोहिया, बिदेसिया , फिरंगीआ जईसन नाट्य गीतन में देस आ समाज के जीअत जागत रुप आजो देखल जा सकेला । ह ई बात जरुर बा कि भोजपुरी में अब निर्गुणीय संस्कृति के हास हो रहल बा ।विभिन्न समाजिक आ धार्मिक संस्कार के अवसर पर गावल जाए आला गीत जईसे निर्गुण , सांझा , पराती , पीलु , दुर्गा , काफी आ भैरवी जईसन गीत अब सुने के कम मिलत बा । कजरी , बिरहा , चईता , लोरिकायन , विदेसिया भी अब इतिहास बनल गईल । सोहर , खिलौना , मुण्डन , जनेऊ आ बिआह गीतन के संस्कार भी बदल गईल बा । सिनेमा , टीवी , इंटरनेट , आर्केस्ट्रा के प्रभाव में मंचीय नाटक , हरिकीर्त्तन ,नाच आ ईंहा तक की कवि सम्मेलन के रुप भी बदल रहल बा । ई भोजपुरी संस्कृति में एगो धब्बा बन रहल बा । जांतसारी , धानरोपाई ,डोली , पचरा के साथे - साथे फाग आ चैता भी फीका पड़ गईल बा । इ सब विचारणीय सवाल जरुर बा। भोजपुरी संस्कृति आ ओकरा क्षेत्र आ महत्तता पर डॉ. गियर्सन के टिप्पणी आजो प्रासंगिक बा -

"भोजपुरी उस शक्तिशाली , स्फूर्तिपूर्ण और उत्साही जाति की व्यावहारिक भाषा है जो परिस्थितियों और समय के अनुकूल अपने को बनाने के लिए सदा प्रस्तुत रहती है और जिसका प्रभाव हिंदुस्तान के हर एक भाग पर पड़ा है। हिंदुस्तान में सभ्यता फैलाने का श्रेय बंगालीयों और भोजपुरीयों को ही प्राप्त है। इस काम में बंगालीयों ने अपनी कलम से काम लिया और भोजपुरियों ने अपनी लाठी से।"

एह संदर्भ के साथे भोजपुरी संस्कृति के वर्तमान स्वरुप के आंकलन कईल जा सकेला । भोजपुरी के जातीय संस्कृति हजारों बरिस से समन्यवादी रहल । अप्रवासी भारतीय लोगन में अधिकांश भोजपुरीआ ही बाड़े । त्रिनिडाड में भोजपुरीआ लोगन के ऊंहा पहुचे आला तिथि के आजो " स्मृति दिवस " के रुप में मनावल जाला । मॉरिशस के एगो सफल साहित्यकार सरिता बुधु के लिखल पुस्तक - " कन्यादान " भोजपुरी साहित्य के काफी ऊंचा कईले बा । बड़ा अफसोस के संगे ई कहे के पड़ता कि भोजपुरी संस्कृति के पुरान रुप अपना घर में उत्तरोत्तर तिरोहित हो रहल बा आ बिदेस में एह संस्कृति के धरोहर के रुप में जोगावल जा रहल बा । भोजपुरीआ संस्कार ऊंहा लोगन में उपहार बनके गला के हार बन रहल बा ।

जंहा तक भोजपुरी समाज में विकार के दर्शन हो रहल बा ओकर काल लम्बा गुलामी के बीच पनपल मिश्रित संस्कार बा । पश्चिमी सभ्यता भी बहुत जादा प्रभावित कईले बा । विज्ञान , तकनीकि विकास आ वैश्वीकरण के सीधा प्रभाव भोजपुरी संस्कृति पर भी पड़ल । भोजपुरीआ लोग भी भौतिक सुख सुविधा के मृग मरिचिका में भटके के विवश हो गईल । अंग्रेजी भाषा रहन सहन , पहिनावा , खान- पान , तौर - तरीका बदल गईल । इंटरनेट में जब दुनिआ सिमट रहल बा , एकर भी प्रभाव भोजपुरी संस्कृति पर पड़ल ।

भोजपुरीआ क्षेत्र सदा से प्रयोग के क्षेत्र रहल बा । इंहा साहित्य , राजनीति , दर्शन सभे में प्रयोग भईल बा आ ओकर प्रभाव भोजपुरी संस्कृति पर आजो बा । भोजपुरी संस्कृति आज दुनिआ भर में आपन विशिष्ट पहचान बना चुकल बा । गांव - गवई के संस्कार देस के राजधानी आ संसार के कोना - कोना में पहुंचे के आपन प्रभाव देखा रहल बा । एकर भविष्य शुभ आ सुनहरा बा । भोजपुरी संस्कृति के वर्तमान स्वरुप प्रभावकारी रहीं ।

प्रो॰ राजगृह सिंह, एगो सामाजिक कार्यकर्ता आ शैक्षिक रुप से आजीवन जुड़ल व्यक्तित्व आचार्य राममुर्ति जी के सानिध्य मे रहल , 77 वर्षीय प्रो. राजगृह सिंह जी 41 साल ले शिक्षण कार्य करत जवना मे स्कुल से कालेज तक के उच्च शिक्षा आ संस्कार के दीया जरवले बानी । वर्तमान मे नंदलाल सिंह कालेज से रिटायर भईला के बाद भी राहुल सांकृत्यायन जी के विचारधारा के आगे बढावत , राहुल विचार मंच , राहुल नगर आ अउरी कई गो स्कुल कालेज खोलवावे मे आ सामाजिक संस्कार के संरचना बढावे मे आजुओ ईंहा के सक्रिय बानी ।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी मे बांग्ला भाषी विद्वानन के योगदान

संतोष पटेल

भोजपुरी भाषा में में एही क्षेत्र के हिंदी विद्वानन के भलेहूँ साहित्य ना देखाई देलस, कबीर के साहित्य के भाषा साजिशन भोजपुरी ना कह के हिंदी के इतिहासवेता लोग में डॉ रामचन्द्र शुक्ल आदि विद्वान सधुक्कड़ी, खिचड़ी आ पंचमेल कहल । त ओही समय भाषाविद सुनीति कुमार चटर्जी भोजपुरी के एगो अलग भाषा माननी , उहाँ के बात के उदय नारायण तिवारी जी भी मानत रही। सुनीति कुमार चर्टजी आ क्षितिमोहन सेन खुदे उदय नारायण तिवारी जी के भोजपुरी के शोध में निदेशक के भूमिका निभवले रहनी। देश के आज़ादी के बाद से आजू ले हर विधा में भोजपुरी में लेखन चल रहल बा। एकरा बादो हिंदी के विद्वान आ साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ विश्वनाथ तिवारी के भोजपुरी भाषा में साहित्य ना देखाई देलस। एह देश के एगो लमहर भू भाग के भाग के भाषा भोजपुरी में काव्य धारा चौरंगीनाथ, गोरखनाथ, गोपीचंद, भरथरी, कबीर, धरनी दास आदि लोगन से शुरू होके आजु ले समकालीन काव्यधारा के साथे कान्हा से कान्हा मिला के चलत बा।

भोजपुरी भाषा आ साहित्य के बरियार करे में बंगला भाषी विद्वान लोगन से बड़ा लगाव रहल बा। सबसे पहिले कविन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर के नाम से लिहल जा सकेला जे भोजपुरी साहित्य के लोहा मनलन । विश्वकवि टैगोर भोजपुरी के आदि कवि कबीर दास के सौ गो पद्य के भोजपुरी अनुवाद कइनी जेकरा " One Hundred poems of Kabir" नाम से मैकमिलन सन 1915 ई में प्रकाशित कइलस।एकर भूमिका अल्विन अंडरहिल महोदया लिखले बाडी। बतावल जाला कि टैगोर के साहित्य पर विशेषकर गीतांजली पर कबीर के पद्य के बहुत असर बा।एह किताब के इंग्लिश अनुवाद ओह समय भईल जब गीतांजलि के भी अनुवाद इंग्लिश में होखत रहे आ एकर भूमिका आयरलैंड के विद्वान सुप्रसिद्ध कवि डब्लू बी यीस्ट लिखले रहलन।

इहाँ एगो तथ्य जाहिर कइल जरुरी बा कि बिहार के मुजफ्फरपुर में बाबा साहेब आंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय में 1969 ई में सबसे पाहिले भोजपुरी के पढाई शुरू भईल एकर श्रेय एगो बांगला भासी के ही जात बा जेकर नाम रहे डॉ तारा चंद बनर्जी (टी सी बनर्जी) बनर्जी साहेब उहाँ उप कुलपति रही आ उहाँ के सरपरस्ती में भोजपुरी के शिक्षण के आधार रखल गईल।

भोजपुरी के एगो लमहर पत्रिका 'द सन्डे इंडियन भोजपुरी' के प्रकाशन भोजपुरी भाषा में जे कइलस उहो एगो बंगला भाषी रहे -श्री अरिंदम चौधरी जी। 'द सन्डे इंडियन भोजपुरी' के एगो अंक 'सदी की सौ साहित्यकार' भोजपुरी भाषा के 1000 वर्ष के विकास के बरियार तरीका से पेश कइले बिया।

हमनी कवि, संपादक आ अनुवाद धीरज कुमार भट्टाचार्य जी के भोजपुरी सेवा के कइसे भुला सकत बानी जा। भट्टाचार्य जी कोइल भोजपुरी पत्रिका के प्रबंध संपादक रही। भोजपुरी गद्य आ पद्य दुनु खल में खूब लिखले बानी, सबसे लमहर काम इहाँ के बांगला साहित्य से भोजपुरी अनुवाद के बा।

धीरज कुमार भट्टाचार्य जी के लिखल एगो भोजपुरी कविता देखि :

अबहीं कविता लिखल ना जाई

अबहीं कविता लिखल ना जाई
कि कुलही छान्ह छवले सकेर
आ परेत बनल सीसो
दूर अउरी दूर स्फटिक आकाश
आ बुधुआ के माई के मांजल
छीपा अस सुरुज

अबहीं सूखल जड़ पर चाहीं
मन के दुखद मरोड़, बून-बून जल
एगो एचके अकेला छन,
गरम साँस -
एक ठोप शीतल पियास
अबहीं कविता लिखल ना जाई

(साभार : आगे आगे - धीरज कुमार भट्टाचार्य)

संतोष पटेल

बेतिया, पश्चिम चंपारण, बिहार के रहे वाला संतोष पटेल जी , रिसर्च स्कॉलर (भोजपुरी), हई , यूजीसी नेट क्वालिफाइड, एम ए, एमफिल के संगे संगे सिनिअर डिप्लोमा - गायन (संगीत) मे , संपादक - भोजपुरी ज़िन्दगी, सह संपादक - पपुर्वांकुर, (हिंदी - भोजपुरी), साहित्यिक संपादक - डिफेंडर (हिंदी- इंग्लिश- हिंदी), रियल वाच (हिंदी), उपासना समय (हिंदी), हई । कई गो भोजपुरी आ हिन्दी किताब लिख चुकल बानी , कुछ शोध परक भोजपुरी किताब प्रकाशन मे बडुवे ।

बंगला के सबसे बड़ कवि रवीन्दनाथ टैगोर के बाद काजी नजरुल इस्लाम के नाम लिहल जाला, संवेद पत्रिका के अंक 2012 के अप्रैल अंक क़ाज़ी नजरुल इस्लाम पर केन्द्रित रहे जेकर संपादन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिदी प्रो अवधेश प्रधान जी कइले बानी।

जून 1995 ई में एगो किताब नाम रहे - "नजरूलर हिंदी गान" के प्रकाशन नजरुल इंस्टिट्यूट, कविभव, बाड़ी न-33, बी रोड न - 28, धानमंडी आवासिका इलाका ढाका से भइल। एकर संग्रह आ संपादन बंगला देश के खोजी विद्वान श्री असदुक हक कइले।

काजी नजरुल इस्लाम देश भक्ति, श्री कृष्णभक्ति श्रृंगार, कुछ ऐहिक श्रृंगार से जुडल गीत लिखनी, कुछ बंगला गीतन के हिंदी रुपान्तरण कइनी। इहाँ के गीतन के चर्चा करत प्रो साहेब लिखत बानी की इस्लाम साहेब के गीत उर्दू में बा बाकिर ओहमे बंगला के मिश्रण बा। ब्रजबुली के इयाद दिला देला।प्रो प्रधान के अनुसार - शादी वाले संवाद ठेठ भोजपुरी में हैं और भोजपुरी भाषी मजदूरों से साथ नजरुल के गहरे सम्पर्क का पता देते हैं। उनके कई हास्यपरक रचनाएं हैं, शादिवाला संवाद तो हास्य से भरपूर है ही, अपने ही प्रसिद्ध हास्यपरक "हास्यगीत आमार खोकार मासी, ओरे सर्वनाशी का जो हिंदी रूपांतरण है वह भी काबिले गौर है।"

एगो गीत बा जवना के हिंदी आ भोजपुरी के बीच के कविता कहल जा सकेला जेकर रचना काजी साहेब कइले बानी। फिलिम चौरंगी के इ गीत मेगाफोन कंपनी के ग्रामोफोन रेकॉर्ड में स्वरबद्ध भइल बा। रेकॉर्ड के ऊपर गीत के रचियता आ सरकार के बतौर नजरुल के नाम अंकित बा।

कैसे खेलन जाबे सावन में कजरिया
बदरिया घेर आई गोरिया
कैसे जैयो तू अकेली
कोई संग ना सहेली
गुंडा घेर ले हैं तोरी उगरिया
केतनो चढ़ गेलो सूली
केतनो चढ़ गेलो फांसी
बदरिया घेर आई गोरिया

तेरा देख गोरा चेहरा
करे हैं घर के सौ सौ फेरा
लम्बी लम्बी बांधे पगरिया
बदरिया घेर आई गोरिया
भौजी बुलाला तोर गोरी
हमरे सुनने लागे गोली
काहे पडल बाटे उ हमरी उगारिया
कैसे खेलन जाबे सावन में कजरिया

(साभार - संवेद, अप्रैल, 2012)

बंगला देश के राष्ट्रकवि काजी नजरुल इस्लाम साहेब के लिखल भोजपुरी गीत जवन इस्लाम साहेब लिखले बानी 'चौरंगी' फिलिम ला भोजपुरी में पढ़ी रउरा लोग-

सारा दिन छत पिटी हाथहूँ दुखाई रे
तबहूँ तो पेट भर के खैका ना पाई रे
तू बोल बहिन आज घरे
का का पकाई हे
तू अभी चूल्हे तक बारो नहीं
बच्चा भुखाय हे
हमहूँ कुछ खावा नहीं बनावा नहीं
सास मोरी जुलुमी भोर उठ सताय हे
बैरन नन्द -बहुते हरजाई हे
सारा दिन छत पिटी हाथहूँ दुखाई रे

(चौरंगी फिल्म के ई गीत मेगाफोन कम्पनी के ग्रामोफ़ोन रेकार्ड में स्वरबद्ध भईल रहे, रेकार्ड के ऊपर गीत के रचयिता और सरकार के बतौर नजरुल के नाव लिखाईल बा)

काजी नजरुल इस्लाम के भोजपुरी कविता-

शादी से पहिले

काल के होई बियाह हमरे
परन्तु ऐ भूरुआ भइया
रह जइहा तू हकुआ भकुआ
मौज करब हम मुंह तू तकुआ
भेजी द हमका सास आ ससुरा
बढ़िया सुघर कपडा
हंसी-ठठोली साली करिहें
रूठब जब हमरा के मनइहें

घडी घड़ी ससुराल में जाइब

मौगी के ससुराल से लाइब
सासु लिहे मोर बलइया
साली करिहें खेल खेलइया
झाँकत जब तू लोग के पाइब
मडई में मौगी के छिपाइब
देख के तू लोग तरसब
मौज करब हम मुंह तू तकबा
हे, 'घोटालूवा
आरेहे लोटलुबा

कहाँ जात बाड़े रे
जाइब कहाँ हो ?
राम राम राम
खेत में हल चलावे जात हई
कहो कहाँ
अरे सुन भइया !
रोज रोज त बरधा के लेके खेत जाइके
होला,
कार भाई ठाट से हमरा ससुराल से चले के
होई, हमार गवनवा हो ?
तीन बेर हम रोज नहाई
अंखिया भर भर कजरा लगाई
पउवां तेल दबाई
कंघा ले कर बाल बसाई
सुन्दर देख पड़ब भवे ओके
मौगी छड़िया लगाई मोके
सेगुआ से दिस रायन रही उ

कैसन करे मेह साउर तू
मोटी टिकरी पकाई
हमका खिलाई आपके खाई
देखिया जब खोजी मोको
अहो हो हो उहो से हो //

(संवेद, अप्रैल, 2012 पृष्ठ- 45 से साभार)

क़ाज़ी नजरुल इस्लाम साहेब के दोसर भोजपुरी रचना – शादी के बाद

हे भइया झपसट
कब अइला हो ?
कहा आपन कुशल कहा
घरदौआ बीयाह कइला हमनी का पुछला भी ना
बोला कइसन कटल ह हो
हो मितरा का कहीं रे !
हल्ला करके त हम बड़का सवाल में पड़ गइली
अगड़म बगड़म खातिर झगड़ा रगड़ा हो दिन रामन
लत्तम जुत्तम चौकी बेलना दांत पिसौबल भइल
हम बोलिला ओसे सुन्दर औरत की छै जोय
उ बोलेला बोतल मोट का पुरुस ना ऐसा होय
गुजरे हमका लेवे देना आपन लेडाय ठायल
भारु बोलो हमके तू पुरुसू नाही कांच केला
तेरा बम्सका भाई देम्ही जोरू की दाबेला
अइसल के स्वामी जो रुहे तो ठंडक पाएं नैन
चोर पुलिस का लागा डांटी खींचल खिंचा होय
काफी काबली जइसे झगड़े ओके हमरे छोय
गोकसा का वास करक होय भैया जोसे आयलो गायेन
बाप रे बाप !
ऐसस गड़बड़ झाले वाला
बाज रहे जोरू औ साला
नाहि कते हम बिय आपसा
भागा जा हे ठकुआ तकुआ
छुप्ली जोरू के अस्पट से
खटपट से
राम बांचइल इ
ऐसी तरक्की कर छोती ह बोलो घर की साली /
दू चार प्यार रचते ।।। इग्गारहवें माह
बहु शुनेशा कहशा झंपाझांपी लत जाय
कहे ग्गास्सा होकर सादा हर्द बच्ची बच्चा
चार पइसा का इंसा देखो
हुए हो प्यारी मक्खी
आ पैर को चिउंटी बस कर
भूला मुछददर छिख्खी
आखिर पागल हाय मुछददर
तामा तब ये ऐ कमंडर
बे जे बन्दर ये ऐ कलददर
बोला कैसे शादी करके हो चें चे में विवाह
विकल शाम को मुरझाइल जूही
सुबह के खिल कर
देख के है फिकर
रखूँगा क्यों कर
पड़ी म्यारी जाऊं बरशाय
करूँ इसगेन का हाय /
(साभार – संवेद ,अप्रैल 2012, पेज 45-47)

www.bhojpurisahityangan.com

कंत्राकी वाक

राज मोहन

हॉलैंड के भारतीय भोजपुरिया मूल के लोग 7 की.मी. पैदल यात्रा पे

143 साल पहिले भारत के जमीन छोड़ 'लाला रुख' जहाज भोजपुरिया मजदूर के लेके सूरीनाम के राजधानी पेरामरिबो आइल रहे। सात समुंदर पार कर के 5, जून 1873 के इ भोजपुरिया भाई लोग पहिला हाली सूरीनाम के धरती पे कदम रखल।

इ लोग कॉन्ट्रैक्ट मजदुर रहे एह से कन्ट्राकी कहाइल। सात समुंदर पार करे के एह जज्बा के स्च्वेंजेंन के समुद्री तट पे हॉलैंड के भोजपुरिया लोग आपन पूर्वज के , 6 जून 2015 के सात किलोमीटर पैदल चल के याद कइलस। एह मौका पे होलैंड के मशहूर भोजपुरी गायक आपन एल्बम कंत्राकी के गाना गइलन -

सात समुंदर पार कराई के ,
एक नवा देस के सपना देखाइ के
कइसे हमके ऊ भरमाई के
ले गइल दूर सरनाम बताइ के

कपडा-लता-खर्चा-गहना
गठरी में बाँध के सब आशा
कृपा श्रीराम के मुठी में
दुसर के सहारा बाँधी के
कभी दिल घबराय
थोड़ा पछताय
साईत अब जाए के दिन बढ़िया आय
आंच सुरुज के कुछ हमके भी
भाग में मिली बरिसन तरसाइ के
कइसे हमके ऊ भरमाई के
ले गइल दूर सरनाम बताइ के

दूइ -तीन महिना जहाज पे
रिश्ता-नाता तो बन ही जाए
कन्त्राक जो गाइ के थइली में
एक -एक बिचार दिमाग में आय
उ देस में कइसन लोग भेटाइ
खेती-बारी का बढ़िया सइराइ
पांच बरिस कस के कमाइ के
लौटम गावँ आपन पइसा जमाइ के
कइसे हमके ऊ भरमाई के
ले गइल दूर सरनाम बताइ के

कुछ दिन सरीनाम में रही के भाई
धीरे-धीरे आदत पड जाई
अब एतना मेहनत करी के
सब छोड़-छाड़ वापिस के जाई
जीव बोले अब हिये रही जाए
सरकार के बल पे खेत मील जाए
मन के कोना में इ सपना
रहगे एक दिन गावँ आपन जायेके
सात समुंदर पार कराई के ,
एक नवा देस के सपना देखाइ के
कइसे हमके ऊ भरमाई के
ले गइल दूर सरनाम बताइ के
कइसे हमके ऊ भरमाई के
ले गइल दूर सरनाम बताइ के

राज मोहन

उत्रेच , नीदरलैंड के रहे वाला राज मोहन जी सरीनामी भोजपुरी के वर्तमान समय के बहुत बड़हन प्रभावशाली आ ख्यातिप्रसिद्ध गायक हई , नया धुन तकनीकी आ अंदाज मे 200 बरिस पहिले पलायन के दर्द के इँहा के अपना गीतन के माध्यम से आवाज दे के एगो बहुत उंच स्थान प भोजपुरी के ले के गईल बानी। कनाडा अमेरिका भारत आ अउरी कई गो देसन मे आपन प्रस्तुति दे चुकल बानी , एह घरी नीदरलैंड (हालैंड) मे बानी

www.bhojpurisahityangan.com

बिन्दु दुनाली के सोन्हू-नीमक

अश्विनी रुद्र

कब्बडी के खेलाड़ी गुड्डू कॉलेज चैम्पियन रहले हा। उनकर कब्बडी के कोर्ट में कुदत-फानत देख के बानरो सरमा जा सन। जब गुड्डू खेलस तब उनकर फुर्तीला कूदल देख नवहा लोग मोबाइल से विडियो ले के फेसबुक, यूटुब पे डाल देस। आपन फुर्तीला खेल से गुड्डू जिला टीम के कप्तान हो गइल रहन। कब्बडी खेलाड़ी लोग में हल्ला रहे की गुड्डू स्टेट टीम में भी जल्दी जा सकत रहन अउरी 3 साल बाद एशियाड रहे, ओह में भी चानस अच्छा रहे। अब त देश कब्बडी लीग भी शुरू हो गइल रहे। आपन उज्जवल भविष्य देख गुड्डू कॉलेज के क्लास पे कम अउरी कब्बडी के दाव-पेच पे खूब ध्यान देस। घर से सपोर्ट भी रहे; बाबूजी के मन रहे की एशियाड में भोजपुरिया इलाका से गुड्डू गोल्ड ले के आवस। कूल्ह मिला के कहीं त गुड्डू कबड्डी खातिर जीयस आ मरस।

गुड्डू एक हाली सांझ के कब्बडी खेलला के बाद कॉलेज के गेट के गुमटी पे चाह पियत रहन। जाहिर बा कब्बडी के ही बात चलत रहे। कब्बडी लीग के शुरुवात से सब केहू पटना पाईरेट्स के ले के उत्साहित रहे। लेकिन ओह सांझ गुड्डू कुछ अइसन देखले की उनका खातिर जिंदगी के माने बदल गइल। भइल का की कालेज से निकलत एगो खूब सुघर लइकी पे गुड्डू सिंघ के नज़र पड़ गइल। अब का ! गुड्डू के कब्बडी वाला दिल आ मजबूत फेफड़ा दुनो ओह लइकी पे आ गइल।

चाह-पान के गुमटी वाला - मनोहरा से ओकर बायोडाटा

अश्विनी रुद्र

आरा , बिहार के रहे वाला अश्विनी रुद्र जी , अमेरिका के न्यूयॉर्क में टेक्नोलॉजी कंसलटेंट हई। ईँहा के लिखल कई गो हिन्दी आ भोजपुरी लेख अलग अलग पत्रिका मे प्रकाशित हो चुकल बा। आखर प शुरुवे से लिख रहले बानी।

निकालल गइल। पता चलल की लइकी के नाम रहे बिन्दु दुनाली। बिन्दु के सपना का दो बड़ी होनहार भोजपुरी सुपर डबल स्टार गायक बने के रहे। कई गो भोजपुरी चैनल के आ जाये से जिला जवार में कई गो उत्साही लोग के सपना रातो रात कल्लू, बल्लू, रसिया बने के रहे। गुड्डू के इहो बात पता चलल की बिन्दु कॉलेज के युवा भोजपुरी साहित्यिक गोष्ठी में जाये ली। अब का कहे के रहे ? साहित्य से कोष दूर रहे वाला गुड्डू के भोजपुरी साहित्य के धुनी रमा गइल। गुड्डू रात भर गूगल प भोजपुरी साहित्य जोहले। जयादा चीज़ ना मिलल। फेन कई गो मित्र ,संघतिआ से पता कईले अउरी सप्ताह भर में महेंदर मिसिर, भिखारी ठाकुर, हीरा डोम , कपिल पाण्डेय, जौहर साफियाबादी इ सभे के कालजयी साहित्य रट गइले। गुड्डू अब सपना में भी भोजपुरी साहित्य देखस। रात दिन क के फुलसुंघी उपन्यास याद करस। गुड्डू मन बना लेले रहले की अब बिन्दु के आपन साहित्य ज्ञान से प्रभावित कर लेवे के बा। अंग्रेजी में कहावतो बा : फर्स्ट इम्प्रैशन इज द लास्ट इम्प्रैशन। इ मिशन पूरा करे में उनकर चेला-चपाटी भी पूरा मदद कर सन। कुछ दिन में साहित्य गोष्ठी में के के बा अउरी केकर सपना का बा गुड्डू के पूरा लिस्ट मिल गइल रहे।

एक महिना के पूरा भोजपुरी तैयारी के बाद गुड्डू पहुचले भोजपुरी साहित्य गोष्ठी में। बिन्दु हल्का नीला सूट पहन के एकदम मोरनी लागत रही। गुड्डू आपन सांस थमले गोष्ठी के मय लीला गुड्डू आपन आँख से देखले। एगो गीत लिखे वाला कवी रहलन गोष्ठी में। उनकर परिचय देवल गईल : हमारे बीच के युवा कवि सन्तु जी हैं, जो की जल्दी ही भोजपुरी गीतकार बनेंगे, जिनकी रचनाए में साहँस और उतेजना से भरी रहती है, आज कुछ नया सुनाएंगे। सन्तु जी आपन नया धाकड़ बानगी अहिसे देले :

जेह दिन उठल तहार लहंगा रिमोर्ट से

ओह दिन फेडरर हार गएलन सेंटर कोर्ट से।

नाडाल देलन तहरा सलामी आपन तोप से

अबकी उठी तहार लहंगा सामियाना के चोप से।

गोष्ठी में दू मिनट खातिर सन्नाटा रहे। गुड्डू बीच में हँस देलन। गुड्डू के लागल के अब सन्तु जी पिटइहन; खुले आम अश्लील बात करबऽ उहो आरा जिला में त पिटईबे करबऽ। गोष्ठी में कइ गो महिला सदस्य रहे लोग। गुड्डू के अउरी खराब लागल काहे के बिन्दु भी ओहिजे बइठल रही। सन्तु के लात खाइल लाजमी रहे। गुड्डू के मन कइलस की ओहीजे थपड़िया देस। लेकिन इ का ! गुड्डू देखलन के सभे कोई ठाड़ा हो के थपरी पिटता ? गुड्डू के बुझा गइल की इ साहित्य मंडली कम औरी भावी भोजपुरी गायक संगीतकार लोग के हुजूम रहे। एह लोग के साहित्य के शब्दकोष "लहंगा, चोली, बलाउज, जोबन, जवानी के रस एही टाइप के शब्द तक सीमित रहे। सन्तु के कविता के कुछ लोग व्याखया कइल की भोजपुरी इंटरनेशनल हो गइल बिया। सन्तु एकरा के "सानिया मिर्जा कट नथुनिया" से आगे ले के फेडरर औरी नाडाल तक ले जात बाड़े। कुछ देर बाद गोष्ठी के संचालक कहलन:

"सन्तु जी कविता के माध्यम से कहना चाहते हैं की भोजपुरी बाला का बोलबाला अब सारे विश्व में है; नाडाल भी उसके सुन्दरता पे मुग्ध हैं और अपने तोप से उसको सलामी देना चाहते हैं"। फेन से खूब ताली बाजल। सन्तु जी मंच से गर्व के मुद्रा में उतरलन। लागे के अब महान असांस्कृतिक भोजपुरी कवि "विनय कलाकारी" के बाद इनके नाम बा। सन्तु, गुड्डू के देखलन अउरी तनी घुर के देखलन। "सन्तु के कविता पे हँसेवाला लोग पिटा ला" एगो सन्तु के चेला चेतावनी दे के गइल।

संचालक फेन से माईक ध के चीचीअइले -" और हमारे बीच एक नए सदस्य हैं: गुड्डू सिंघ"। हम गुड्डू जी से निवेदन करते हैं की वो मंच पे आयें और अपने बारे में कुछ बताये"। गुड्डू चुप-चाप भारी मन से मंच पे गैलन। मंच का कहल जाओ, गोष्ठी के बीच में ईगो पीढ़ा रखल रहे ओही पे चढ़ गइलन।

"हमार नाव गुड्डू सिंघ पड़ी अउरी हम जिला सतरीय कब्बडी खेलाड़ी हई।" गुड्डू आत्म-सम्मान के साथ कहलन। इतना सुनते लोग गोष्ठी में सभे हँसे लागल।

"तब जा के कब्बडी-कब्बडी करिए, यहाँ का करने आये हैं ?" एगो खादी पहनले सरबोदाई झोला लेले साहित्यकार कहलें।

गुड्डू देखले के हँसे वाला लोग में बिन्दु भी रही। जाहिर बा की लोग के कबड्डी के प्रति कोई संवेदना- सम्मान न रहे। पिछला 4 दिन से गुड्डू के फोटो अखबार में छपत रहे, गुड्डू के लागत रहे की इ लोग अखबार देखले होई अउरी आपन जिला जवार के खेलाड़ी के तनी इज्जत दिही। लेकिन अइसन कुछ ना भइल। गुड्डू पहिला बार आपन कबड्डी के ग्रुप से अलग भइल रहन ; अउरी कबड्डी के सच्चाई से रुबरु भइलन।

" कह तो ऐसे रहे हैं जइसे विराट कोहली के बाद इनके नंबर है"- सन्तु कहले। "कब्बडी नहीं, कवनो कविता कहिये, हम भी देखे"। सन्तु खुले आम गुड्डू के चैलेंज देले।

"नहीं तो सुर ताल लय में कबड्डी कबड्डी गाना ही गा दीजिये"- बिंन्दु कह के खिल-खिला के हँस देली।

अभी त हम कवनो कबिता नइखी लिखले। लेकिन आपन पसंद के जौहर साफियाबादी के लिखल एगो रचना कहम। रवा सभे ध्यान से सुनी।

छन–छन के बनल बिगड़ल, टाकल बा हथेली पर

आवे ले हँसी हमरा, जिंदगी का पहेली पर।
सुभ याद के परछाही, सुसुके ले अंगनवा में
जब चांदनी उतरे ले, सुनसान हवेली पर॥

सुन के गोष्ठी में सन्नाटा रहे। एगो बुज़ुर्ग सदस्य के छोड केहू तालियों ना बजवलस। फिर गोष्ठी में संगीतकार लोग आपन भोजपुरी तान सुनइलस लोग। बिन्दु भी एक दू को गाना गइली। उनकर गाना भी साया-चोली खटिया तोड़ रहे। जाहिर बा युवा सदस्य लोग के बिन्दु चहेती रहली। प्यार में डूबल गुड्डू के सन्तु के कविता त खराब लागो, लेकिन ओइसनके गाना बिन्दु के मुंह से मिसरी लेखा लागो।

गोष्ठी ख़तम भइला पे सन्तु गुड्डू भीरी अइले।

“आप मेरे कविता पे हँसे थे ना? वो एक दिन नंबर वन गाना बनेगा। चलेंज देते हैं -सन्तु गुरनियईले।

कुछ दिन तक अईसहीं गोष्ठी चलत रहल। गुड्डू जहाँ भोजपुरी साहित्यिक कविता कह पढ़ के बुज़ुर्गन के दिल जीतत रहले। सन्तु आपन लहंगा फार कविता से जवनकन के ताली बटोरत रहले। हतना ताली बटोरला पर भी सन्तु के संतोष ना रहे। सन्तु के लागो की इ गुड्डू के जल्दी मजा चखावे के पड़ी।

हेने गुड्डू के इ साहित्यिक कविता पाठ में मनो ना लागत रहे। लगबो कहाँ से करे कब्बडी खेले वाला सरीर भोजपुरी साहित्य में केतना बुद्धि लगाइत ? उनकर मन ता ककरी के खेत, माने की बिन्दु में बसल रही। मय पाठ उनका इम्प्रेस करे के चक्कर में होत रहे, आ बिन्दु इम्प्रेस रही सन्तु के लहंगा फार कविता पे। एक दिन गुड्डू के लागल के अब बिन्दु भीरी जा के उनका आपन दिल के बात बता देवे के चाहीं।

एक दिन गोष्ठी में सभे कोई आपन रचना, कविता गाना के पाठ अउरी आपन कला प्रदर्शित करत रहे। हमेसा के तरह गुड्डू पीछे बैठल रहन अउरी उँघत रहन। उनकर इ गोष्ठी में कवनो पूछ भी ना रहे। सभे कोई उनकर मजाक उड़ावे। गुड्डू के बारी आवे त उ बेमन से कुछ दोसर भोजपुरी कवी लोग के कविता सूना देस जेकरा कुछ बुज़ुर्ग सदस्य पसंद करे लोग, अउरी कुछ ताली बाज जाए। सन्तु जी जब अश्लीलता के चासनी के साथ आपन लिखल रचना परोसस त गोष्ठी में नयका लोग में गर्दा-गर्दा हो जाये। कुछ दिन ऐसही चलल।

एक दिन सभा समापन के आखिर में अध्यक्ष जी कहले की महान हिंदी गायक सोन्हुनिमक अउरी बीमार सानु पटना आवत बाड़े अउरी “युवा भोजपुरी साहित्य मंच” उनका के बुलइले बा। सोन्हुजी अउरी बीमार जी दुनो जाना बुलावा स्वीकार कइले बा लोग।

इ ख़बर सुनते ही एकदम हल्ला मच गईल। भइल की, एगो सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन भी कइल जाओ जेह में मंच के रचनाकार लोग के सोन्हुनीमक जइसन गायक भीरी आपन रचना पेश करे के मौका मिली। हर विधा से एक एक सदस्य चुने के बात भइल। बिन्दु- दुनाली के गाना गावे के मिलल त सरबोदाई झोला साहित्यकार से आपन भोजपुरी पटकथा सुनावे के मौका। बिन्दु-दुनाली के आपन गोड जमीन पे ना रहे। उनका सोन्हुनीमक भीरी गाना गावे के मौका रहे। बात अटक गइल की कविता के कही? सभे कोई सहमती से सन्तु जी के नाव लेहलस। लेकिन, एगो बुज़ुर्ग चाचा सदस्य अड़ गइलन ! कहलन “इ सन्तुवा सगरो अश्लीलता फइलावत बा, अब सोन्हुनीमक भीरी भी गन्दगी बतियाई ? गुड्डू के मौका दियावल जाओ”। इ बात सुन के सन्तु के पारा आसमान प चढ़ गइल। “इ चाचा पगला गइल बाड़े? का अश्लील – अश्लील कहत बाड़s? चोली, साया, लहंगा, कछिया आज से भोजपुरी के पहचान हs। लोलीपोप गाना देखs ! ओह पे त बड़का डायरेक्टर जरल जोहर भी नाचत बाड़न। चाचा नूतन के जमाना गइल इ सन्नी लीओन आ हनी सिंह के जमाना बा ! अउरी सोन्हुनीमक नायका जमाना के हवन, अउरी इ ग्रुप के नाव भी त भोजपुरी यूवा साहित्य मंच बा ? सन्तु समझइलन।

तबो मंच के अध्यक्ष, बुज़ुर्ग के बात टाल ना सकत रहन। इ गोष्ठी के शुरुवात इहे कइले रहन जब उ युवा रहन। उनकर मान रखही के रहे। तय भइल की गुड्डू अउरी सन्तु जी में मुकाबला होई अउरी गोष्ठी ले सदस्य लोग वोट दिही। जे जीती, ओही के सोन्हुनीमक के सामने कविता कहे के मौका मिली। गुड्डू सोचले की कहाँ इ भोजपुरी मुकाबला के चक्कर में पड़ गइले ? एने सन्तु के लागल की उनका मौका मिल गईल आपन अपमान के बदला लेवे के। सन्तु कहले “ इ गुड्डू के आपन कविता लिख के लावे के पड़ी, हेतना दिन से खाली पता ना दोसरा-दोसरा के कविता पड़ के बुढउ लोग के ताली बटोरता”। ओइसे भी सन्तु के लोकप्रियता देख के इ बात तय रहे की वोटिंग उनके फ़ेवर में रही। भइल की सोन्हुअउरी बीमार सानु एक सप्ताह में आई लोग एह से दू दिन बाद मुकाबला करा के फाइनल कर देवल जाई के के जीती। सब सदस्य के एक-एक वोट देवे के बात भइल।

अब, गुड्डू लगे नया चुनौती रहे। कब्बडी के मैदान में कूदे-फाने वाला कहा से कविता लिखित? गुड्डू सोचले के काल्ह तक उनका के बिन्दु-दुनाली से आपन दिल के बात कह देवे के चाहीं। ना त कविता मुकाबला में हरला के बाद बड़ा फजीहत होई बिन्दु के सामने। गुड्डू के दोस्त लोग के राय भी वही रहे। उनकर कबड्डी के साथी भी उनका मैदान में मिस करत रहे लोग। भइल की पचड़ा छोड़ जल्दी भौजाई के मनावs अउरी कब्बडी खेले आवs। स्टेट

www.bhojpurisahityangan.com

सलेक्सन भी 3-4 दिन में बा।

आपन दिल के बात कहे ला गुड्डू रात भर प्रैक्टिस कइलन। एतना गहिर प्रयास सायद ऊ कब्बडी ला भी ना कइले रहलन। अगिला दिन जब गोष्ठी ख़तम भइल त गुड्डू सुनसान जगह पा के बिन्दु के रोकलन। बिन्दु भी गुड्डू के चिनहत रही, से रुक गइली।

"जी रउवा से एगो बात कहे के रहे" - गुड्डू डरते कहले।

" कहs" - बिन्दु कहली। बिन्दु के लागल की मुकाबला के वोट मांगे आइल होई।

" हम रवा के पसंद करी ला" - गुड्डू बिना कवनो लाग-लपेट के कहले। रात भर के जवन प्रैक्टिस रहे ओहिसन कुछो ना कहले। सीधे मुंह से निकल गइल। गुड्डू नरभस रहन।

अब बिन्दु के कठिया मार गइल। ऊ समझ गइली के कब्बडी खेले वाला गुड्डू काहे भोजपुरी साहित्यिक गोष्ठी में आवत रहलन। बिन्दु कहली – "ठीक बा, लेकिन कवन बात के प्यार? पढ़े लिखे के त तहरा बा ना दिन भर आवारा गर्दी अउरी कब्बडी खेले के बा।"

लेकिन हम आवारा ना हाई अउरी हम प्रोफेशनल कब्बडी खेलाड़ी हई कवनो मोहल्ला छाप ना- गुड्डू सफाई देले।

"कब्बडी से का महल खड़ा क ले बs? कवनो आईपीएल के क्रिकेट खेलाड़ी थोडे हव? अउरी हम एक दिन बड़का सिंगर बन जाईम त लोग का कही कि इंकर मरद कब्बडी खेले ला ! समाज हँसी।"

"समाज ऐसहू तहार बेतुका लहंगा छाप गाना पे हँसे ला"। गुड्डू के मुह से निकल गइल। अब बिन्दु रोये रोये हो गइली। गुड्डू के आपन गलती के अहसास तुरंत हो गइल।

"हमार कहे के मतलब रहे की समाज के काम ह हँसल। कब्बडी समाज हमार आदर करे ला अउरी भोजपुरी साहित्य हँसे ला, ओइसही कवनो ना कवनो तहरो गाना पे हँसी"- गुड्डू बात समहरले।

"जवन होखे हम आपन जिंदगी बर्बाद तहरा जोरे काहे करीं ? सन्तु के देखs आगे चल के बड़का गीतकार बनी, अउरी लाखो के भोजपुरी एल्बम बनाई। किस्मत रही त कला संस्कृति मंत्री भी बनी। पैसा,नाम, सोहरत सब; कब्बडी खेलाड़ी के के चिन्हे ला?" बिन्दु के दिल के बात निकल गइल।

अब गुड्डू के सब समझ में आ गइल रहे। बिन्दु सन्तु से प्रभावित रही। लेकिन, बिन्दु भी आपन प्रेमी के दुखित ना करत चाहत रहली; एह से अइसन दाव रखली की खाली ना जाओ। "तू बड़का भोजपुरी गीतकार बन के दिखाव त हम तहार बात मान लेम। पहिले तू काल्ह सन्तु के हरा के देखावs"- कह जे बिन्दु आगे बढ़ गइली।अब गुड्डू चुप-चाप खड़ा रहलन। अब उनका बिन्दु के प्रेम चाहत रहे त उनका कविता मुकाबला सन्तु से जीतही के रहे। गुड्डू चल देले आपन जिंदगी के पहिला, चाहे आखिरी भोजपुरी कविता लिखे। रात भर गुड्डू भोजपुरी कविता लिखे के कोशिस कइले। उनकरा ना छन्द के ज्ञान रहे ना मात्रा के। काफ़ी कोशिस के बाद कवनो ढंग के तुकबंदी भी ना बना पइले। बनबो ना करीत, हर कोई के आपन एगो सीमा होला। गुड्डू कब्बडी से बन्हाइल रहन , गीत-कविता से ना। कविता से हार मानला के बाद गुड्डू सोचले की अब गोष्ठी में जाइल भलाइ नइखे। सन्तु के मौका मिली, अउरी काफ़ी फ़जीहत होइत। लेकिन, दोसरका दिन सुबह –सुबह सन्तु हार ना मनले। कब्बडी खेलाड़ी कबो मैंदान ना छोडे जबतक साँस ना छुट जाये। सोचले के जवन होखी देखल जाई, लेकिन गोष्ठी ऊ जइहे जरूर।

बेमन लाचार गुड्डू बिना कवनो भोजपुरी कविता के गोष्ठी में चहुपले। सभे केहू घुर के गुड्डू से देखत रहे। गुड्डू के बुझाइल ना, की का बात बा ! गोष्ठी के बुजुर्ग सदस्य जवन हमेसा गुड्डू के तरफ़दारी करत रहन उहो आज मुह फुलइले रहन। बिन्दु एगो कोना में बइठल रही।

" का भइल सभे?" गुड्डू उत्सुकता में पूछलन।

"भइल का? सब पता बा की तू एहिजा काहे आवत रहs" -सन्तु जी तरनीइले।

गुड्डू के बुझत देर ना लागल की गोष्ठी में सभे के पता चल गइल बा की गुड्डू अहिजा भोजपुरी साहित्य से लगाव खातिर ना बल्कि बिन्दु खातिर आवत रहन। गुड्डू के तनी सरम सा लागल। एह खातिर ना की उनकर करनी गलत रहे, एकरा खातिर की जवन बुजुर्ग के उनका पे भरोसा रहे उनकर भरोसा टूटल रहे। उनकर सपाट चेहरा अउरी गुड्डू के घुरत आँख इ साफ़ बतावत रहे। "अब कवनो कम्पटीसन ना होई; सोन्हुनीमक भीरी कविता पाठ हमही करम। ते त कवनो लायक नइखे"-सन्तु फरमान जारी कइले। गोष्ठी के सभे कोई सन्तु के हाँ में हाँ मीलइलस।

गुड्डू सोचले के इ लोग के बिन्दु वाला पता कइसे चल गइल ? ना गुड्डू कबो ओछा हरकत कइले, ना कबो कवनो गलत काम ! गुड्डू बिन्दु के तरफ़ देखले। बिन्दु आपन मुह फेर लेली। गुड्डू के सब बुझा गइल। तब तक सन्तु अउरी गोष्ठी के कुछ सदस्य गुड्डू के अपमानित करत रहल लोग। सब कोई कहलस की गुड्डू के गोष्ठी से निकाल देवल जाओ। गुड्डू चुप-चाप सब सुन, अपमानित होके के गोष्ठी छोड़ के चल देलन। गुड्डू के बुझा गइल रहे की बिन्दु के ख़्वाब ऊँचा बा, अउरी उ केहू बड़ा आदमी के पत्नी या प्रेमिका

बनल चाहत रही। गुड्डू फ़िर आपन पहिला प्यार कब्बडी के बना लेवे के सोचले। पूरा तइयारी हो गइल रहे। मंच पे फुल-सज्जा, अभिवादन के सब सामन तइयार रहे। बिन्दु सफ़ेद रंग के सलवार-कमीज़ में जंचत रही। एतना खिलती काहे ना? उनका आपन फेवरेट कलाकार के सामने गाना गावे के अवसर रहे। सोन्हुनीमक सभे गायक-गाइका के आदर्श रहन। सोन्हुनीमक अउरी बीमार सानु अइलन अउरी कार्यकर्म चालू भइल। सब कुछ ठीक रहे। सन्तु जी के जइसे कविता के शुरुवात भइल जेह में चोली साया के हुक के वर्णन रहे। सोन्हुअउरी बीमार जी दुनो जाना बिफ़र पड़ल लोग।

"हम यहाँ भोजपुरी संस्कृति जान के कबीर, रहीम, भिखारी जी के कुछ सांस्कृतिक रचना सुनने आये हैं यह अश्लील तुकबंदी नहीं? - सोन्हुजी गरजले।

सन्तु जी लजा के भगले। भाग का गइले, भगा दिआइल। कुछ देर के कार्यक्रम के बाद सोन्हुनीमक कह देलन की सब ठीक बा लेकिन भोजपुरी युवा सांस्कृतिक कार्यक्रम में कुछ भी भोजपुरी संस्कृति नइखे झलकत। सब हिंदी के नक़ल होता। अध्यक्ष महोदय थोड़ा घबड़इलन। फेर बिन्दु के इशारा भइल। कहल गइल की बिन्दु बहुत बढ़िया भोजपुरी गाना गावेली अउरी सोन्हुजी के अपना आदर्श माने ली। बिन्दु के सन्तु के हाल देख के भी कुछ समझ ना आइल रहे ईगो लहंगा, चोली छाप गाना गा देली। सोन्हुजी महिला समझ के कुछ बोललन ना लेकिन कहलन की गायकी पे ध्यान द अभी बहुत प्रयास के जरूरत बा। आ इशारा इशारा में ढेर कह देलन। बीमार सानु पूर्वी गावे के कहलन बाकी बिन्दु के ना बुझाइल अउरी उहो आपन फ़जीहत करवा लेली।

कार्यक्रम के असफ़लता देख अध्यक्ष महोदय ढेर सारा प्रोग्राम ना होखे देलन अउरी कुछ वार्तालाप – चर्चा पे जोर देलन। भोजपुरी फिल्म के बात पे मामला फिर से बिगड़ गइल। सोन्हुअउरी बीमार सानु के मूड ख़राब देख एने-ओने के बात चलल। हेने सन्तु जी पहिलही आपन फ़जीहत पे चुप-चाप शांत कोना के बइठल रहले। फेन उनका कवनो मौका ना दियाइल। एक सदस्य सोन्हुनीमक से पूछलन की रउवा अहिंज़ा के कवन चीज़ से प्रभावित बानी? जहा बीमार सानु कहलन की कुछो चीज़ से ना। सोन्हुनीमक कहलन की गोष्ठी से त ना लेकिन इ सहर के एगो आदमी से बहुत प्रभावित बाडन। सोन्हुजी कहलन की आज कल ऊ कब्बडी लीग अउरी कब्बडी फॉलो करे लन। उनका नज़र में इ सहर के गुड्डू बहुत अच्छा खिलाडी बा। आज के अखबार में स्टेट सेलकसन के बात बा अउरी उनकर दोस्त के टीम अभिषेक बच्चन के टीम में गुड्डू के खेले के मौका दिआई। 10 लाख सालाना। गुड्डू से मिले के चाहत भी सोन्हुनीमक रखले अउरी एक तकड़ गुड्डू जोरे कब्बडी खेले के भी। कुछ लोग बतावल की गुड्डू इ न्यूज़ सुन के रात के ही ट्रेन धर के मुंबई चल गइल बाड़न मुबई टीम के कॉन्ट्रैक्ट साइन करे। सोन्हुनीमक एह बात से खुस भी भइलन अउरी मायूस भी।

गोष्ठी में सब कोई अवाक रहे। जेह आदमी के कार्यक्रम खातिर लोग गुड्डू के ना चुनल अउरी उनका के अपमानित कर के भगा दियाइल उनकर प्रशंसक उहे सोन्हुजी निकललन। सभे के साप सूंघ गइल। बिन्दु अखबार के उ पन्ना देख के चुप रही।

कुछ साल बाद के बात बा। भोजपुरी युवा सांस्कृतिक मंच में अब अश्लीलता के कोई जगह नइखे। सन्तु जी केने बाड़े केहू के पता नइखे अउरी बिन्दु आपन गायकी में सुधार कइले बाड़ी। भोजपुरी युवा सांस्कृतिक मंच के लोग एक बार फ़िर सलाना प्रोग्राम रखले बा। का त एहू बार बिन्दु दुनाली स्वागत गान गइहे। लेकिन अबकी मुख्य अतिथि बिन्दु दुनाली के आदर्श सोन्हु नीमक नइखन बल्कि गोल्ड मेडलिस्ट गुड्डू सिंह बाडन। गुड्डू एशियाड में भारत टीम के कप्तानी कर के कब्बडी में गोल्ड लाइल बाडन। अबकी बिन्दु बहुत उत्साहित बाड़ी।

www.bhojpurisahityangan.com

गाँव अभी ले, ना अइलऽ बुद्धन !

बम्बे गइलऽ ,उहें के भइलऽ,
गाँव अभी ले, ना अइलऽ बुद्धन,
पइसा वइसा मिले समय पर,
बाकि चाहत रहीं तोहर दरसन,
अइसन नोकरी के का फायदा,
छोड़वा देवे जे गाँव-आंगन,
छोड़ के इहवां के आपन मेहरारू,
का उन्हे जोड़ लेलऽ गठबंधन...?

(1)
कच्चा आंगन से गइल रहऽ तू,
अब तऽ पक्का घर बा,
अधिया तीसरी करत रहलऽ,
अब आपन बिगहा भर बा,
माड़-भात आ दाल खेसारी,
एकरा से जादे का पइतऽ,
झींगा, गरई, रोहू, पोठिया,
आहर उबीछ के लेअइतऽ,
तहरे करम पर मिल जाता अब,
कबो-कबो कुछ चिकन-चाकन,
बम्बे गइलऽ, उन्हें के भइलऽ,
गाँव अभी ले ना अइलऽ बुद्धन...

(2)
आंगन में के तोंत काट के,
जगह फैल कर देनी जा,
बैलन के सब नाद चरन अब,
घर के पिछुती ठेल देनी जा,
शाम के आपन दलानी में,
अब केहू ना आवे जावे,
झूठ-मूठ लालटेन ससुरा,
टंकी भर तेल पी जावे,
अबके पैसा भेजतऽ तब,
छत प कोठरी बनवा दिहती,
डिश संगे रंगीन टीभी,
ओकरे में लगवा दिहती,
अइसन कौनो एस्कीम देखतऽ,
सोलर पलेट से होइत चमचम,
बम्बे गइलऽ, उन्हें के भइलऽ,
गाँव अभी ले ना अइलअ बुद्धन...

(3)
पहिले गाँव में नाली बहित,
अब बहेला सगरी नाला,
गली-नाली, कोली खातिर,
बात-बात पर निकले भाला,
झगरा झंझट होला हरदम,
लाठी-गंडासी भंजाये हरदम,
केहू साला-साली कहे,
केहू माई बहिन गरियावे,
डर लागेला कहीं कौने बात पे,
रायफल-पिस्टल ना चल जावे,
आदिम भइल अब राकस इहवां,
बिगड़ल गाँव इहे लच्छन,
बम्बे गइलऽ, उन्हें के भइलऽ,
गाँव अभी ले ना अइलऽ बुद्धन...

(4)
सोचत रहीं अबकी बारी,
तीरथ दरसन सब कर लिहतीं,
सोनपुर के मेला से,
बाछा बैल मंगवा लिहतीं,
छोटका के अगुवा आवेला,
पर हमनी के उ ना एक सुनेला,
दिन-दिन भर तास पीटे अब,
लबनी भर-भर ताड़ी पियेला,
कैसहू उ बी०ए० कर जाइत,
पराइमरी मास्टरी में लग जाइत,
बियाह सादी सब छुट्टी करके,
इत्मिनान भईल चाहीं हम,
बम्बे गइलऽ , उहें के भइलऽ,
गाँव अभी ले, ना अइलअ बुद्धन,

(5)
कब्बो कब्बो सुनत रहनी,
समय उहाँ के भारी बा,
सब बाहर वाला लोग के,
वापस भेजे के तैयारी बा,
अइसन काहे करे सब,
इ बात समझ न आवे हमरा,
मेहनत मजूरी से सब पेट पोसे,
फिर काहे के इ झंझट झगरा,
सोचत रही तू लौट अब अइतऽ,
इहवां दोकान दउरी कुछ कर लेतऽ,
एही बहाने छोटके के कुछ,
काम-काज धरा लिहतऽ,
दूर-देस परदेश कभी ना,
आपन जइसन लागेला,
जैसे बूढ़ पूरान सुग्गा,
पोस कभी ना मानेला,
सोच विचार लऽ ठोक ठठाके,
फिर लीहऽ आपन डिसीजन,
बम्बे गइलऽ ,उहें के भइलऽ,
गाँव अभी ले, ना अइलऽ बुद्धन.

नवनीत नीरव

भोजपुर, बिहार शिक्षा- ग्रामीण प्रबंधन में स्नातकोत्तर संप्रति - अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, सिरोही (राजस्थान) में कार्यरत प्रकाशन- कहानी, कविताओं एवं आलेख का नियमित रुप से प्रकाशन दैनिक भास्कर, नवभारत टाइम्स, कथाक्रम, जनपथ आदि में। कविता संग्रह 'मन गीला नहीं होता' का प्रकाशन २०१३

आजादी, इंसान से देश तक

श्वेताभ रंजन

कबो कवनो राह आदमी के बतकही, ओकर समाज के प्रति नजरिया ,टोह के मन के हालात जाने के कोशिश ,लगाव आ दुराव ,भक्ति आ भाव इ बतावेला की उ आदमी के जड़ धरती में केतना समाइल बा । केतना रस जमीन के खून में घोराइल बा। आदमी ,परिवार ,समाज से आगे देश के सीमा में घेराइल , मन बाँध के हर विचार के सीमा तय करेsला। सीमा पार के दोस्त आ दुश्मन निमन से पहचान के , आपन विचार के एगो -दुगो आदमी से ,परिवार तक , फेनु समाज से देश तक सगरी ओर पहुँचावे के प्रयास करेsला।

इ आदमी के स्वभाव त ह ,जे आपन करेजा में छुपल सही गलत के सही -सही अनुमान ना लगा सके पर देश के बाड़े में ओकर विचार बिलकुल साफ़। बारीक से बारीक चुक नज़र से गुज़र जाला ,वर्तमान से लेके अतीत तक सब पे विचार कौंध जाला।

इ उल्टा चक्र ,देश के कमजोर करेs ला। सन 1947 आजादी ,स्वाधीन देश के निर्माण ,भारत स्वाधीन ,दुनिया के मानचित्र पे आजाद भारत। एगो आज़ाद देश ,सौतेलापन के साथे पैदा भइल ,माई के कोख से निकलत लड़ाई। खैर छोड़ी इ बात ,होश में आते हर बच्चा जानेsला। बात आजादी के ,देश आजाद ,समाज आज़ाद,परिवार आज़ाद, अउरी आदमी !!! इंसान से परिवार ,परिवार से समाज ,समाज से देश... त आज़ादी भी एहि क्रम में होखे के ...चाहीं । इन्सान के आज़ादी से परिवार के आज़ादी ,परिवार से समाज के आज़ादी ,समाज से देश के आज़ादी ।

आजाद देश आजाद इंसान से होला । इ सोच की कुछ नया ना होखी,इ सोच की जिए के एके तरीका बा । इ सोच की धन से हीं सुख बा, इ सोच की हम सुखी त सब ठीक बा, इ सोच की उनकर सोच का बा, इ सोच की हम केतना पीछे बानी आ केतना आगे।

मन करेजा के चिर रहल
इंसान खुद में हीं घिर रहल
अपना से जीते खातिर
आपन मुह खुदे सी रहल

कब ले बारिश के बुनी नाहिन ,इंसान आपन विचार के , आपने करेजा में दफना जाइ फेनु बाढ़ के पानी निहन लोर बहा जाइ । हर तर्क की जिए के विशेष वजह तलाशे हर वक़्त कुछ नया करे के ठाने । इ मन के तालाब के मछरी नाही आज़ाद , ना चाही। बेहतर दुनिया, बेहतर समाज ,बेहतर इंसान तब जा के सही मायने में आज़ाद भारत, आजाद समाज ।

आजाद ख्याल इंसानी आज़ादी के जड़ ह । एकर मतलब सिर्फ नयापन के ठूँस देहला से नइखे। हर बेहतर कोशिश ,जिए के हर उ तरीका, जेमे रउवा जरी केहु असहज ना होखे, राउर जड़ केतना माटी में समाइल बा , केतना समाज के बीच पलाइल बा। सब उतना हीं जरुरी बा जेतना, आसमान के निचे कौनो गाछ आपन ऊँचाई से झुक जाला । निर्मल मन बिना कौनो छल जब आपन गिरेबां में ताके त आँख में गर्व होखे । आज़ाद इंसान के बुनियादी हकीकत ना लउकी ,तबले आज़ाद समाज आ देश खाली कहानी,कविता आ चर्चा में हीं लउकी ।

> " अगर रउआ आजाद नईखीं त राउर इज्जत केहु ना करी" - कलाम

श्वेताभ रंजन

सिवान , बिहार के रहे वाला श्वेताभ रंजन जी , पिछिला कुछ सालन से भोजपुरी साहित्य के थाती मे गजब के बढोतरी कईले बानी। लगातार गद्य आ काव्य के माध्यम से भोजपुरी के साहित्यिक पछ के अउरी बरिआर करत , इँहा के भोजपुरी काव्य संग्रह " कुछ कह रहल बा " प्रकाशित भईल ह । श्वेताभ जी एह घरी दिल्ली मे बानी ।

दू गो कविता

सावन

सोनी पाण्डेय

धरती के हूक छिपा के
लिखीं हिया के पाती
अब के सावन अईसे बरसे
जस बिरहन के आँखी।

कारे - कारे बादर आवैं
गोड़ तोड़ के बरसें
भर जाऐ सब ताल- तलैया
जियरा सबके हरसें ।

अँचरा में ले लाल सिन्होरा
भरीं माँग भर लाली
धरती के हरियाला चुन के
ले आईं भर थाली ।

ओरवानी से चुए टप - टप
अमृत के जस बरखा
अब के धान भरी घर , अँगना
आजी चलावैं चरखा ।

कजरी सब मिल गावें सखियाँ
डाली निबिया पर हिंडोला
बचल रहे बदरा औ धरती

तमन्ना

हृषिकेश चतुर्वेदी

तमन्ना रहल कि उनुका नज़र में बहुते खास बन जइतीं,
कबो खातिर में उनुका धरती और आकाश बन जइतीं,

अगर उ प्यास रहिते तs हिया के तृप्ति बनतीं हम,
अगर उ तृप्ति रहिते तs अधर के प्यास बन जइतीं,

समय के घात से घायल हृदय यदि टूटत बा उनुकर,
परम विश्वास बन जइतीं या चरम उल्लास बन जइतीं,

भिंजावे जब केहू के याद पलकन के किनारा के,
उमड़त प्यार में डूबल एगो एहसास बन जइतीं,

समय के चाल पर यदि हार जइते प्राण के बाजी,
जितइतीं प्राण के बाजी तुरुप का ताश बन जइतीं,

परल रहिते अगर वीरान में बनि के कहीं पत्थर,
उहाँ हर ओर उनका घास के मैदान बन जइतीं,

लउकितीं हर तरफ उनुका केहू के फटके ना दिहितीं,
बैठा के बीच में उनुके "ऋषि" हम व्यास बन जइतीं,

मशहूर भोजपुरी फिल्म अभिनेता कुणाल सिंह से निराला जी से बतकही प आधारित

उ लोग अपना के खेवनहार बतावेला, बड़ा तरस आवेला उ लोग पर - कुणाल सिंह

भोजपुरी सिनेमा के यात्रा जारी बा। आधी सदी के सफर पार कईला के बाद अब सदी पुरा करावे के राह में। अपना पर बड़ा गर्व होला कि हम एकर एक हिस्सा रहल बानी, अभी बानी। दिल से शुक्रिया करीले विश्वनाथ शाहाबादी, नाजिर हुसैन, एसएन त्रिपाठी, सुजीत कुमार, कुमकुम, पदमा खन्ना जइसन लोग के। ई लोग बड़ चुनौती के सामना कई के भोजपुरी में फिल्मी संसार खातिर जमीन तइयार कइले रहे लोग। एकरा के खड़ा कईलस लोग। हमार भी भोजपुरी सिनेमा जगत में सक्रियता के 35 साल हो गईल। 80 के दशक में जुड़ रहली। तब भोजपुरी सिनेमा के खातिर मुश्किल समय रहे। लेकिन इंडस्ट्री में अईसन-अईसन कर्मठ लोग रहे कि मन में प्रेरणा मिलत रहे, आगे संघर्ष करे खातिर उर्जा मिलत रहे। ई आपन भाषा बा, आपन सांस्कृतिक पहचान बा, एही दिमाग में रहत रहे हमेशा। तब ओह घरी आज लेखा मीडिया के एतना बड़ा स्वरूप ना रहे। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तो रहबे ना कईल रहे। प्रिंट मीडिया के पत्रकार लोग भी भोजपुरी सिनेमा के भाव ना देत रहे।कलम ना चलत रहे कबो। कहीं कि एक तरीका से हीन भावना भरल रहत रहे। प्रचार-प्रसार के मंच ना के बरोबर रहे। लेकिन ई कुल ना रहला के बाद भी फिलिम के निर्माण अईसन होखत रहे कि ओकर गहरा अउरी दूर तक असर होखत रहे। 25-25 सप्ताह तक एकह-गो फिलिम चलत रहे। कई गो फिलिम तो 50-50 सप्ताह चलल। आज तो एगो सिनेमा अगर 25-50 दिन चल जाए तो ओकरा के सुपर-डुपर हिट कह देल जाला। तब अईसन गीत-संगीत भी रचल जात रहे कि लोग के दिल-दिमाग आउर जुबान पर छा जात रहे। फिलिम में माटी के महक होखत रहे, अपनापन के भाव होखत रहे। आपन रीति-रिवाज होखत रहे। पारिवारिक संस्कार के छाप रहत रहे। एह से कुल लोग परिवार के संगे भोजपुरी सिनेमा देखे जात रहे। बिना कउनो मीडिया के प्रचार-प्रसार के भोजपुरी के कलाकार लोग घर-घर अउर दिल पर राज करत रहे। आज प्लेटफार्म बड़ हो गईल बा।

सिनेमा ढेर बने लागल बा बाकि अस्तित्व ही दांव पर लाग गईल बा। अब भोजपुरी सिनेमा में लोक के तत्व छोड़ के सब देखे के मिली। अब जईसे रउआ बात करीं तो हमनी किहां होली में भउजाई लोग के गाल में गुलाल मलल जाला बाकि लगले पांव छुए के भी रिवाज रहल बा। जब बेटी के बरात आवेला तो मैं गांव के औरत लोग गारी सुनावेला बाकि जब सबेरे बेटी विदा होले तो मैं गांव के लोग रोएला। ई कुल हमनी के परंपरा के हिस्सा बा। पिछिलका कुछ साल से तो भोजपुरी संस्कार के ही परे कर देवल गईल बा भोजपुरी सिनेमा से। जब भोजपुरी सिनेमा भोजपुरी संस्कार के कटलस तो भोजपुरी परिवार भी एह सिनेमा से कटे लागल। अईसन नईखे कि हम कुपमंडुक बानी कि बदलाव के साथे कदमताल करे के नईखी कहत... करे के चाहीं। तकनीक सिनेमा के बदलले बिया। तकनीक खातिर हिंदी सिनेमा के ओर देखे के चाहीं। बढ़ियां फिल्मांकन खातिर देखे के चाहीं लेकिन कहानी, सिनेमा के नाम, गीत-संगीत, संवाद आदि खातिर हिंदी सिनेमा के ओर तिकवे के का मतलब बा।

का हमनी किहां अपराध, बेरोजगारी, राजनीति में अपराधियन के वर्चस्व, पलायन, दहेज, खूबसूरत प्रेम कहानी, एह सब विषय नइखे। भिखारी ठाकुर जईसन रचयिता हमनी के समाज में रहल बाड़े जे बहुत पहिले से ई कुल विषय पर लिखत रहल बाड़े। महेंदर मिसिर के गीत बा हमनी लगे। लेकिन अभी के जे भोजपुरी के फिलिमकार लोग बा, उ ई कुल के बकवास मानेला लोग। तब डर लागेला कि एतना साल में, एतना मेहनत से खड़ा कईल संसार कहीं आपन अस्तित्व ना खो देबे। का कहीं... भोजपुरी सिनेमा में जे अभी बा, कुल लोग आपन छोट भाई नियन बा बाकि तरस आवेला उ लोग के बुद्धि पर जब लोग भ्रम पाल के ई कहे लागेला कि भोजपुरी सिनेमा जवन स्थिति में अउर जवन उंचाई तक पहुंचल बिया, एह में उनकर भूमिका ही सबसे महत्वपूर्ण बा। अगर अज्ञानवता वश कहेला लोग तो कवनो बात नईखे आउर अगर भ्रम बा तो इतिहास जाने के चाहीं... समझे के चाहीं। एह लोग पर तबो

निराला, पेशा से पत्रकार , तहलका आ प्रभात खबर खाति लगातार लिखे वाला निराला जी , औरंगाबाद बिहार के रहे वाला हईं। ईंहा के पुरबिया तान बैनर के नीचे भोजपुरी के पारम्परिक गीतन के सहेजे, सरिहारे आ ओह के नया कलेवर मे प्रस्तुत करे में लागल बानी। एह घरी पटना में निवास बा।

www.bhojpurisahityangan.com

तरस आवेला जब ई लोग जाके बिहार में कहेला कि बिहार में फिल्म सिटी होखे के चाहीं । स्टूडियो होखे के चाहीं । आउर बतावेला लोग कि एकरा से ढेर फायदा बा ।

जे लोग बिहार में स्टूडियो बनावे के मांग करत बा का उ लोग पहिले ई बताई कि बिहार में खुद रहे खातिर तईयार बा लोग ? रात में भी रे बैन के चश्मा लगा के घूमेवाला लोग एकरा खातिर तईयार ना होखी । लोग खुद रही बम्बई में, उ लोग के शूटिंग खातिर लावे मुंबई जाये पड़ी, गायक-गायिका लोग भी मुंबई ना छोड़ी । फिलिम में 100 घोड़ा चाहीं तो जाये पड़ी मुंबई बाकि स्टूडियो बनावे के एगो राग रट के बचकाना बात कई के लोग भोजपुरी सिनेमा के खेवनहार बनल चाहेला लोग । एकरा से बढ़ियां तो ई बा कि एकजुटता देखा के कुछ सवाल उठावल जाओ । पूछल जाओ सरकार से कि 50 करोड़ में बनेवाला बॉलीवुड के फिलिम से सरकार जेतना टैक्स सरकार लेबेले, ओतने टैक्स एक करोड़ में बनेवाला भोजपुरी सिनेमा से भी काहे ? 50 बरिस से जादा हो गईल भोजपुरी सिनेमा के बाकि काहे एतना साल में बिहार चाहे उत्तरप्रदेश के सरकार एह भाषा के सिनेमा के नाम पर कागज के एगो टुकड़ा के रूप में सम्मान देबे खातिर भी तइयार नईखे । होखे के तो ई चाहीं कि पहिले ई राज्यन में अधिक से अधिक शूटिंग होखे, एकर मांग होखे के चाहीं । सरकार के बतावे के चाहीं हमनी के जब शूटिंग होखी तो अधिक रोजगार पनपी । स्थानीय लोगन के अवसर मिली रोजगार के । सरकार के अधिक अनुदान खातिर बाध्य करे के चाहीं । सरकार नीति बनावे कि जे भी इहवां आके शूटिंग करी आपन सिनेमा के 80 प्रतिशत हिस्सा के ओकरा के 20 प्रतिशत अनुदान मिली । फेरू सरकार शर्त रखो कि अनुदान देब बाकि कम से कम 60 प्रतिशत स्थानीय लोग के मौका देबे के होखी । एह काम के असर होखी । समय लागी बाकिर एकर असर ठोस होखी । नतीजा भी ठोस निकली । लोग जब जुड़े लगिहें तो अपने स्टूडियो के माहौल बनी । पहिले माहौल बनावल जाओ, तब स्टूडियो के मांग करल जाओ । बाकि तो लफफाजी खातिर रोज कुछ न कुछ बोलल जा सकत बा । स्टूडियो के मांग करल जा सकत बा । अपना के भोजपुरी सिनेमा के कर्णधार बतावल जा सकत बा ।

अनन्या प्रसाद

माई

माई छू लेलू तू हमार मन
अपना स्नेह आ मुस्कान से
अचम्भित कर देलू हमरा के
स्वादिष्ट भोजन के स्वाद से
मन मोह लेलू तू हमार
दिखेला हमरा माँ सरस्वती
के रूप तहरा ही अन्दर
आ देबे लू तू ही हमरा के
प्रेरणा आ सीख जीवन के
हमरा हर किताब के अन्दर
माई तू ही तू दिखे लू।

www.bhojpurisahityangan.com

झूठ

अनूप श्रीवास्तव

झूठ बोले कउआ काटे, झूठ बोलल पाप बा... इ कुल हमनी के बचपने से सुनत आइल बानी सन, हमनी के बड़-बुजुर्ग आ माई-बाप इहे सिखवलेबा कि हमेसा साँच बोले के चाहीं। बाकी जब हम अपना जिनगी के छोट-मोट भा खास बातिन आ चीझुन के नगीच से देखेनी त बुझाला कि बिना एकरी एकहू डेग चलल मुस्किल बा। धोखा, फरेब, लालच, भा सवारथ खातिर बोले वाला लोग झुठ्ठा कहाला, आजु हम ए लोग के बाति ना करब। एगो डाक्टर जब मरीज के भलाई खातिर झूठ बोल के ओकर भयानक से भयानक बेमारी के छोट बतावेला त ऊ झूठ, हर साँच से उपर हो जाला।

एगो रेहड़ी भा गुमटी वाला, जब कौनो जान आ इज्जत बचावत भागत लड़की-मेहरारू के बदमासन से लुकवा के कहे कि हम कुछ नइखी जानत त ऊ झूठ, सौ गो साँच से बेसी हो जाला। त बोले वाला आदमी के मंसा आ जरूरत के हिसाब से कौनो झूठ के सही भा गलत ठहरावल जा सकेला। आजु हम रोजमर्रा के जिनगी में, छोट से बड़ बातन में, एकर हो रहल तरह-तरह के सकारात्मक इस्तेमाल पे राउर धियान दियावल चाहब, आ कुछ अपने देखल-सुनल अनुभव के चर्चा क के साझा करब।

1 - बच्चा जब छोट रहेला त माई कहेले- चन्दा मामा अइहें, ढेर खेलौना ले अइअहें ... ऊ जानेले कि, कौनो चन्दा मामा नाही अइहें बाकि लइका के भुलवा के कुछु खियावे खातिर भा सुतावे खातिर ऊ बोलेले।

2 - ऊहे लइकवा तनी अउरी बड़हन होला आ खाना ना खायेला त माई कहेले खलिहा पेटे जिन सुत बबुआ ना त सियरा आ के पेट टोइआई। जबकि ओकर सियरा से कौनो लेन-देन ना होला।

3 - जल्दी में, घर से निकरत तमाम लोग इहे कहेला कि बस दू मिनट में आवत बानी। जबकि उ जानेला कि केतना टाइम लागी आ सुने वाला भी जानत बूझत मान जाला।

4 - सबसे बड़ आ भावनात्मक झूठ, जउन हर घर में आदि काल से बोलात आइल बा। माई-बहिन भा घर के मुखिया के इ कहल कि हमरा भूख नइखे भा हम खा लेले बानी... खाली दोसरा के खियावे खातिर।

5 - घर के कड़क बाप, भाई भा चाचा के इ कहि के हड़कावल कि सुधर जो ... हम सब जानत बानी कि आजु काल ते का करत बाड़े... जब कि कुछ पता ना होला, अन्हरिये तीर चलावेला लोग।

दाम्पत्य जिनगी में मरद आ मेहरारू के बीच झूठ के मज़ा में छुपल नेह आ समर्पण के अलगे नजारा होला। खास क के पइसा के मामला में, मेहरारू चोरँवधा पइसा धइले रहेले आ कहेले कि हमरी लगे तनिको नइखे। एही के उल्टा इहो समय आवेला कि मरद के लगे पइसा नाही होला आ कहेला कि, पइसा के चिन्ता मत कर सन। जबकि ओ समय ऊहो ना जानेला कि, कहवाँ से आ कइसे वेवस्था होई।

एक दौर अइसनो होला कि हर मुस्किल आ नामुमकिन लागे वाला बाति जब केहू पहिला हाली सुनेला त ऊ झूठ बुझाला। फेर ओकरा के सही साबित करे खातिर किरिया खियावल जाला जउन बिद्या कसम से सुरु हो के भगवान आ महतारी किरिया ले जाला। फेर ई झूठि के अक्सर हंसि-ठिठोली खातिर भी इस्तेमाल कइल जाला। लरिकाई में केहू से झुठ्ठो कहाए कि- होन्ने देख, फलनवा वोलावत बा। भा हाथी आवत बिया जब ऊ देख लेवे त हल्ला क के कहाए कि उल्लू बनवनी बड़ा मजा पवनी भा सात जने के खड़े खड़े छूव नाही त बिलनी होईब। एही तरह से एक अप्रैल के मूर्ख दिवस मनावल जाला। जवना में लोग एक दोसरा के बुड़बक बनावेला। माने एगो परंपरा के नाव पे झूठ बोलला के छूट। अतना कुल के बाद जो सोचल जा कि, इ झूठ का होला भा कइसे बनेला त इहे जवाब मिली की कौनो बाति के असलियत के काटल-छाँटल, जोरल-घटावल भा स्वरूप बदल के बोलल झूठ कहाला। महाभारत में एगो साँच बोलाइल कि अस्वथामा मरा गइल... बाकि हाथी। एकर आधा हिस्सा सुने वाला के इ आध-साँच घातक असर कइलस जबकि पूरा बात कुछ अउरिए रहे। त कुल मिला के इ कहल जा सकेला कि, इ झुठवा बड़ा काम के आ जरूरी औजार बा, जौना के बस सही इस्तेमाल करल आवे के चाही। आजु के समाज में हमार वकील साथी लोग एही कला के बेहतर इस्तेमाल से आपन जीविका चलावत बा जबकि, गवाहन के गीता आ कुरान पे हाथ धरा के किरिया खियावल जाला। इहो सही बा कि जवनेंगा अन्हार बिना अँजोर के मान नइखे, वइसे झूठ बिना साँचु के मान नइखे। जब एगो इम्तेहानी के परचा में, चार विकल्प वाला सवाल पूछल जाला त ओकर मतलब इहे होला कि, तीन गो झूठ के बीच में से एगो साँच जोहे के बा।

एइजुक हम खाली आपन बाति रखनी हईं, सही-गलत आ झूठ -साँच बतावल रउआ सब के ऊपर बा।

www.bhojpurisahityangan.com

लघु कथा - सादगी

डॉ. उमेश जी ओझा

हमार एगो दोस्त रहले संजय, उनकर चाचा जिला कोर्ट मे जज रहन। उनका लगे सभ सुख-सुविधा मौजुद रहे। बाकी जज साहेब आपन नोकरी छोड़ी के दोसर काम में जास त सरकारी गाड़ी भा वोह तरह के कवनो सुविधा अपना काम में ना लावत रहले। जब भी छुट्टी जास त उनकर भेस भूसा से केहू ना कह सकत रहे कि उ जज हवे। एक दिन हम आपन काम से पटना जाये खातिर बस में बइठल रहीं। थोड़ही देर में देखनी के संजय एगो आदमी के संगे तेजी से बस के ओर लपकत आ रहल बाडे । नजदीक अइला प देखनी कि उ आदमी आपन गोड़ में हवाई चप्पल, आ बिना आयरन कइल कुर्ता पायजामा पहिनले रहले। बस मे एको सीट खाली ना रहे। आवते संजय उनका से कहले कि का करे के सीट त खाली नइखे। बस एगो स्टाफ सीट खाली। अगर जल्दी होइ त स्टाफ सीट प ही बइठ क चले के पड़ी। ना त पीछे वाला बस के राह देखी जा। बाकी उ आदमी कहले कि ना बबुआ ऐही से चलीं जा। ओकरा बाद स्टाफ सीट पर बइठ गइलन आ संजय खाड़ हो गईले। तबही बस कन्डक्टर बस में आईल। आवते संजय के चिन्हत रहल। स्टाफ सीट प बईठल आदमी से कहलस कि इ सीट खाली कर दीं । देखत नईखी जज साहेब के भतिजा खाड़ बाड़े, इ स्टाफ सीट है। सीट प बइठल आदमी सीट छोड़ी के खड़ा हो गईले।

एह प संजय उनका के सीट प बइठावत कन्डक्टर से कहले कि- जेकर भतिजा के रूप में रउरा हमरा के चिन्हत बानी उहे जज साहेब हईं इंहा के ... ।

लघु कथा : ईमानदारी

समता सहाय

पदोन्नति से प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकेला लेकिन तृप्ति खातिर त धन चाहीं। शाखा के स्वतंत्र प्रभार मिलल रेवती बाबू पूरा प्रसन्न रहनी। अभी ले कौनो जरिया ना रहल ऊपरी आमदनी के किन्तु अब लागता दिन फिर आईल।शाखा प्रबंधक के लगे तमाम जरिया रहेला इ सोचि के मन आनन्दित रहल। रात में नीलम खाना देत रहली त बार-बार उनकर गला के लाल धागा उनका के धिक्कारत रहल कि आज ले एगो मंगल-सूत्र ना बनवा पईनी। सच्चाई और धरम के ठेका लेके हमही खाली बईठल बानी का,अब त बहत गंगा जी में हाथ हमहुँ धोएब ।

नीलम से कहनी तहरा खातिर एगो चमकीला पार के लाल साडी किन देब तनखाह मिली तब।नीलम कहली साड़ी पहिरले नईखी का,लउकत नईखे।रऊआ कौनो गलत रास्ता मत धरब। बाल-बच्चा पढ़-लिख लिहे उहे हमार श्रृंगार बा। निमिया तर के दुर्गा माई अहिवात बनवले राखी, साड़ी किनात रही। इहे कुल उधेड़-बुन में फँसल,दही- रोड़ी के टीका कईले रेवती बाबू ऑफिस पहुँच गईनी।

पहली तारीख पेन्सन वाला लोग के भीड़। जानकी देवी ,शहीद नेपाल सिंह के विधवा के पेन्सन के कागज, जब रेवती बाबू फाइल के पन्ना पलटे लगनी त कहनी भयंकर मिस्टेक बाटे । पहिले केहू धियान ना दिहल हा का -शहीद के विधवा के डबल पेन्सन मिलेला। साथ में उनकर बेटा गौरव सिंह रहलन। गौरव सिंह भी फ़ौज में काम करत रहलन। फिर रेवती बाबू सहयोगी से कहनी कि जबसे पेन्सन मिलता जोड़कर एरियर बनाई । लगभग ड़ेढ़ लाख रुपिया जोड़ि के निकलल। अब गौरव सिंह ख़ुशी से भर गइलन, माई से कहलन साहब के दू जोड़ी बुशट पैंट बनवा दिहे। रेवती बाबू के आँख भरी आईल, शहीद के विधवा के पईसा से बुशट पैन्ट ,धिक्कार बा। गौरव सिंह से कहनी फ़ौज में रहि के अईसन बात ना करेके चाहीं, का हम कपड़ा नईखी पहिरले। लउकत नईखे। ओबेरा नीलम के गला के लाल धागा के बराबरी कौनो नौ लक्खा हार ना कर सकत रहल, पदोन्नति में ही तृप्ति बाटे एतना बड़ा नेक काम के अवसर मिलल। बुशट के घिसल कालर उल्टा करके सिवा लेब त साल भर चली ओहिमे तस्सल्ली बाटे।

जानकी देवी आशीर्वाद देत जात रहली राउर बाल -बच्चा खूब पढ़े -लिखो लोग। निमिया तर के दुर्गा माई राउर अरदुवाई बढ़ाई ! राउर दुल्हिन के सुहाग बनल रहो । बेईमानी पर ईमान भारी पड़ गईल !

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी नाटक : अलबेला

निलय उपाध्याय

अंक -1 दृश्य-1

मार बढनी रे !

लोहा सिंह कहले कि ए खदेरन का मदर... बढनी माने झाड़ू होला। मार बढ़नी रे के मतलब का होई। झाड़ू से मारा। अब तू ही सोचा। कवनो खराब आदमी होई चाहे ना सुने लायक कवनो विचार होई तब नू कहले होईए कि पहिले झाड़ू से मार के मुआ दे आ घर से बहार के बाहर कहीं घूरा पर ले जा के फ़ेक द..?

तुलसी बाबा बडा बिदवान- कहले कि ए लोहा सिंग, मान ल। बाहर से त फेंक देब मार के, बहार के बाकि भीतर से कईसे जाई ?

सुनला के बाद दिमाग चकमका गईल।

पूछनी कि ए बाबा ,अब रउरे बताई कईसे जाई।

बाबा कहले कि बबुआ जईसे घर में से दलिद्दर खेदाला ओईसही एकरा के तू चित्त से उतार द। हम सोचनी कि इ बात अपना चित से उतार देब। हमरा दरवाजा पर चार को माल बा, हमरा का मतलब बा केहू। दया आवता बाकि केकरा केकरा प दया करब। केकर केकर लिही नाव ,कमरी ओढले सौसे गांव। सब के अपना दाढी मे आग लागल बा त आपन बुताई की दया करी। अब दया से काम कहां चलता। केकरा पासे अतना पईसा आ टाएम बा कि दोसरा के दुख सुनो। जा के देखी केकर देह खाली बा। केकरा देह पर घाव नईखे। बाकि सांच कही, मन से उतरल हा ना।

कुलहडिया के हूक हमारा सीना में धंस गईल हा।

अंक-1 दृश्य-2

हे भगवान केहू के करम फूटे त गंगाजी आ कुलहडिया नियन मत फूटे। जानतानी, ओकरा पता चल जाए कि केहू गांव से बाहर नोकरी करे जा रहल बा तब, आ बाहर से केहू नोकरी क के आ रहल बा तब, जाके सीधे गोड़ पकड ली आ रोवे लागी। जाए वाला से पूछी कि ए बबुआ ,हमार जगना कही लउके त कह दिह तहरे खातिर अंटकल बा माई के प्राना आवे वाला से पूछी कि ए बबुआ हमार जगना कही लौकल हा। आ जे ना कहल कि रोई ना कलपे लागे ले। ओकर पागल वाला हाल हो गईल बा। एक दिन सुननी कि कामता सिंह मुखिया के घर के लोग टोनहिन कह ओकर बडी पिटाई कईले बा ,मन ना मानल त सुन के गईनी।

ओहो तरे कलप के कहे लागल।

ए बबुआ ,अब गांव में लोग हमरा के कहता कि बाहर मत निकल। तू अपना बेटा खातिर कलपतारे,आ गांव के लाग जाता। जे नोकरी करे जाता उ शहर में बसते नईखे। जे गांव में आ जाता, वापस शहर जाते नईखे। ते त गांव के भूखे मार देबे। पंचायत के आदेस बा कि ए कुलहडिया तू घर से बाहर मत निकल। ए बबुआ ,तू हमार एगो काम कर द।

हम कहनी-बोल काकी, करे लाएक होई त काहे ना करब

हमरा जगना के बोला द

अब हमरा बुझईबे ना करे कि का कहीं आ का करी। कतना लोग गईले गांव से आ लौट के ना अईले। कतना घर में दीवार में उगले पीपर,और जाने कितने घरों के ताला के मोरचा जंग खोलले दरवाजे दीमक खोल रहल बाडे। हमरा त इहो नईखे मालूम कि कवना शहर में बा। हिम्मत क के कहनी-देख माई।

अरे बाप ओकरा बुझा गईल।

ओही तरे कलप के कहलस कि ए बबुआ ना मत कहिह।

निलय उपाध्याय

आरा , बिहार के रहे वाला निलय जी , हिन्दी आ भोजपुरी साहित्य मे उत्कृष्ट रचना कईले बानी । ईंहा के लिखल हिन्दी नाटकन के मंचन भी होला । कई गो भोजपुरी सिनेमा आ हिन्दी धारावाहिक के स्क्रिप्ट भी लिखले बानी । हाले फिलहाल ईंहा के गंगा यात्रा (गंगोत्री से गंगासागर तक) भी कईनी ह । भोजपुरी भाषा आ साहित्य मे बहुते गुढ़ आ पोढ़ जानकारी ईंहा के जरी बा । सम्प्रति मुम्बई में बानी

तहार बाबूजी के नाव बटोही रहे आ उ हमरा पति बिदेसी के वापस ले आवे कलकत्ता गईल रहन आ दू महीना रह के उनका के साथे ले के आईल रहन आ तू अगर असल बिदेशी के बेटा हव त जाके हमरा किसना के ले आव ,हमरा बेटा के ले आव।

माई तहार जगना के गईला कतना दिन भईल ?

ए बबुआ बीस दिन !

बीसे दिन में बउरा गईलू।

बउराइल नईखी हो, गईल नू तब से बीस गो फ़गुआ आईल ,बीस गो दीवाली आ बीस गो दशहरा बाकि जगना ना आईल।

बाप रे इ कुलहडिया त लागता कि जेवर बरतिया , आपन जान बचाव अलबेला।

माई हमरा बडा बाझ बा।

बबुआ अलबेला, बेटा गांव से जाए आ लौट के ना आवे त जतना महतारी रोवेले ओतने धरती रोवेली।ओईजा के हवा पानी आग सब रोएला।जब तहार बाबूजी बटोही हमरा मरद के ले आवे कलकत्ता गईल रहन त मिलकी के खेत रोवल रहे,मथुरा ब्रहम के पीपल आ पोखरा रोवल रह स तू बचपन में सुनले रह कि ना।

सुनले रही काकी।

ए अलबेला अगर हम अकेले हम इ बात कहिती त ना कह देतs । बटोही के खून तहरा देह में बा, अब इ बताव ना कैसे कहबs।

कवना शहर में बा ए काकी ?

बबुआ इ हमरा मालूम रहित त हम ना चल जईती। तू बटोही के बेटा अलबेला । इ काम तूही कर सकेल बबुआ । ना मत कहिह।

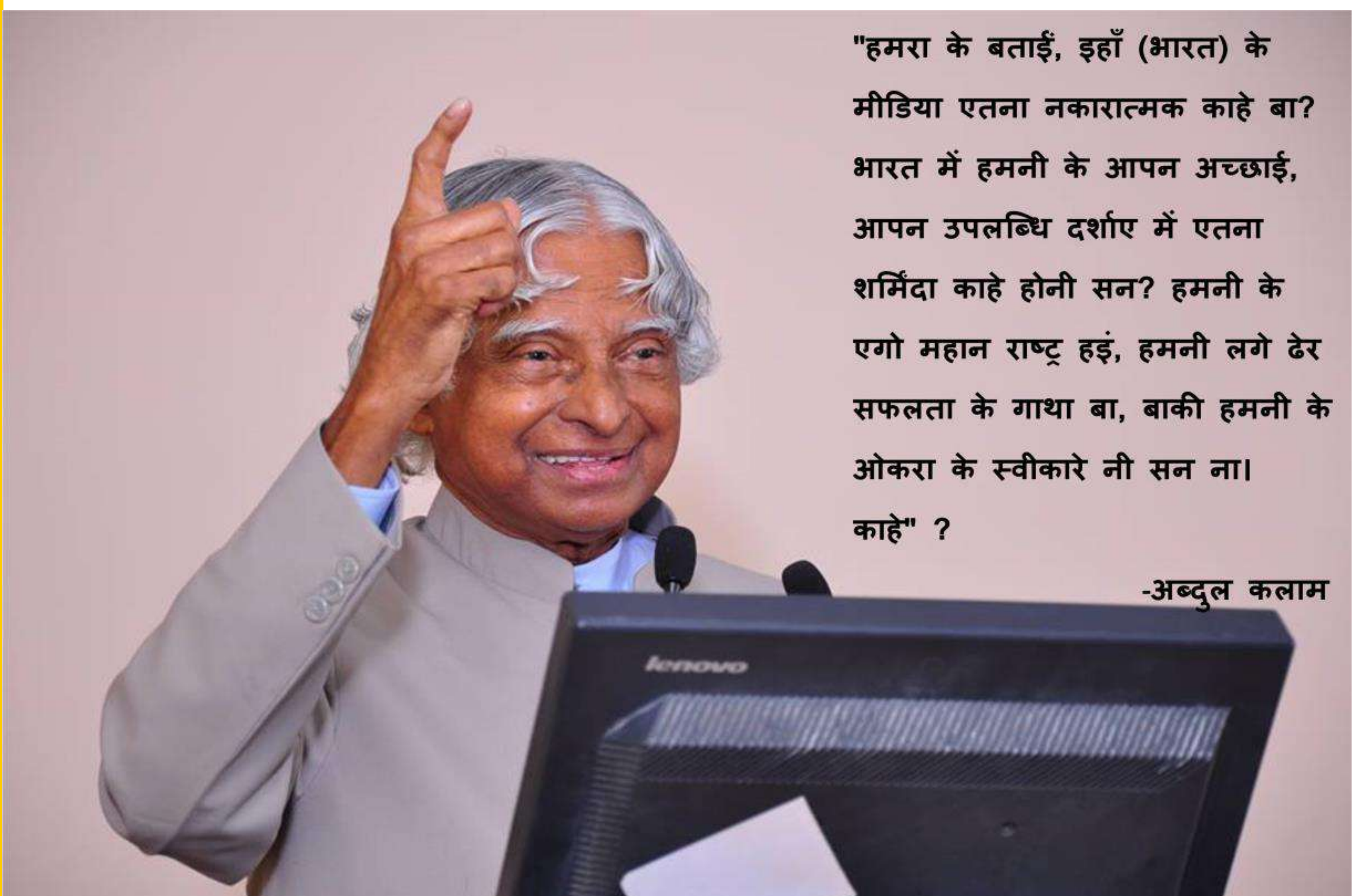

www.bhojpurisahityangan.com

फोटो-अजय कुमार

ज्योत्सना प्रसाद

नन्ही कली के कहानी बरगद दादा के जुबानी

कहे के त वसंत के आगमन हो गइल बा लेकिन ओकर रौनक, बावलापन, मस्ती, चहल-पहल, खुमारी न जाने कहाँ खो गइल बा? पूरा वातावरण में सन्नाटा एह कदर पसरल बा मानो वसंत, वसंत ऋतु ना होके ठंढा से हाड़- हाड़ कपावेवाला पूस के महीना होखे। आखिर ई सन्नाटा पसरो काहे ना? गइल जाड़ा जे पुन: वापस आ गइल बा। जवना वसंत में साँझ के बेरा चहल-पहल आ रौनक शुरू हो जात रहल ह आज ओही बसंत में घर-घर तहियावल रजाई फेर से खोलाये लागल बा। रेडियो बतावता कि वातावरण के तापक्रम अचानक बहुत नीचे लुढ़क गइल बा; जवना कारण कई जगह स्कूल के समय आगे बढ़ा देहल गइल बा त कई जगह सरकार की ओर से स्कूल बंद कइला के मुनादी ही करा देहल गइल बा।

प्राय: शाम के समय एह महिना में पहिले पार्क में जवन जीवन्तता के एहसास होत रहल ह ऊ सगरो पेड़-पौधा के रहला के बावजूद अब दीखत नइखे। कारण अपना-अपना स्कूल से छूटते जवन बच्चा पहिले सीधे पार्क की ओर भागत रहल ह अब ओकर माई ओकरा बाँह के पकड़ के सीधे ओकरा के घरे ले जातारी। आखिर उहो का करस? जानबूझ के त केहू माँ एह मौसम के बदलत मिजाज के आगे आपन हथियार डाल त नानू दी? ऊ औकात भर अपना बच्चा के संरक्षण त देबे करी। एकरा खातिर चाहे ओकरा अपना बच्चा के प्रति थोड़ा कठोर भी काहे ना बन जाये के पड़े?

पार्क के नन्हा-नन्हा, कोमल पौधा एह दोबारा आइल ठंढा में केहूँ-केहूँ तरह आपन पाँख गिरवले खड़ा बा। फूलन के क्यारी में अभी-अभी शामिल भइल नन्हा गेंदा के पौधा आपन दांत किटकिटावत बगल के मोगरा के पौधा से कहलस 'बाप रे बाप अइसन ठंढा अपना जिनगी में कबहूँ ना देखले रहनी हा।' गेंदा के पौधा के बात सुन अपना अहंकार में सिर उठवले आ एह छोट-मोट पौधन के हेय समझे वाला नारियल के पेड़ भी एह बतकही पर

ज्योत्सना प्रसाद

सिवान , बिहार के रहे वाली ज्योत्सना जी , हिंदी भाषा आउर साहित्य में बी. ए. (प्रतिष्ठा), एम्. ए. कइले बानी, अउर पटना विश्वविद्यालय से प्रोफेसर डॉ नंदकिशोर नवल के निर्देशन में महाप्राण निराला के गद्य के शैलीगत अध्ययन पर डॉक्टरेट कईले बानी। हिंदी में उपन्यास “अर्गला” प्रकाशित बा दू गो उपन्यास “अंतत:” आउर “मुक्तकुंतला” , कविता संग्रह आउर कहानी संग्रह प्रकाशन के प्रतीक्षा में बा। अरबी भाषा के मशहूर उपन्यास “अल-रहीना” के हिंदी में “बंधक “ शीर्षक से अनुवाद आउर प्रकाशन। जॉर्डन, चीन आउर अमेरिका में आयोजित सम्मेलनन में कविता पाठ। एह घरी मुंबई में रह रहल बानी।

हँसला बिना ना रह सकल। ओकरा सहसा ऊ कहावत इयाद आ गइल "सावन में जनमले सियार भादो में आइल बाढ़ त सियार कहले अरे बाप रे बाप अइसन बाढ़ त हम अपना जिन्दगी में कभी देखले ना रहनी ह।"

एह ठंढा में किकुड़ी मरले केहू-केहू खड़ा होखे के कोशिश करत छोट-छोट उदास पौधन के देख के सतत प्रहरी के तरह द्त्तचित्त भाव से अपना कार्य में लीन बरगद दादा के अंदर के अभिभावक एक बुजुर्ग के, एक दादा के ह्रदय से सोचे लागल आ ऊ कवनों अइसन उपाय करे के चाहे लगले जवना से एह नन्हा पौधन के होंठन पर मुस्कुराहट खेले लागे आ ऊ लोग अपना वोह मस्ती में एह ठंढा के एहसास तक भूला जाव। बरगद दादा कुछ देर ले मन ही मन तरह-तरह के उपाय सोचत रहले आ ऊ उपयुक्त ना लगला पर अपना मन में ही ओकरा के ख़ारिज भी करत चल गइले। सहसा उनका मन में एगो विचार आइल कि काहे ना एह छोटा-छोटा पौधन से कवनो अइसन काम करावल जाव , चाहे कवनों अइसन खेल में उलझा देहल जाव जवना से एह सभन के मन भी लागल रहे आ ओकरा के करे खातिर ई सब उत्साहित भी होखे।

बहुत सोचला-विचरला के बाद बरगद दादा तय कइले कि पार्क में एतना लोग–बड़ा से लेके छोटा ले, मरद से लेके मेहरारू ले रोजे आवत रहल ह। ओह लोगन से सम्बन्धित कोई रोचक घटना जेकरा-जेकरा इयाद होखे ऊ एक-एक करके अभिनय के साथे , चाहे बिना अभिनय के भी ओकरा के सुनावे। बरगद दादा के एतना कहल रहे कि जेतना बच्चा-बुतरू पौधा रहे ऊ ठंढा भुला के पहिले हम-पहिले हम करके चिल्लाए लागल। अब एगो दोसर समस्या आ खड़ा भइल कि पहिले अपना मन के बात केकरा के कहे के मौका देहल जाओं ? जवना से केहू के मन में ई भावना ना आवे कि बरगद दादा केहू के साथे पक्षपात कर ताड़े। बरगद दादा एकरो तोड़ निकाल लेहले। ऊ कहलन कि शांत होके पहिले हमार बात सभे सुने। जे सबसे पहिले एकाग्रचित के साथे पाँच मिनट ले शांत रही ओकरे सबसे पहिले आपन बात कहे के मौका मिली।

सबसे पहिले मौका पावे के होड़ में बरगद दादा के बात मान के सभे शांत हो गइल आ क्रमशः आपन-आपन बात अपना अभिनय के साथे सुनावे लागल। सबसे पहिले मौका मिलल गुलाब के पौधा के। गुलाब के पौधा पहिले चाँकलेट वाला दादाजी के नकल करत कहलन "चलो-चलो बच्चों पहले कबूतर को दाना डालते हैं।" कबूतर के दाना डलला के बाद चाँकलेट वाला दादाजी सब बच्चन के चाँकलेट देहनी आ चाँकलेट देहला के बाद आपन छड़ी टुकटुकावत टहले चल गइनी। चाँकलेट बटाये के बेरा ले गोलू अभी अपना घर से ना आइल रहले। जले अइले तले दादाजी बच्चा लोगन के चाँकलेट बाँट के टहले चल गइल रहनी। गोलू के घर से निकलही के बेरा बुझा गइल रहे कि आज देर हो गइल बा। एह से आवते सबसे पूछे लगले "चाँकलेटवाले दादाजी टहलने जाने के पहले मेरे हिस्से के चाँकलेट को किसी को दे गये हैं क्या ? सब बच्चा लोग ना-ना कहलस लेकिन उनकर साथी शरारती मल्लिक के शरारत सूझल आ ऊ अपना चाँकलेट के रैपर में एगो चौक के एक-डेढ़ गिरह के टुकड़ा लपेट के कहलन " हाँ मुझे दे गये हैं।" गोलू चॉकलेट के लालच में दउड़ के मल्लिक के लगे गइले आ चॉकलेट खाए के जल्दी में उनका हाथ से झपट्टा मार के चॉकलेट के रैपर में लपेटल चौक ले लेहलन आ बिना देखले चट रैपर हटवले आ पट ओकरा के मुँह में डाल लेहले। चौक जीभ पर पड़ते गोलू थू-थू करे लगले आ उनकर सब साथी लोग ठठा के हँसे लागल।

गुलाब के पौधा के बाद अड़हुल के पौधा के बारी आइल। अड़हुल के पौधा के ऊ घटना इयाद पड़ल जवना में सोसाइटी बनला के दस साल पूरा भइला पर सोसाइटी के ओर से एगो बड़ा जश्न मनावल जात रहे। ओह जश्न में मुख्य अतिथि रहले ओह इलाका के प्रतिष्ठित नेता। सब तैयारी हो गइल रहे। मुख्य अतिथि खातिर एगो बहुत बढ़िया सोफा लागल रहे जवना के ऊपर मोटा आ मुलायम गद्दा रहे। गद्दा के ऊपर कत्थई रंग के खोल लागल रहे। सामने एक मेज रहे जवना पर एगो सुंदर टेबुल-क्लॉथ बिछावल रहे। ओह टेबुल-क्लॉथ पर एगो बड़ा-सा बूके रखल रहे। सब तैयारी हो गइल रहे लेकिन जइसे आमतौर पर होला नेता जी लोग अपना प्रतीक्षा में दोसरा के आँख पथरा देला। वोह दिन भी कुछ अइसने भइल। सोसायटी के सब लड़िका-सयान तइयार होक नेताजी के इंतजार करत रहे लोग आ नेता जी के कुछ अते-पते ना रहे। नेताजी के इन्तजार में सयान लोग बेसबर हो गइल रहे त बच्चन के पूछही के का रहे ? अपना जगह पर से उठ के एने-ओने करे लगले सन। एही बीच श्यामा के दादी अपना दू बरिस के पोती श्यामा के अँगुली पकड़वले नीचे उतरली आ जलसा में शामिल होखे खातिर आगे बढ़ली। श्यामा अभी –अभी ठीक से बोलल शुरूये कइले रहली। जइसे प्राय: हर बच्चा नूतनता के आग्रही होला आ चाहेला कि हर नया आ सुंदर सामान ओकरे होखे वैसे श्यामा भी रहली। एह से ऊ अपना दादी से मुख्य अतिथिवाला सोफा पर बइठे के जिद्द करे लगली। अइसे त दोसरो बच्चा ओह सोफा पर बइठे के जिद्द कर चुकल रहले सन लेकिन ऊ सब श्यामा से बड़ा रहले सन एह से परिस्थिति समझवला पर समझ गइले सन बाकिर श्यामा अभी बहुत छोट रहनी 'मुख्य अतिथि' शब्द के अर्थ समझे में। श्यामा रो-रो के ओह सोफा पर बइठे खातिर अपना दादी के बेहाल कर देले रहली। एने मुख्य अतिथि के आवे के ठीक-ठीक समय के केहू के जानकारी ना रहे एह से लोग श्यामा के दादी के स्थिति देख कहे लागल –"अभी

बहुत छोटी बच्ची है इतना ज़िद्द कर रही है तो बैठा दीजिए न मुख्य अतिथि वाले सोफे पर ही। " श्यामा ओह सोफा पर बइठते अपना दादी से कहली "छुछु।" श्यामा के दादी कहली "अभी तो घर से आई हो। पाँच मिनट रुको घर चलते हैं।" पाँच मिनट ले ऊ अपना परिचित लोगन से बातचीत कइली आ ओकरा बाद श्यामा के अँगुली पकड़ली आ घरे चल गइली। एह घटना के पाँचे मिनट के अन्दर ही मुख्य अतिथि आ गइले। उनकर अगुआयी करे वाला लोग उनका के आदर समेत सोफा पर बइठवलस। अतिथि जी सोफा पर बइठले आ सोफा पर बइठते आ ओपर हाथ रखते क्षणभर में खड़ा हो गइले। ओतने देर में नेता जी के महीन धोती पीछे के तरफ से गिला हो गइल रहे। नेता जी के खातिर भी ई बहुत विचित्र स्थिति हो गइल रहे। ख़ैर गलती से कवनो बच्चा के हाथ से पानी के बोतल गिर गइल होई ई कह के केहू-केहूग नेता जी के क्रोध शांत कइल गइल लेकिन उनका गइला के बाद जे लोग वोह घटना के अनुमान लगा सकल ऊ हँसते-हँसते लोट-पोट हो गइल।

अड़हुल के बाद कनइल के पौधा के बारी आइल। कनइल के पौधा के एगो पुराना घटना इयाद पड़ल। दिन सुहाना रहे आ स्कूल में कवनो त्योहार के छुट्टी रहे। तीसरा महला के रमेश के घरे उनका रिश्तेदार के कुछ लइका आइल रहलेसन जे रमेश के ही उमिर के रहलेसन। अब रमेश के घरे उनका के मिला के कुल चारगो बच्चा हो गइल रहले। रमेश के बाबूजी अपना ऑफिस से आवत घड़ी चारगो आलू के चिप्स के पैकेट खरीद लेहले रहले। नीचे खेलत अपना घर के ओह चारो बच्चन के एक-एक पैकेट पकड़ा के ऊ स्वयं लिफ्ट से अपना घरे चल गइले। एने थोड़े ही देर के बाद रमेश के एक साथी सात बरिस के समीर अपना घरे से खेले अइले आ अपना साथी के साथे ओह तीनों बच्चन के आलू के चिप्स खात देखले त उनको लालच लागे लागल। आखिर उनकर उमिरे का रहे ? एह से ऊ अपना लालच पर रोक ना लगा सकले आ अपना साथी रमेश से अपना दोस्ती के वास्ता देते अपनों खातिर आलू के चिप्स माँगे लगले। एने रमेश के घरे ही उनका साथी हो गइल रहे एह से भी आ कुछ शरारत से भी अपना साथी समीर से कहलन "पहले मुझको अपना चिप्स का पैकेट खत्म कर लेने दो फिर तुम्हारे लिए भी घर जाकर एक दूसरा नया पैकेट ले आऊँगा।" अपना साथी के एह बात पर समीर के थोड़ा-थोड़ा शक रहे फिर भी ऊ उनका से एक उम्मीद से कहलन " ले आओगे न ?" एह पर रमेश कहलन "हाँ-हाँ क्यों नहीं ?" ओने समीर आलू के चिप्स के इन्तजार में रहले आ एने रमेश अपना पैकेट के सारा चिप्स जल्दी-जल्दी खा लेहले आ खइला के बाद ओकरा पेकेट के हाथ में लेहले सीढ़ी के पास अइले दू-चार सीढ़ी चढ़बो कइले आ फिर एक सीढ़ी पर रूक के अपना ओही खाली पैकेट में हवा भर के ओह खाली पैकेट के अइसन पकड़ले मानो ऊ बिलकुल नया आ भरल पैकेट होखे। रमेश सीढ़ी से नीचे उतर के उहे पैकेट अपना साथी समीर के पकड़ा देहलन। समीर ख़ुशी-ख़ुशी ओह पैकेट के थाम लेहलन। जइसे ओह पैकेट के खोले के ऊ कोशिश कइले उनका सब बात समझ में आ गइल। एने रमेश आ उनकर ई तीनों नया साथी हा-हा करके हँसे लागल आ ओने समीर शर्म आ क्रोध से लाल हो गइले आ रोअत ,रमेश से बदला लेबे के बात कहत अपना घरे वापस लौट गइले।

कनइल के पौधा के बाद बेली के पौधा के बारी आइल। बेली के पौधा अपना इयादन के पिटारा में से एक मनोरंजक संस्मरण सुनावे लगले। एकदिन के बात ह अपार्टमेंट के केयर टेकर सतपाल खम्भा के चारों ओर बनावल गोल चबूतरा के पास आपन कुर्सी रख के बइठल रहले। उनका हाथ में सोसायटी के बिजली के बिल रहे। ऊ ओकरा के जमा करावे जाए खातिर अभी सोचते रहलन कि हवा से उनकर हाथ से ऊ बिल उड़ के ओही चबूतरा पर चल गइल। सतपाल ओह बिल के उठावे खातिर उठले आ ओह चबूतरा का ओर अभी मुड़बे कइले रहले कि उनका घर से फोन आ गइल। ऊ वइसे ही अपना जेब से मोबाइल निकललन आ बिल उठावे के पहिले ही बातचीत करे लगले। सतपाल बिहार के मोतिहारी के एक छोट गाँव के रहनिहार हउअन। गाँव में उनका संयुक्त परिवार के साथे ही उनकर पत्नी आ पाँच बरिस के लड़िका रहेलन। घर से दूर रहला पर आदमी के कई तरह के पारिवारिक, भावात्मक चिंता रहेला। एही से सतपाल वोह बिजली बिल पर नजर त रखले रहलन बाकिर उनकर दिल-दिमाग अब उनका गांवे पहुँच गइल रहे। ओने अपार्टमेंट के एगो लड़िका हरिओम नीचे खेले अइले। वोह बेड़ा ले दोसर कवनों बच्चा अभी नीचे खेले ना आइल रहे। एह से ऊ सोचले कि आज तनि जल्दी घर से आ गइल बानी त का भइल ? अब लौट के घरे का जायेब ? घरे गइला पर अगर कहीं कवनों काम आ गइल त मम्मी फिर वापस आवहू ना दिहे। एही से पाँच-दस मिनट के त बात बा। काहे ना तले एही कुर्सी पड़ बइठ के एही जा से खेले खातिर आवे वाला दोसरा बच्चन के इंतजार कइल जाव ? अपना मन में ई विचार आवते हरिओम ओह कुर्सी पर बइठे गइले ओने सतपाल के लागल कि घर से बातचीत कुछ लम्बा खींच जाई त काहे ना तनि आराम से कुर्सी पर बइठ के बातचीत कइल जाव ? जवना समय हरिओम अभी कुर्सी पर बइठत रहले ठीक ओही समय सतपाल कुर्सी का ओर बिना देखले पीछे से कुर्सी खींच लेहले जवना कारण हरिओम 'धराम' के आवाज के साथ कुर्सी पर बइठला के बदले धरती पर गिर गइले। हरिओम बिना अपना चोट के परवाह कइले एह डरे झट से उठ बइठले कि ई अपार्टमेंट के बच्चन के खेले खातिर नीचे आवे के समय भइल बा। अगर कवनो

www.bhojpurisahityangan.com

दोसर बच्चा देख ली त लागी चिढ़ावे । बाकिर हरिओम के मन के बात मने में रह गइल रहे काहे कि ठीक ओही बेड़ा डी विंग के लिफ्ट के दरवाजा खुलल रहे आ वोह दरवाजा से खेले के जल्दी में एके साथे चार-पाँचगो बच्चा निकलल रहले सन जे दउड़त आवत रहले सन ।ऊ सब के सब हरिओम के साथी रहले सन। एह से अपना साथी के एह तरह से ढिमलाइल देख के सब के सब हँसे लगले सन जवना कारण अचानक वोह वातावरण में हँसी के फव्वारा फूट गइल।

पार्क में अचानक बहुत रौनक आ गइल रहे । कुछ ही देर पहिले जवना पार्क में एतना सन्नाटा रहे कि अपना साँस के आवा -गमन के खबर भी दोसरा के हो जात रहे। उहई आपन आवाज भी अब अपने सुने में कठिनाई होत रहे । पार्क के सब पेड़-पौधा ,फूल-पत्ती बहुत खुश रहे लेकिन हर एक के एके साथे खुश करना भी त कभी-कभी कठिन ही ना असम्भव हो जाला। पार्क के भी अब ओइसने स्थिति हो गइल रहे। ओह पार्क के बिलकुल नया सदस्य जे अपना जननी , जन्म–स्थल के भी अभी देखे में असमर्थ रहे ऊ रहे मोगरा के एकदम नन्ही कली। जवना से अभी सुई के नोंक बराबर भी पंखुड़ी ना दीखत रहे। ऊ कली अपना आँख से ई सब देखे खातिर आ वोह झुण्ड में स्वयं शामिल होखे खातिर बेचैन हो गइल। अपना ओह बेचैनी में अपना डाली पर ही चहलकदमी करे लागल । बरगद दादा मोगरा के कली के ई उतावलापन देखत रहले आ ऊ सब कुछ समझत-बूझत भी रहले लेकिन ऊ इहो जानत रहले कि एह मोगरा के कली के भविष्य का होखेवाला बा ? बाकिर ऊ ओह नन्ही कली के कइसे ई बात समझवते ? ओकरा से का कहते ? ऊ बेचारी ! का बरगद दादा के कहल बात ठीक-ठीक समझ पाइत ? बरगद दादा खातिर भी ई बात समझावल केतना कठिन होई कि ऊ ओह नन्ही कली के समझदारी तक जा के ओकरा के ई बात बता सकतन कि ई जंगल ना ह जहाँ सबके अपना हिसाब से बढ़े के स्वतंत्रता बा । इहाँ वनस्पति–राज भी नइखे जहाँ एक सुदृढ़ पेड़ एक कमजोर, असहाय लतिका के सहारा देबे खातिर आपन बाँह फैला के सदैव तत्पर रहेला आ ओकर हर सम्भव स्वागत करेला। अपना वनस्पति–जगत के सदस्य के ही काहे ? जंगल त हर एक के स्वागत आ मदद करेला । हर नन्ही जान ,कमजोर के संरक्षण देला लेकिन ई जंगल ना ह । ई बड़का शहर ह । महानगरी । मायानगरी । इहाँ कहे के त सभे सम्वेदनशील, सुसंकृत , पढ़ल-लिखल लोग रहेला । बाकिर एह आदमी लोगन के भी गजब किस्सा बा ! जे जेतने आगे बा ओकर ओतने पतन हो गइल बा। ई लोग अपना घर-परिवार-समाज के कली तक के त रक्षा ही ना कर पावेला। आये दिन ओही पर घात लगा के बइठल रहेला आ मौका मिलते ओकरा पर टूट पड़ेला । ओकरा के एह कदर मसलेला कि ओकरा हृदय के, ओकरा शरीर के तार-तार कर देला। ओकरा के एतना दर्द देला कि ऊ कभी आपन शरीर त्याग देले , त कभी आपन शरीर से प्राण निकलला के इन्तजार करत रहे ले। कभी ओकर अपना जीवन भर खातिर दर्द मिल जाला । कभी-कभी त ऊ ज़िन्दा रहेले भी त ओकरा ज़िंदा रहला के एहसास मर गइल रहेला आ ऊ एक ज़िन्दा लाश में परिणत हो गइल रहे ले। ओह कली के साथे ई सब करे ला के ? कोई अपना ही त- कभी आपन पड़ोसी बनके, कभी आपन ड्राइवर बनके, कभी आपन चौकीदार बन के। इहाँ तक कि कभी आपन शिक्षक बन के त कभी आपन अंकल बन के भी ! एह तरह ई लोग उहे ह जेकरा अपना पर संसार के श्रेष्ठ प्राणी कहाए के गर्व बा। बाकिर वस्तिकता त ई बा कि मनुष्य होके भी एह लोगन में तनिक भी मनुष्यता नइखे, आदमी होके भी आदमीयता नइखे, मानव होके मानवता नइखे । फिर चौरासी लाख योनी में सर्वश्रेष्ठ कहाए के फायदा का बा ? जबकि ई लोग त स्वयं एतना असमर्थ बा कि अपना लोगन से ही अपना कली के रक्षा नइखे कर पावत । जे अपना कली के रक्षा नइखे कर पावत ऊ भला एह दुनिया के देखे खातिर बेचैन मोगरा के एह कली के रक्षा का कर पाई ? काल मुँह अँधेरे ऊपर वाली आंटी आ सामने वाली आंटी अइहें आ हाथ से टो-टो के पार्क से सारा फूल तोड़ ले जइहे। इहाँ तक कि कवनों पौधा में पानी में रखला पर खिले लायक एक हू कली तक भी छोड़िए ना । अगर केहू रोकल-टोकल त गाली-गलौज पर आ जइहें। अइसन परिस्थिति में केहू लेहाजी ओह लोग के उमिर के लिहाज करके चुप रह जाला। त केहू इज्जतदार अपना इज्जत बचावे खातिर । अइसन में एह मोगरा के कली के भविष्य का होई ? केहू अनुभवी आ दुनिया देखले आँखन के समझते ई देर लागी का?

दू गो कविता

चंद्रभूषण पाण्डेय

1. आजाद बानी जा

दूई अतिने का कम बा कि
हमनीं के आजाद बानीं जा
लाखों चिन्ता-फिकिर बा
तब्बो आबाद बानीं जा

सोना के चिरऽई हमार देश
दम भ आजु ले लुटात बा
करेजा में सुनुगत रहे चिंगारी
एहिसे अबहुंओ किसान बानीं जा

देशवा के आजाद भऽईला
तऽ बरिसवन बीत गऽईल
तबहुंओ विकास खातिर
राजनीति के मोहताज बानीं जा

भले ई फोंफड व्यवस्था में
अनाचार खाली स्वतंत्र होक्खसु
माई के अलख जरते रहो हरदम
सपूत करोडो हजार बानीं जा

अपना महतारी पर से संउसे
अमंगल के छाया दूर रहसु हरमेसे
चनरमें ना मंगलो पऽ जाए ला
तैयारी का संगे संग बेताब बानीं
जा

2. राखी

राखी के बंधन
बंधि के ई बोले
जिअसु भाई तोहार

गीरहि पर गीरहि
चढि के ई बोले
रक्षा करबि हम तोहार

भाई बहिन से बढिके
संघतिया ना होले
निर्मल रहेला ई प्यार

दीदी तू गंगा
दीदी तू जमुना
धोई दिहलु मऽईल हमार

बहिनी तू विमला
बहिनी तू ममता
पूजेला सकल संसार

राखी के दिनवा त
सूना कलाई पर
चमके ला राखी टहकार

नैना जस बदरी
जब ताके घूमड के
भींज जाला अंगना दुआर

चन्दा आ बदरी संग
पेठावल बहिनन के
भेंटि जाला सभ समाचार

चंद्रभूषण पाण्डेय

आरा , बिहार के रहेवाला चंद्रभूषण पाण्डेय जी , भोजपुरी मे ठेठ आ गहिराह रचना खाति जानल जानी । भोजपुरी कविताई के एगो बरिआर ठेहा के रुप मे ईंहा के लगातार लिख रहल बानी । एह घरी ईँहा के बेगुसराय मे बानी ।

www.bhojpurisahityangan.com

दू गो कविता नुरैन के !

नूरैन अंसारी

"कबो टूटे ना भाईचारा"

मत मजहब के मापदंड बनायीं आदमी के पहचान के।
ना त बहूत बड़ा अपमान होई गीता अउर कुरान के।
प्रेम अउर भाईचारा त हर एक धरम के सार ह।
इ जात-पात अउर उंच-नीच के बहूत बड़ा उपचार ह।
अपना देश के सभ्यता-संस्कृती के इहे मूल आधार ह।
मत ठेस पहुंचे दी तनको सा भी राष्ट्र के सम्मान के।
ना त बहूत बड़ा अपमान होई गीता अउर कुरान के।
सबकर दाता एके हउवन,सब केहू उनकर संतान ह।
सगरी रिश्ता नाता में इंसानियत ही परधान ह।
सभ्य समाज में घृणा के नाही कौनो स्थान ह।
मत तौली कृत्रिम तुला में कबो बिधि के बिधान के।
ना त बहूत बड़ा अपमान होई गीता अउर कुरान के।

"बुढ़ापा के जिनगी "

लोर बहत बा अंखिया से बरसात के तरह।
हम जियत बानी जिनगी मुसमात के तरह।

भरल बा घर कहे के,अपने ही सब लोग से,
बाकिर छटाईल बानी हम कुजात के तरह।

जब से उठ गईल हमरा भरोसा के अरथी,
हम बसाये लगनी अरुआइल दाल-भात के तरह।

कईनी जिनगी भर हम जेकरा खातिर तपस्या,
उहे फेक दिहलस सब्जी से तेजपात के तरह।

'नूरैन' अब लउके न कुछ उ,बानी सुरजे के घर में,
जिनगी हो गईल मय अन्हरिया रात के तरह।

नुरैन अंसारी

गोपालगंज , बिहार के रहे वाला नुरैन अंसारी जी , भोजपुरी आ हिन्दी मे लगातार गजल आ कविता के सिरजना कई रहल बानी । आखर प शुरु से ही नुरैन जी के लिखल भोजपुरी कविता आ गजल पोस्ट हो रहल बा । इँहा के एह घरी दिल्ली मे बानी ।

बिहार : काल्हु ना आज!

अमित मिश्र

मैथिली फिलिम बनावे के काम सुरु भ गईल रहे। मय कलाकार मैथिल आ लोकेसनो सब मिथिलांचले में रहे। ओईसे त एकर सिड्यूल टोरंटो, न्यू यॉर्क आ नेपालो के रहे बाकी भारत में बिहारे रहे। हमनी के दरभंगा खाति निकलनी जा बाई रोड। ओने के रोड सब देखि के मन खुस भ गईल, एकदम पीच आ तरीका से कुल्ह उजरका पेंट लगावल, रोड त ओईसे पूरा बिहार के एकदम बढ़िया बा, चारों ओर। खैर, दरभंगा चहुंपल आदमी, कुल्हि लोकेसन दरभंगा के आसेपास के गांवन में रहे। रोज जाईं जा हमनी के, गांव के हालत एकदम खराब। पढ़ाई-लिखाई, बिजली बेवस्था से लेके रोड तक सब खराब। कहे खाति नेतवा सब काम करवईले बाड़न स बाकी मय गांव के मय गली के ऊंचाई घर सब से 2-2 फीट उपर। अब सोचीं बूनी-पानी के दिन में का होखत होई? हमनी के खुदे देखनी जा लोग खाति काल हो जात रहे, सब घर में नली के गंदा पानी 1-1 फीट जम जाए आ निकलो त जाओ कहां? गली त सब ऊंच, अब हर घर के इहे हाल बा आ दुख तनि बेसी तब लागल जब एगो 80-90 साल पुरान घर पूरा तुरात रहे कि फेर से बनी गली से ऊंचा। मने सरकार के गलती से एगो आन जमाना के मजबूत धरोहर तूरे के पड़ी।

ई भईल गांव के बात, अब जदि दरभंगा सहरो के बात करीं जा त हम इहे कहब कि ऊ सहर के हालत एकदम खराब बा। ना कवनों नियम कानून बा ना ट्रैफिक लाईट बा आ नाहिए केहू के गाड़ी चलावे के लूर बा । जेकर जईसे मन ओईसे चलावता। ओहिजा जतना आदमी ऐक्सिलिरेटर ना दबावत होई ओसे बेसी त हॉर्न दबा देबेला। रामनवमी पड़ल रहे, सुननी कि पूरा सहर में 15-20 गो झांकी निकलल बा, हमहूं राती के 8 बजे आपन कैमरा लेके निकल गईनी। एक-से-एक करामात देखनी, सर्कस लेखा करामात। सब कैमरा में ले लेनी। तनिकी आगे बढ़नी त एकदम माईक में नारा लागत रहे एक-से-एक। 2-3 जगहा त इहो सुननी, "दूध मांगोगे तो..." खैर, परसासनों के बेवस्था नीमन रहे कवनों हलचल ना भईल। एगो बात त बा, बिहार के इंजीनियर होखे भा आम जनता एकही प्रौब्लेम बा, प्लेसमेंट के पते नईखे ।

आछा, जब ओहिजा के लोकल आदमी से बातचीत होखे आ भासा प बात आवे त सई में सई आदमी कतरिया लेबे आ हरेक आदमी के हिन्दी खाति नेह-छोह देख के मय भोजपुरिया-मैथिली साहित्यकार जे जिनिगी भर हिन्दीए लिखले उहनी लो के हियरा जुड़ा जात होई। लोग बहुत अनजान बा कि कतना बड़ गलती हो रहल बा आपन माई-भाखा छोड़ि के। छोट-छोट लईकन से पूछाव कि आपन भासा काहें नईखs लो बोलत ? त कह सन कि मैडम मारे ली, खाली हिन्दी बोले खाति कहेली आ मैथिली बोलला प छड़ी से पीटापट होला । ई त खैर हमनियो कावर बा भोजपुरिया छेत्र में। अब बताईं?? शिक्षक के ई हाल बा आ ओहू में ऊ शिक्षक जेकर भासा (मैथिली) 8वीं अनुसूची में सम्मिलित बिया। मने सांचो कवनों फायदा ना उठवलस ई लो। तनि बात आगे बढ़ो त किछु लोग कहल कि अब त फिलिम सब में भी सब अंग्रेजी आ हिन्दी बोलता आ बिहार के भासा बोले वाला नौकर बनता चाहें जोकर जेकरा के सुनि के लोग हंसता। फिलिम के उदाहरन सायेद ऊ हमरा के देखि के देले होईहें। फिलिम के आम जिनिगी प निठाह परभाव पड़ेला ई बात त एकदम सही बा। फिलिम के अनुकरन लोग बोल-चाल, पहिरल-ओढ़ल से लेके खाए-पीए तक करेला। आ हमनी के एहघरी के फिलिमन में ना आपन बोल-चाल देखेनी जा ना पहिरल-ओढ़ल आ ना खाईल-पीअल। लोग कतनों आपन माई-भाखा छोड़ि के हिन्दी कावर भागतारे । लेकिन एगो बात जवन हम आपन अनुभव के आधार प कहब कि हरेक आदमी बच्चा से लेके बूढ़ तक सब केहू आपन माई-भाखा में बतियावल पसन करेला। ओकर अभिब्यक्ति के सबसे अंतिम गहिराई में हम ओकर माई-भाखा देखले बानी। आ हम ई अनुभव खाति किछु उहो लोग से बतियवनी जे हिन्दी कावर भाग रहल बा । बिस्वास करीं सई में सई आदमी के भीतर हम इहे कुंठा पवनीं। लेकिन अब सवाल ई बा जे ऊ ई काहें कईलें?

हमरा ई बुझाईल जे आपन चमकत इतिहास आ पुस्तईनी इज्जत के अभिमान में डूबल जब ऊ मुंह में पान चबात आजु आपन जगहि देखतारे त मारे लाज के आपने पान के पीक में गोता जातारे। आ कहाउत कहले बा कि "मरत का ना करत", त बस अब उहे बा कि इज्जति पावे खाति हिन्दी लागअ तारे झारे आ सोचतारे कि सब मान-सम्मान दे रहल बा । असल में ऊ मान-सम्मान भी उनकरे लेखा आदमी दे रहल बा आ सबसे बड़ बात कि दूनों जाना एक-दोसरा के सामने लंगटहीं खाड़ बा तबो सीना तनले।

एकर एकही उपाय बा कि भोजपुरी खाति सर्वांगीण सुरुआत होखो माने साहित्य से लेके सिनेमा, खान-पान से लेके पहिरावा आ बोल-चाल से लेके नाच-गान सब कावर एकही साथे पहल होखो। आ ई सबके केन्द्र नवछिटियन प होखे, छोट-छोट लईकन खाति मासिक पत्रिका, त्रैमासिक पत्रिका चाहें छमासिक पत्रिका निकलो ठेठ भोजपुरी में। हमार परयास बा आ एह लेख के माध्यम से हम रउवा सभे से आह्वान कईल चाहतानी कि रउवो आगे आईं काहेंसे कि एगो से किछु होई ना, कम-से-कम 50 गो बरियार खाम्हा चाहीं जवन डटल रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

तिरंगा

लगा चनन माटी के अब सीमा पर जाये दऽमाई
देहलू जनम त कुरबानी के करज निभाये दऽ माई

पीठ देखा के हमनी के जीए के नाहीं जानी
साहस के तलवार उठे तमउअत मांगे पानी
बड़ा पावन अवसर छाती पर गोली खाये दऽ माई

मुंडमाल हंसि हंसि के मईया तोहरे चरन चढ़ाएब
विहँस विहँस के जन लुटाएब तोहरी मान बचाएब
देके तन मन धन परान के हरखाये दऽ माई

बूने बूने खून देहिया के हउए तोहरी थाती
चाहत बानी लहू डाल के बारी दियना बाती
षीष चढ़ा के तनिक पुन्य कमाए दऽ माई

जान रही कि जाई देष के नामे लिखले बानी
धरम करम सब देष हवे पुरबज से सिखले बानी
उहे संस्कार के तनिक निभाए दऽ माई

जथी बा जेतने बा लेके तोहरे दुअरा आएब
राउर मरजादा ला माई सौ बेरिया मर जाएब
साँच आखिरी ले जय हिन्द सुनए दऽ माई

गोरख प्रसाद मस्ताना

भोजपुरी साहित्य मे स्थापित एगो बड़हन नाव डा. गोरख प्रसाद 'मस्ताना' बेतिया चम्पारण से। ईंहा के भोजपुरी भाषा आ साहित्य खाति काव्य संग्रह , खंड काव्य , लघु कथा संग्रह के कई गो किताब लिखले बानी जवना मे से कई गो लेख आ रचना के इग्नू आ कई गो विश्वविद्यालय के भोजपुरी के पाठ्यक्रम मे शामिल कईल गईल बा। भोजपुरी भाषा आ साहित्य खातिर ईँहा के सतत प्रयत्नशील बानी। एह घरी ईँहा के दिल्ली मे बानी।

औपनिवेशिक परिवेश वाला भोजपुरी अंचल, रसूल अंसारी आ कुछ कविताई

डॉ० श्रीधर मिश्र जी अपना किताब 'भोजपुरी लोकसाहित्य : सांस्कृतिक अध्ययन' में भोजपुरी के राजनीतिक परिदृश्य के चर्चा करत एकरा तीन गो मोकाम के चर्चा कईले बानी। पहिलका, 'वीर कुंवरसिंह काल' (कुंवर के लड़इया)-सन्1857-58 के समय, महात्मा गाँधी काल(गाँधी के लड़इया) - सन्1920 से 1947तक अउर नेहरु काल (नेहरु के लड़इया)-सन्1947 से अद्यतन (ओह बेरा के समय में) । एह हिसाब से रसूल मियाँ भोजपुरी के सांस्कृतिक आ राजनीतिक परिवेश में गाँधी जी के समय में गिनईहें। लेकिन स्वंतंत्रता आन्दोलन के पृष्ठभूमि में रसूल मियाँ के कृतित्व आ व्यक्तित्व के संघे-संघे कुछ और लोग के कविताई पर भी संछेप में आगे चर्चा होई।

रसूल अंसारी भा रसूल मियाँ के ओर भोजपुरिहा समाज के नजर परसिध कथाकार सुभाषचंद्र कुशवाहा जी के शोधपरक लेख से गईल। साँच कहल जाव त इ लेख संभवतः पहिलका ही लेख बाटे जउन एह लोककलाकार के व्यक्तित्व आ कृतित्व के सम्पूर्णता में हमनी के आँखिन के आगे खड़ा क दिहलस। मूल रूप से हिंदी में लिखल एह लेख में श्री कुशवाहा जी लिखले बानी कि 'भोजपुरी के शेक्सपियर नाम से चर्चित भिखारी ठाकुर, नाच या नौटंकी की जिस परंपरा के लोक कलाकार थे, उस परंपरा के पिता थे रसूल मियाँ (रसूल अंसारी)।' रसूल अंसारी के बारे में अधिक नइखे लिखल गइल। एह सन्दर्भ में जउन कुछ सुभाषचंद्र कुशवाहा जी लिखले बानी उहे फिलहाल प्रामाणिक तथ्य बा। बाद में एहि लेख के आधार बनाके डॉ। राजेन्द्र प्रसाद सिंह एगो लेख 'भिखारी ठाकुर के अग्रवर्ती कवि रसूल मियाँ' नाम से एगो लेख अपना किताब 'आधुनिक भोजपुरी के दलित कवि और काव्य' में लिखले बानी। रसूल मियाँ के जन्म भिखारी ठाकुर से चौदह-पन्दरह बरिस पहिले के अनुमान कईल गईल बा, ए हिसाब से उनकर जनम बारिस 1872 के आस पास ठहरी, काहे से कि भिखारी ठाकुर के पैदाईश के बर्ष 1887ई० रहे। रसूल मियाँ के जनम गोपालगंज जिला के जिगना मजार टोला में गुलाम भारत में भईल रहे। उनकरा पारिवारिक विरासत में नाच-गाना-बजाना आ राजनीतिक-सामाजिक विरासत में गुलामी के परिवेश मिलल रहे। गोपालगंज के दियारा क्षेत्र के अरिया निलहा बाबू लोग आपन तंत्र खड़ा कईले

डा० मुन्ना कुमार पाण्डेय

गोपालगंज बिहार के रहे वाला मुन्ना कुमार पांडे जी , भोजपुरी भाषा खास कई के भिखारी ठाकुर प बरिआर शोध कईले बानी , इँहा के रिसर्च के विषय ही भिखारी ठाकुर जी रहनी । भोजपुरी नाटक आ भिखारी ठाकुर के नाटकन प गहिराह लेख लिखले बानी । हिन्दी आ भोजपुरी मे इँहा के लगातार लिख रहल बानी । एह घरी असिटेंट प्रोफेसर के रुप मे दिल्ली मे कार्यरत बानी ।

रहल लोग। आ ओही घरी कलकत्ता में भोजपुरिया प्रवासी श्रमिक भाई लोग कमाए खातिर जाए लोग, रसूल मियाँ के अब्बा भी कलकत्ता छावनी (मार्कुस लाइन) में बावर्ची के काम करत रहले। कलकत्ता में ही रसूल अपना ओरी से गईल मजदूर लोग के बीच आपन नाच देखावस।

बहरहाल, ऊपर कहल जा चुकल बा कि श्रीधर मिसिर जी भोजपुरिया अंचल के राजनीतिक जीवन के जउन तीन गो पड़ाव के चर्चा कईले बानी ओ केटेगरी में रसूल मियाँ गाँधी जी के उभार के सबसे बरियार समय के ठहरिहे। रसूल मियाँ करत त रहले नाच बाकी दुसरका नाच के लोगन से अलगा एह ममिला में रहले कि उनकरा नाच के भीतर एगो बड़हन सामाजिक आ राजनीतिक संदेश भी रहे। कमाल के बात इ बा कि रसूल मियाँ अपना कला के संघे अंग्रेजी सरकार से खिलाफत लुका-छिपा के ना बल्कि खुलेआम सीना तान के बीच बाजार में कइले रहले। एकर बड़ उदाहरण 1945-46 के आसपास कलकत्ता के लाल बाजार में खेलल उनकर एगो नाच बा, जहवाँ उ एगो कविता गइले कि

"छोड़ द गोरकी के अब तु खुशामी बालमा।
एकर कहिया ले करबs गुलामी बालमा।
देसवा हमार बनल ई आ के रानी।
करे ले हमनीं पर ई हुक्मरानी।
एकर छोड़ द अब दीहल सलामी बालमा।
एकर कहिया ले करबs गुलामी बालमा।"

कहल जाला कि एह गीत के सुनके कई गो बिहारी सिपाही आपन नौकरी छोड़ दिहल लोग। एह कारण रसूल मियाँ के गिरफ़्तारी भी भईल। रसूल मियाँ के रचनाधर्मिता के कई गो आयाम बा। लेकिन मुख्य रूप से दु गो पर ध्यान दिहल बेसी जरुरी बा। पहिलका, जब उ अपना कलाकर्म से स्वतंत्रता आन्दोलन के बीच उभर के सामें अईले, आ दुसरका, जब उ गुलाम भारत में सामंती व्यवस्था से टकरात बाड़े। दरअसल रसूल मियाँ एक तरफ अपना देश पर काबिज बिदेसी सत्ता के खिलाफ लिख रहल बाड़े त दुसरा ओर राष्ट्रप्रेम के गीत भी गावत रहले। जवना घरी भारत-पाकिस्तान के बँटवारा के दौरान समूचा वातावरण में हिन्दू-मुस्लिम के बीच धार्मिक दुश्मनी आ दंगा के जहर फईलल रहे तवना घरी रसूल मियाँ भारत के गंगा-जमुनी संस्कृति के पैरबी करत जाति-धरम से उपर उठके एगो गीत लिखले –

"सर पर चढ़ल आज़ाद गगरिया, संभल के चलs डगरिया ना।
एक कुईंया पर दु पनिहारन, एक ही लागल डोर।
कोई खींचे हिंदुस्तान की ओर, कोई पाकिस्तान की ओर...
...हिन्दू दौड़े पुरान लेकर, मुसलमान कुरान
आपस में दुनों मिलजुल लिहो, एके रख ईमान
सब मिलजुल के मंगल गावें, भारत की दुअरिया ना।
सर पर...
कह रसूल भारतवासी से यही बात समुझाई
भारत के कोने-कोने में तिरंगा लहराई
बाँध के मिल्लत की पगड़िया ना।
सर पर...

एह बात में कवनो दु राय नईखे कि भारतीय जनता पर गाँधी जी के परभाव जादुई रहे। रसूल मियाँ भी एहि जनता में के रहलन त उ कईसे एइसे बचतें। उनकर रचना 'रचना द जमींदारी' में गाँधीजी के स्वदेशी आन्दोलन के परभाव साफ़ लउकेला। गांधीजी के परभाव में एगो गीत उ जमींदारी परथा के नसीहत देत 'आज़ादी' नामके नाटक में लिखले बाड़े।

"छोड़ द बलमुआ जमींदारी परथा।
सईंया बोअ ना कपास, हम चलाईब चरखा।"

आज़ादी के लड़ाई में भोजपुरी अंचल के बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रहे। डॉ. ग्रियर्सन के रेफरेंस देके श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह लिखले बाड़े – "भोजपुरी उस शक्तिशाली, स्फूर्तिपूर्ण और उत्साही जाति की व्यावहारिक भाषा है, जो परिस्थिति और समय के अनुकूल अपने को बनाने के लिए सदा प्रस्तुत रहती है और जिसका प्रभाव हिंदुस्तान के हर भाग पर पड़ा है... इस काम में बंगालियों ने अपनी कलम से काम लिया और भोजपुरियों ने अपनी लाठी से।" बाकी ग्रियर्सन जी के ई बात पूरा तरह से साँच नईखे। जबसे इतिहास लेखन में नया नया परविधि आईल आ कई गो ज्ञात-अज्ञात रचनाकार, कलाकार आ स्वतंत्रता आंदोलनकर्मी लोग सामने आईल लोग जेकरा बारे में आजु के जनता बेसी ना जानत रहे भा एकदमे ना जानत रहे, तब ई बात जे आज़ादी के लडाई में 'भोजपुरिया लोग खाली लाठीये से भाग लिहल' इचिको साँच नइखे बुझात। रसूल मियाँ ही ना अइसन बहुत लोग आज आँखि के सोझा बा लोग जे अंग्रेजी सरकार आ गुलामी के बिरोध कईल।

जब 15 अगस्त 1947 के सुराज मिलल त रसूल मियाँ फेनु से हिन्दू-मुस्लिम एकता के गीत गवलें-

"पंद्रह अगस्त सन् सैंतालिस के सुराज मिललs
बड़ा कठीन से ताज मिललs
सुन ल हिन्दू-मुसलमान भाई,
अपना देसवा के कर लs भलाई
तोहरे हथवा में हिन्दमाता के लाज मिललs..."

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गाँधी जी के उदय भोजपुरिया **माटिये**

से भईल रहे आ गाँधी जी के परभाव में निलहा बाबु लोग के आन्दोलन हमनी सभे के पता बा। लेकिन एह बात के कम जाने पतियाई लोग कि संभवतः उ रसूल मियाँ रहले जे गाँधी जी के हत्या जवना घरी भईल ओहि घरी कलकत्ता में नाच में एगो गीत गवले :-

"के मारल हमरा गाँधी के गोली हो, धमाधम तीन गो।
काल्हिये आज़ादी मिलल, आज चललऽ गोली।
...कहत रसूल, सूल सबका के दे के,
कहाँ गइले मोर अनार के कली हो, धमाधम तीन गो..."

रसूल अंसारी आज़ादी के आंदोलन के बैकग्राउंड में जवना तरह के गीत भा कविता लिखले आ गवले आ बीच समाज में नाच नाच के गा गाके लोग के जागृत कइले अइसन साहस भारतीय साहित्य में मिलल मुश्किल बा।

(दू) औपिनिवेशिक परिवेश वाला भोजपुर के कुछ कविताई

भोजपुर अंचल राजनीतिक रूप से बहुत जागरूक अंचल रहल बा, ओने हिंदी में भोजपुरिया भारतेंदु बाबु 'राज' के खिलाफ बहुत कुछ लिखले जैसे 'अंधाधुंध मच्यौ सब देसा, मानहुँ राजा रहत बिदेसा'। त भोजपुरी में भी कई गो साहित्यकार लोग भी औपनिवेशिक भारत में अपना रचनाधर्मिता से जनजागरूकता के क्रांतिकारी काम कईल लोग। जइसे सिवान के बाबू रघुवीर नारायण सिंह अंग्रेजी राज के खिलाफ आ अपना मातृभूमि के प्रति आपन निष्ठा आ प्रेम देखावत लिखले कि

"सुंदर सुभूमि मईया भारत के देसवा से
मोर प्राण बसे हिम खोहरे बटोहिया"

बद्रीनारायण जी रघुवीर नारायण सिंह के एह कविता पर लिखले बाड़े "पुरबिया लोक के राष्ट्रवाद के विकास की प्रक्रिया को समझने के लिए 1921 ई। रघुवीर नारायण की यह लोक कविता अत्यंत महत्वपूर्ण है...यह पूरब के राष्ट्रवाद का अखिल भारतीय भोजपुरी राष्ट्रवाद के साथ एकात्मकता का प्रतीक है," लेकिन भोजपुरिया अंचल में राष्ट्रवाद के उभार के ई अकेले उदाहरण नइखे। मनोरंजन प्रसाद जी के एगो कविता बा जहवाँ उहाँ के भारतभूमि के प्रति आपन नेह-छोह जतवले बानी। जइसे-

"सुंदर सुभूमि भारत के रहे रामा
आज इहे भईल मसान रे फिरंगिया
जेहू कुछ बाँचेला त ओकरो के लादि-लादि
ले जाला समुन्दर के पार फिरंगिया
घरे लोग भूखे मरे, गेंहुआ बिदेस जाय
कईसन बाटे जग के व्यवहार फिरंगिया।"

धेयान देबे वाला बात ई बा कि ई कबिता एहि जा नइखे रुकत बल्कि ई 'राज' के तमाम कानूनी खुरपेंच पर भी कई गो सवाल उठा रहल बा -

"सब बिधि भइल कंगाल देस तहु पर
टिकस के लगवले रे फिरंगिया
प्रेस एक्ट, आर्म्स एक्ट, इंडिया डिफेन्स एक्ट
सब मिली कइलस इ हाल रे फिरंगिया।"

भोजपुरी अंचल में औपनिवेशिक दासता आ 'राज' से मुक्ति के प्रयास कई स्तर पर चलत रहे। गोरखपुर के एगो कवि चंचरीक जी भी गारी के तर्ज पर एगो गीत लिखले –

"कि हाँ जी, जोर-जुगुति एको काम ना कइलें,
जब भइले धरम नसाय
कि हाँ जी, जान पर खेलि गईलें होक मतवाला,
पाँव आपन दिहलें अड़ाय।
कि हाँ जी, गोलिया चलवले त छतिया उघरलें,
खूब दिहले जोर से फुलाय।"

चंचरीक जी के रचना-"ग्राम-गीतांजली" दु खंड में बाटे। जवना में एक खंड राष्ट्रीय सोपान आ दुसरका खंड सामाजिक खंड के तौर पर बा। पहिलका खंड में एगो कबिता में आज़ादी के लड़ाई में शामिल अपना भतार के एगो मेहरारू चिठी लिखले बाड़ी उ बहुते मार्मिक कबिता बाटे जउन ना खाली गुलाम भारत में आजादी खातिर लड़ रहल भोजपुरिया जवान लोग के संघर्ष के कथा कह रहल बा बल्कि घर-परिवार के लोग के दशा भी व्यक्त कर रहल बा-

"जाहु जाहु जाहु पिया, देश के लड़इया हो
छोडि देहु अब कदरइया
हाँ सियाराम से बनी!
होके मरद मरदुमी अब देखलाऊ,
देसवा में होईहें लड़इया, हाँ सियाराम से बनी !
लागे सरम लाजि घर में बइठि जाहु
मरद से बनि के लुगईया हो, हाँ सियाराम से बनी!
पहिरि केसरिया सारी हम चलि जइबे हो
राखि लेबे तुम्हरी पगड़िया, हाँ सियाराम से बनी।"

भोजपुरिया माटी के सपूत केतना बीर बा लोग आ समय अइला पर दुश्मन के छाती के तिया दरका दिही लोग एह बात के संकेत श्री लक्ष्मण त्रिपाठी 'प्रवासी' जी 'वन्देमातरम' के मार्फ़त लिखनी-

“सोना चानी बाटे रामा तोरा धूरा-धूरिया में
हीरा मोती होखेला अंजोर वन्देमातरम
नाहिं हम हईं रामा बकरी-पठरुआ से
लेई भागी चोरवा सियार वन्देमातरम।
तोरे हवे सीख माता शांति उपकरवा के
मनवां में राखिले सम्हार वन्देमातरम।
बाकी केहू अँगुरी देखावे बदनेतिया से
तब हम बघवा-हुंड़ार वन्देमातरम।”

भोजपुरी समाज में राष्ट्रीय आन्दोलन के एतना गहरा असर रहे जे खाली करांति भा जेल यात्रा के कबिता कहानी भा गीत ना कहल जा रहे बल्कि बियाह शादी में भी सुराज आ राष्ट्रीय आन्दोलन के नेता लोग के जोड़ जोड़ के गीत गावल जात रहे। एगो गीत ‘सुराजी गारी’ अइसने बा जेमे गाँधी जी के दूल्हा, जवाहरलाल के सहबलिया, आ अंग्रेजी सरकार के राज के दुल्हिन बतावाला गईल बा। एतना ना परंपरानुसार ए गीतवा में बर पक्ष के तरफ से दहेज़ में सुराज (स्वराज) मांगल गईल बा।

चंपारण के किसान-सत्याग्रह आन्दोलन आ निलहा बाबुअन के अत्याचार आ आम जनता पर जुलुम हमनी से छुपल नईखे। मनोरंजन प्रसाद जी के कविता ‘फिरंगिया’ एह दौर के सबसे मशहूर कबिता में से बा।

“जहवाँ थोड़े दिन पहिले ही होत रहे

लाखो मन गल्ला और धान रे फिरंगिया

ऊँहें आज हाय रामा, माथवा पर हाथ धरि

बिलखी के रोवेला, किसान रे फिरंगिया।”

ई कुछेक उदाहरण बा जवना से औपनिवेशिक भारत में भोजपुरिया अंचल के भूमिका के एगो छोट-मोट तस्वीर खींचे के कोशिश कईल गईल बा। बाकी एक बात में कवनो शक नईखे कि स्वतंत्रता संग्राम में भोजपुरी भाषा, समाज आ साहित्य के बहुत मुखर पार्टिसिपेशन रहे। दरअसल एकर शुरुआत बाबू कुंवर सिंह आ मंगल पाण्डेय आ मातादीन भंगी के एह लडाई में कूद गईला के भी रहे जवना से इ देशव्यापी संघर्ष भोजपुरिया लोक चेतना के प्राण हो गईल। भोजपुरी भाषा साहित्य में बाबू कुंवर सिंह के लड़ाई आ व्यक्तित्व के लेके बहुत कबिताई भईल बा। स्वतंत्रता आन्दोलन में देश भर में कई गो जन-जागरण इत्यादि के कार्यक्रम आ प्रचार के असर से भोजपुर भी अछूता ना रहल। आ रहियो कइसे सकत रहे, एतना जाग्रत जमीन आ गंगा अउर पूरब के बेटा-बेटी लोग में अपना माटी के लेके जउन जुड़ाव रहल उ केहू से कम थोड़े रहे। फर्क रहे त खाली अपना-अपना रास्ता के। केहू कलम लेके निकलल, केहू गाँधी जी के रास्ता आ केहू चंद्रशेखर आज़ाद आ भगत सिंह के रास्ता। माने भागीदारी भरपूर रहे।

कुल मिलाके कहल जाओ त कविता सर्जन के छेत्र में लोक कवि राम दुलारा (जब बढ़ल कुंवर दल लछमनपुर से आगे, पथ गाँव-गाँव त्रनाई जागल अनुरागे), प्रसिद्ध नारायण सिंह (लुटा दिहल परान जे, मिटा दिहल निसान जे), शिवशरण पाठक (राम नाम भइल भोर गाँव लिलहा के भइले, चंवर दहै सब धान गोंएड़े लील बोअइले), गोस्वामी चंद्रशेखर भारती (सूली पर हँस चढ़े बहादुर, उनके सुधी बनइती हो), पं० दूधनाथ उपाध्याय (...सगरे मुलुक ललकारिके चलबि अब), मोती बी०ए० (जेलखाना में ठूसल गइलीं, बान्हल गेलीं पीटल गईलीं, माई के ना दूध लजवलीं) सरदार हरिहर सिंह (मियाँ, सिख, हिंदू, जैन, पारसी, कृस्तान मिली, लाजपत के खूनवा के बदला चुकाईं जा), रामविचार पाण्डेय (भारत हमार!भारत हमार! बंशीधुन मधुर सुनावल के?), चंद्रशेखर मिश्र (सेष परान रहा जबलें किछु, लाली रही लोहुआ कतरे में) आदि लोग एक ए बढ़कर एक कविता लिखल। जवन अपना सामयिक खांटी यथार्थ से पैदा भईल रहे। ई सब कविता आ कवि लोग कुछ उदाहरण भर बा। भोजपुरी के कविताई भा तत्कालीन साहित्यिक परिवेश राष्ट्रीय आन्दोलन के हर क्षण हर करवट पर साथे-साथे रहल-चलल बा। आ ई भागीदारी एकांगी माने खाली कलम चलावे भर के ना रहल बल्कि प्रायोगिक स्तर पर भी भोजपुरिया समाज के योगदान ऐतिहासिक रहल बा। औपिनिवेशिक दासता से मुक्ति के छटपटाहट एह लेखनी के मूल में रहे आ मातृभूमि खातिर परान न्योछावर कर देबे के सदिच्छा भोजपुरिया जनता के हिरदय में रहे।

छनुकी चर्चा: अरविंद पाठक के छनुकी प्रयोग

प्रस्तुति : शशि रंजन मिश्र

आखर के पिछला तीन अंक में छनुकी के प्रस्तुति हो रहल बा। एह छनुकी के रचयिता हयीं अरविंद पाठक जी। इंहा के प्रकृतिप्रेमी आ कवि हयीं। अब तक करीब 200 छनुकी कलमबद्ध कर चुकल बानी। एह अंक में पढ़ीं छनुकी के बारे में...

छनुकी भोजपुरी साहित्य के एगो विधा ह। भोजपुरी के छनुकी के हिन्दी में क्षणिका कहल जाला। छनुकी के उपज छन (क्षण) से भइल बा। मन में आइल एक छन खाति कवनों गहिर विचार के सुंदर शब्दन में सजाके परोसल ही छनुकी कहाला। हृदय के बात के पढ़ेवाला के हृदय में उतर जाये आ आपन धारदार अरथ से दिल दिमाग के पोर पोर झनझना देवे उहे छनुकी कहाला।

छनुकी लिखे में कवनों व्याकरण, मात्रा , व्यंजन के धेयान ना राखल जाये। हृदय के भाव ह सोझ सोझ जवन उपजल उहे कागज पे उकेराइल। अब हृदय के भाव जतने गहिर आ मर्मस्पर्शी होई, पाठक के मन पे ओतने प्रभाव छोड़ी। भाव के प्रकार में हँसी-खुशी, चिन्ता, माया-मोह, गंभीर, करूँ, दर्द जइसन रस रहेला आ एह सब रूप में छनुकी लिखल जाला।

छनुकी दू तरह के होला - तुकांत आ अतुकांत

तुकांत छनुकी माने छंदबद्ध, छोट-छोट छंद जे कभी दोहा बन जाये त कभी चौपाई-

भूखाईल भूखे ना रही
दाता के दूआर।
अनपूरना पुरईहें
करते दुलार॥
***
तिरथ जतरा
घीव शक्कर।
गुरू दरसन
अमरित छककर॥
***
जखनी
मनवा भईल
रधिका,
मिलनवा में
ना होखी
बधिका।

दोसर ओरे अतुकांत छनुकी में छंद के मर्यादा ना रहे, बस शब्द के चोट गहीर होला -

भोर के ओस
सऊंसे दिनवा के फुरती
भोरे भोरे के खीस
जनमावे करोध।
***
मउवत
आवेला त क्रूर
ना आवे त
निष्ठुर
दुनियादारी के चक्कर
समझल
बहुते कठीन।
***
फूल कहलन मलिया से
तू आजू हमरा के
बरबाद कर सकेल
पर बसंत के आवे से
संघतिया
कईसे रोक सकेल।

आखर के अगिला अंक में छनुकी के बयार बहत रही।

www.bhojpurisahityangan.com

अतुल कुमार राय

गरीब के बेटी

एही जेठ में बबीता के बियाह भइल नइहर छूटल की आँखि से लोर छूटल। डोली में चढ़ली त खेत सीवान मन परे लागल कइसे बाबूजी खाती खाना लेके खेते जाईं। उ बरमेसर रा के बगइचा में महुआ बिनल आ खो खो खेलल... उ सखी सलेहर जेकरा संगे आपन मन के बात हरेमसा बबिता करत रहली। उ भाई भौजाई जे बेटी लेखा उनका के मनले रहे। आ सबसे बड़ माई आ बाप जेकर आँखि के पुतरी रहली। इ सब छूट गइल। रोवत रोवत ससुरा अइली त इहाँ दउरा में डेग पड़ल गांव भर में हाला भइल की बड़ा सुंदर कनीया बिया। पूरा गाँव मिठाई बटाइल। खाजा टिकरी बुनिया से घर गम गम महकत रहे। मय टोला के मेहरारू बबिता के सुघर आ गुणवान कहल लो। उनका हाथ से कढ़ाई कइल परदा आ बेडशीट के डिजाइन के चर्चा मय टोला भर के लइकि कइली सा। उनकर मरद उमेस भी अइसन सुघर आ नेक कनिया पाके अपना संघी संघाती में एकर चरचा करस। सब आनंद में रहे।

दू दिन चार दिन बाद बबिता के सास आ जेठानी उनकर बक्सा खोलल लो। सब मिलल सामान के चेक कइल लो। त पनरह गो साड़ी निकलल। कुछ साड़ी पवनी के आ कुछ रिश्तेदारन के। बाकी बबिता के सास खुश ना रहली बबिता के जेठानी मुंह चमका के कहली की- "हुंह एह ले ढेर त हमरा के तीज प मिलेला। बड़ा सुंदरता आ गुण के बखान होता एकदम कंगाले के बेटी बाड़ी ई"

ना ढंग के पलंग देले बाड़न स ना तोसक तकिया ना कुर्सी मेज ना एगो रंगीन टीवी। रूप लेके केहू पूजा करी ? अरे जे आई उ समाने न देखी। मन भर सास के कान भर दिहली।

सांझी खा उमेश आ उनकर बाबूजी खाये बइठल लो त उमेश के माई कहली- अउर कवनो कंगाल ना मिलल ह बियाह करे के एकदम नाव हंसवा दिहनी। ना सुध एगो साडी मिलल बा ना सुध एगो समान। अरे सुरेस के बीयाह भइल त चार गाँव में केहू के ओतना सामान ना मिलल रहे।

उमेश के बाबूजी आ उमेश खा लेले रहे लो। उनकर बाबूजी कहलन की देखा हम सामान प बियाह नइखी कइले हम बेकत देख के बियाह कइले बानी। आ हमार पतोह लाखों में एक बिया, सामान त उमेस के नोकरी लागि त कबो किना जाइ। बाकी नीमन बेकत आ कनिया बाजार में ना मिलेला की कबो केहू कीन ली। सामान लेके आइल त बाड़ी सुरेश बो। ना केहू से बोले के लूर ना बड़ जेठ के आदर सम्मान करे के सहूर। अरे अबो से सुधर जा लो।उमेश भी माई के समझवले। जाय दे माई सामान नइखे मिलल त का ह तोर पतोह ठीक बिया न।माई त चुप हो गइली।

> **हम सामान प बियाह नइखी कइले हम बेकत देख के बियाह कइले बानी। आ हमार पतोह लाखों में एक बिया, सामान त उमेस के नोकरी लागि त कबो किना जाइ। बाकी नीमन बेकत आ कनिया बाजार में ना मिलेला की कबो केहू कीन ली !**

बाकी बबिता के जेठानी लुका के सुन लेले रहली। आ सास के आवते उनकर गोड़ दबावे चल गइली। ओह दिन उमेस के माई बड़ा आश्चर्य में रहली की सूरज केने से निकललन दादा। आज ले एक गिलास पानी ना दिहली आ एगो चार दिन के दया दिन के आवते गोड़ मिसे लगली। बाकी मने मन चुप रह गइली। गोड़ मिसत मिसत जब कुछ देर भइल त जेठानी अपना सास से कहली - ए अम्मा जवन झुमका देले बाड़े स उहो हमरा रोल-गोल के लागत बा।

अब त उमेस के माई कपार पीट लिहली। आही ए करम आतना बड़ विश्वासघात ?

उमेस के माई बबिता से पुछलि। काहो इहे नकली झुमका दिहल हलो। अरे जब पइसा ना रहे त कवन काम रहे बेटी बियहला के। ना साड़ी ढंग के ना एकहू कपड़ा।

ओह दिन राती खा बबिता खूब रोवली। उमेस उनका के अंकवारि में ध के समझवलन की जाये द हम नोएडा जाइब आ

अतुल कुमार राय

बलिया युपी के रहे वाला अतुल कुमार राय जी काशी में संगीत के साधना कर रहल बानी। भोजपुरी आ हिंदी में लिखे के एगो खास शैली ह अतुल जी के। भोजपुरी के पारम्परिक गीतन प इँहा के विवेचनात्मक ढंग से लिखाईल लेख आखर प पहिले भी पोस्ट भईल बा। भोजपुरी लोकगीत आ पारम्परिक गीतन प इँहा के लगातार लिख रहल बानी। फिलहाल बनारस मे

www.bhojpurisahityangan.com

कमाइब सब ठीक हो जाइ। हम माई आ भाभी के समझा देत बानीं। बबीता चुप हो गइली।

सबेरे बबिता के रसोई छुवावल गइल। ओह दिन पूड़ी आ रसियाव बना के बबिता सभके खियवली। उमेस के बाबूजी बड़ा खुस रहलन उमेस भी। दू दिन चार दिन में रसोई के सगरी जिम्मा बबिता नीमन से सम्भार लिहली।

चार दिन बाद उमेस नोएडा गइलन त बबिता खूब रोवली। उमेस के आँख में भी लोर रहे। उनका के समझवलन की अच्छा से रहिहा। हम दीपावली में आइब। उमेस के गइला के बाद बबिता बड़ा उदास रहे लगली। मानो केहू प्रेम के दुनिया बसा के उजाड़ देले होखो। कईसहूँ आपन मन घर के काम आ सिलाई में लगावस।

एक दिन दुपहरिया में उनकर जेठानी के लईका पिंकू पढ़ के अएलन आ बबिता से खाना मंगलन। बबिता फोन पर माई से ससुरा के हाल चाल बतावत रहली। उनकर माई जान के बड़ा खुश होत रहली की बेटी बड़ा सुख में बिया। बाकी बबिता आपन सभ बात ना बतवली।तले पिंकू रोवे लगलन। उनकर मने बबिता के जेठानी आ गइली। आ जोर देके बबिता से कहली की सुनात नइखे लइका तबे से खाना मांगत बा।

बबिता रोंवा गिरा के कहली की ए दीदी जी माई के फोन रहल ह सुन ना पवनी ह।अब त जेठानी जी के पारा गरम रहे। खाना बनावल आ रहन सहन खाती पहिले ही उनका के ताना मिलत रहे। अब बबिता के अइला से अउर इनकर माथा सनकल रहत रहे। मोका के तलास में रहली।

सास के बोला के बहुत फजीहत कइली। आपन सभ खीस निकाल दिहली। इहाँ तक कह दिहली की। पता न कवना नइहर के इयार से बतियावत रहली ह। मने भतार के जाते आपन रंग में आ गइली बड़का सत्ती सबितरि बनत बाड़ी।ओह दीन बबिता के लागल की केहू गरम लोहा क के कान में डालत बाटे।सास भी खूब बोलली। भिखमंगा के बेटी इहे कुल करबे तें। आवे दे उमेस के बाबूजी के।

साँझ खा बाबूजी अइलन उनका आवते बबिता पानी लेके गइली आ सभ बात रो रो के बता दिहली। बाबूजी कहलन की अच्छा तू ठीक से रह हम सभके समझा देब

एही तरे दिन बीतत रहे। बबिता जइसे तइसे रो गा के दिन गुजारत रहली। कबो उमेस से फोन प रोवस कबो माई से। माई समझवली की देखा सावन में छोटका बबुआ रजेस जाइ। चिंता मत करा।

एही में सावन आइल। सभ बेटी के तरे बबिता के भी उम्मीद रहे की बाबूजी आ भाई आई लो।

जब जब बूनी पड़े तब तब बबिता के नइहर के झूला मन पड़े।

राखी के दिन नियराये लागल उनकर माई फोन प कहली की रजेस जइहन। बबिता मने मन खुस रहली की भाई आई त सभके हाल चाल मालुम चली।

रक्षा बन्धन आ गइल सबेरहि से बुनी पड़े लागल। ओह दिन बबिता खीर पूड़ी बनवली रोरी चन्दन माँगा के रजेस के ई इन्तजार कइली। दस बजल बारह बजल रजेस ना अइलन। एक बजे उनका जेठानी के भाई आइल आ खूब राखी मिठाई आ कपड़ा बहिन के मोबाइल देके चल गइल।

जेठानी जी खूब उतरा के अंगना में चलस। आ ताना मार के कहस की। भिखमंगा हवन स जान बुझ के ना भेजले होइहन स की पइसा लागि। एगो हमार भाई बा। अब बबिता के ई सुनला के बाद आँख से लोर रुकबे ना करे। तीन बजे लागल राजेस ना अइलन। बबिता फोन कइली। माई कहली उनकर कि उ त सबेरहि के गइल बा। पहुँचत होइबुनी बरखा के दिन साधन ना मिलत होइ।

सांझी खा 6 बजल बबिता के रोवला के ओर ना।तले दुआर से बाबूजी अइलन की तहार भाई आइल बा हो।बबिता लोर पोछत दुआरी प गइली त देखत बाड़ी की रजेस के एगो हाथ में बैंडेज बा दोसरका हाथ में मिठाई के डिब्बा। बबिता सुन्न।

रजेस के ध के खूब रोवली। रजेस चुप करवलन कीहम ठीक बानी बहिन आवत रहनी ह त ट्रक धक्का मार दिहलस ह। जवन पइसा बाबूजी देले रहलन सब मरहम पट्टी में लॉग गइल ह।

हम बहुत रोवत रहनी की अब का होइ। तोरा के का मिठाई लेके जाई आ राखी बन्हवाइ। आवत रहनी ह रोवत त चट्टी प बाबूजी भेटा गइनी ह। उहाँ से सब बात बतवनी ह। उहाँ के भगवान बानी। हई देख मिठाई किन के देले बानी आ हई बनारसी साडी आ तोरा सास जेठानी के कपड़ा।

इ सुनल के बाद बबिता के रोवला के ठेकान ना। सुख मिश्रित दुःख के आंसू निकसे लागल। अइसन भाई आ ससुर पवला के ख़ुशी भी रहे आ भगवान से शिकायत भी की गरीब के काहें बेटी देला भगवान ?

लेखक :देवेन्द्र नाथ तिवारी

भोजपुरी लोक गीत : क्रान्ति के स्वर

मार्शल मैक्लुहॉन के एगो बहुत चर्चित थेयरी बा- 'मीडियम इज मैसेज' यानि 'माध्यम ही संदेश हऽ।'एह के आम भाषा में समझे के कोशिश कइल जाए त मतलब इ भइल कि रउआ का कहत बानी इ महत्त्वपूर्ण नइखे बाकि महत्त्वपूर्ण इ बा कि रउआ आपन बात कहे खाति कवना माध्यम के चुनाव करत बानी। संचार के एगो विद्यार्थी होखे के नाते मैक्लुहॉन के एह थ्योरी के व्याख्या भिन्न-भिन्न संदर्भन में करे के पड़ेला। एही क्रम में भारतीय स्वाधीनता संग्राम के दौरान संचार के का रणनीति रहे? एकरा के समझल जरूरी बा।

लोकगीत आपन प्रभावशीलता के चलते कवनो संदेश पहुँचावे के सबसे सरल, सस्ता, जनप्रिय पारंपरिक संचार माध्यम हऽ। भोजपुरिया संस्कृति में एह संचार माध्यम के व्यापक प्रयोग भइल बा। रउआ सभे एह बात से वाकिफ बानी कि जंग-ए-आजादी के पहिला लड़ाई यानी सन संतावन के क्रांति में भोजपुरिया क्षेत्र के योगदान ऐतिहासिक रूप से आपन मौजूदगी दर्ज करवले बा। क्रांति के तराना एह इलाका में अपना उठान पऽ रहे।

खपाखप छुरी चले, छपाछप छुरी कटे
टहकट सोनिया के धार रे
जैसे बहे नदी के धार रे
इंद्र दूर से भागिलेल, यमराज दौड़ल,
खप्पड़ लेई डाकिन-नाचे लागिन रे
झूमत कुँवर सिंह बाका रन बीच
जैसे हाथि कई कोपि सिंह डांकि फांदि बैठल रे

भोजपुरी लोक-गीतन में मँगल पांडेय, वीर कुँवर सिंह, गाँधी-सुभाष-नेहरू आ राजेंद्र प्रसाद जइसन क्रांतिकारी महापुरूषन के देशप्रेम, वीरता, बलिदान आ उनकर विचारन के यशगान खूब भइल बा।
बतौर बानगी हई लोक-गीत देखीं जहाँ मंगल पांडे के वीरता के बखान भइल बा-

जब संतावनि के रारि भइल, बीरन के पुकार भइल
बलिया के मंगल पांडे के बलिबेदी से ललकार भइल
मंगल मस्ती में चूर चलल, पहिला बागी मसहूर चलल
गोरनि का पलटनि के आगे, बलिया के बांका सूर चलल
- प्रसिद्ध नारायण सिंह

देवेन्द्र नाथ तिवारी

देवरिया, युपी के रहे वाला देवेंद्र नाथ तिवारी जी , द संडे इंडियन भोजपुरी पत्रिका के कॉपी एडिटर रहि चुकल बानी। ईंहा के स्वतंत्र पत्रकार भी बानी आ एह घरी वर्धा महाराष्ट्र मे आगे के पढाई कई रहल बानी । कई गो शोध परक लेख अलग अलग पत्रिकन मे प्रकाशित हो चुकल बा । आखर पेज से शुरु से जुड़ल बानी आ भाषा साहित्य प कई गो लेख आखर प भी लागि चुकल बा ।

कुछ देशद्रेही जयचंद लोग के भेदिया बनला, पर्याप्त तइयारी आ रणनीति ना बनावे के वजह से सन संत्तावन के क्रांति अधूरा साबित भइल-

एक तो मै आस कइनी राजा डुंमराव के
ऊ हो भाग चलले जइसे बनमां के खरहा
कुल्ही गुनलका रामा, मिटिया में मिली गइले,
नाही लेवे पवनी हम सुराज

बाकि इ क्रांति जनता के जगा के गइल, लोग अंग्रेजी दमन के सामने सीना तान के खड़ा होखे लगलें। देश में अंग्रेजन के बाँही मड़ोरे के पहिला प्रयास भोजपुरिया माटी के बाँका जवान कइलें नतीजा इ चिंगारी के रूप ले लिहलस। आ इहे चिंगारी देश के आजादी के नींव रखलस। विरोध के एह स्वर के प्रभावी अव्यक्ति 'बटोहिया', फिरंगिया, 'किसनवा' आ मितवा जइसन गीतन में भइल बा। छपरा के रहनियार मनोरंजन प्रसाद गाँधी जी के असहयोग आंदोलन के बीच 'फिरंगिया' गीत के लिखले रहलन। एह गीत के प्रभावशालीता के देखत अंग्रेजी हुकुमत एकरा के प्रतिबंधित कर दिहले रहे-

सुंदर सुघर भूमि भारत के रहे रामा,
आज उहे भइले मसान रे फिरंगिया।
अन्न धन, जन, बल, बुद्धि सब नास भइल
कौनों के ना रहल निसान रे फिरंगिया।

- मनोरंजन प्रसाद सिन्हा

अइसन नइखे के क्रांति के स्वर खाली मर्दाना लोगिन के कंठ के हार बनत रहे। भोजपुरिया बधार के नारी भी आपन कोइल जइसन मधुर कंठ से क्रांति के बिगुल बजावत रहली। का कजरी, का सोहर, का जँतसार, का झूमर लोगगीत के हर विधा में क्रांति के अभिव्यक्ति खूब भइल बा-

कोसिला के गोदिया मै राम, कन्हैया जसोदा के हो
रामा, सांवर बरन भगवान, के पिरथी के भार हरले हो
जननी के कोखिया में मोती, तिलक, लाला, देसबंधु हो
रामा, गाँधी बाबा, बल्लभ, जवाहिर तऽ देसवा के भाग

जागल हो

- चंचरिक

स्वाधीनता खाति स्वदेशी वस्तुअन के अपनावल जरूरी होखेला। एह खाति गांधी बाबा देश के आह्वान कइलें कि चरखा चलाईं। एकर व्यापक असर भइल आ भोजपुरी अंचल में भी चरखा चले लागल-

सावन भदऊआ बरसतवा के दिनवा रामा,
हरि हरि बैठी के चरखवा कतबै रे हरि।
अपने त कतबै औरो गोतिन के कतइबे रामा,
हरि हरि गांधी के हुकुमवा हम मनबै रे हरी।

-चंचरिक

एगो लोकगीत में पत्नी आपन पति से कहत बाड़ी कि चरखा से सुराज मिली। एह से आईं हमनी साथे मिल के चरखा कातल जाए-

कातबि चरखा सजन तुहु कात,
मिलिहें एही से सुरजवा।
पिया मति जाहु।
होइहै सुराज तबे सुख मिलिहें
कटि जइहें सब के कलेसवा।

भोजपुरी लोक-गीतन से संबंधित इ अध्ययन एह बात के सबूत बा कि भारतीय स्वाधीनता संग्राम आ सुराजी आंदोलन में भोजपुरिया क्षेत्र के सक्रिय भागीदारी रहल। आधुनिक संचार के साधन कम होखे आ व्यापक अशिक्षा के बाद भी गाँधी जी के प्रभाव भोजपुरी क्षेत्र के हर गाँव में रहे। गाँधी के आह्वान प सब कुछ नेछावर करे के भोजपुरिया जनता हर दम तइयार रहे। अंग्रेजी शासन के खिलाफ़ जनांदोलन से ही सुराज आई आ समाजिक-आर्थिक मुक्ति मिली।

संदर्भ-

लोकगीतों में क्रांतिकारी चेतना- विश्वामित्र उपाध्याय, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार

नील के नीलामी

अमित झा

पन्द्रह अगस्त के दिन रहे। हम भोरे भोरे नहा के कपड़ा – लत्ता पहिन के तैयार रहनी स्कुल जाये खातिर। इंतज़ार रहे कि बाबा बस अपना कोठरी में से निकलस आ हम उनकरा साथे स्कुल जाईं झंडा फ़हरावे। लइकाईं के मन झंड़ा फ़हरावे से बेसी इ बात से खुश रहे है कि आज मनभर बुनिया आ जलेबी खाये के मिली। हमार बाबा स्कुल में हेडमास्टर रहलन आ हमरा मन में इ चलत रहे कि आज एह बात के फ़ायदा तऽ हम जरूर उठाईंब। हेडमास्टर साहेब के नाव प स्कुल के चपरासी दुर्गा के डेरवा के मन भर बुनिया आ जलेबी लेब। छब्बीस जनवरी के भी अईसही ले ले रही। अभी इ सब बात मन में चलते रहे कि हमार बाबा एकदम चकाचक कुर्ता धोती में कोठरी से बहरा निकलन चकाचक कुर्ता आ धोती में नील अईसन लागल रहे कि दुनु कपड़ा के सफ़ेदी अउरी चमकत रहे।बाबा अपन हीरो – मजेस्टीक स्टार्ट कईलन आ हम उनकरा संगे बईठ के स्कुल खातिर निकल गईनी ।

स्कुल पहुंचते हम देखनी झंड़ा फ़हरावे के सब तईयारी हो गईल बा। स्कुल एकदम साफ़ – सुथरा रहे। मय मास्टर साहेब लोग एकदम झंडा फ़हरावे ला तैयार रहे , दु गो मास्टर लोग लईका सब के लाईन में खड़ा करावत रहे लोग। हमार ध्यान चपरासी दुर्गा पर रहे जे चार गो बड़-बड़ दऊरा में बुनिया ले के फ़िल्ड में एक जगह रखत रहलन। अईसन ना रहे कि खाली हमरे, लगभग मय लईकन के ध्यान ओनही रहे तवने घरी बिंदु जी माट-साहेब चिल्लईनी। “सब लोग ठीक से लाईन में खड़े हो जाओ। अब झंडा तोलन का समय हो रहा है ” सब लईकन के ध्यान झंडा ओरी गईल। हमार बाबा चुकि हेडमास्टर रहलन झंडा फ़हरावे के जिम्मेदारी उनकरे रहे बाबा तैरतानाथ माट-साहेब ओरि देखलन जे रेडियो पर कुछ सुनत रहलन। उ रेडियो बंद कई के कहलन “दिल्ली में झंडा-तोलन हो गया ” ।सब लईकन के सावधान कईल गईल बाबा झंडा फ़हरवलन। राष्ट्र गान भईल। ओकरा बाद स्कुल के सारा लईकन के पारा – पारी बुनिया अ जलेबी बटाईल। इ बात अलग रहे कि हम हर दोसरका लाईन में जा के जबरदस्ती खड़ा हो के , हीक भर बुनिया खईनी ,आ जब दू बेर के बाद चपरासी दुर्गा हमरा ओरी देखलन तऽ उनकरा कहे से पहिले कहनी हम बाबा से कह देम कि दुर्गा हमरा के बुनिया नईखन देत आ अपना घर ला भर गमछा पहिलही बांध लेले बाड़न ।

दुर्गा चुपचाप हमरा के भर अजुरी बुनिया दे देहलन । पेट भर गईल रहे। बाकि मन ना भरल रहे तभीये बाबा हमार नाम ले के अवाज लगईलन उनकर हीरो मजेस्टीक तईयार रहे हम पीछे बईठ गईनी बाबा हमरा के ले के घरे पहुंचलन जईसही हमनी दुआर पर उतरनी हमार दादी मां हमरा से पुछली। बुनिया खईलऽ ह नु ?

ये से पहिले हम कुछो कहती बाबा कहलन, हमरा नाव से दुर्गा के डरवा – डरवा के मनभर खईलन ह।हम सकपका गईनी बाकी दादीमां खुश रहली। अभी दादी कुछ कहती कि हमार परबाबा के भारी अवाज आईल “ का हो रहल बा झंडा फ़हराईल हो गईल ? चुकि उ हमार परबाबा रहलन हम उनका के बड़का बाबा कहीं , हम फ़टाके से कहनी हं बड़का बाबा। झंडा फ़हराईल हो गईल आ हम खूब बुनियो खईनी हं। उ तनी सा मुस्कईलन आ हमरा बाबा मने अपना बेटा ओरी देख के कहलन- झंडा फ़हरा अईलऽ ? बाबा खाली हामी में मुडी हिलवलन फ़ेर बड़का बाबा तनी तन के कहलन इ नील में डूबा के कपड़ा पहिनला के का ज़रूरत रहे ? मालूम बा नू ई नील के नाम के अभीयो खून खऊल जाला ? बाबा कुछ ना बोललन आ चुपचाप भीतरी चल गईलन। दादीमां भी भीतरी चल गईली लेकिन बड़का बाबा के लाल आंख देख के हम डेरा गईनी।

बड़का बाबा , उमिर से सौ पार कई चुकल रहलन। लेकिन आज ले ना उनकर आंख खराब रहे ना कवनो दांत टुटल रहे रोबदार आवाज में भी कवनो कमी ना रहे लेकिन हमरा अभी ले ना बुझाईल रहे कि बाबा के कपड़ा में नील लगला से बड़का बाबा काहे खिसिया गईल रहलन। बड़का बाबा अपना कोठरी ओरी लवटे लगलन तऽ हम उनकरा संगे हो लेहनी। उनकरा संगे जब हम उनका कोठरी में पहुंचनी तऽ उ हमरा के अंडा के पियरका लड्डू खिअवलन ।उनका रोज एगो देसी अंडा खाये के आदत रहे लेकिन उ कबो पियरका लड्डू ना खास। उ हमनी लईका सब ला हमेसा रख लेस। ।अपना दिनचर्या के उ एतना पक्का रहलन कि हमरा इयाद बा ,बड़का बाबा से पहिले हमार बाबा एगो एक्सीडेंट के कारण गुजर गईलन। सामाजिक रीति के हिसाब से छुतका पर गईल रहे लेकिन उ अपना दिनचर्या के हिसाब से अंडा खात रहलन ,आ पियरका हमरा के दे देत रहलन जे ला हमार जम के पिटाई भईल, दु चार लोग बड़का बाबा के सुनावे गईल बेटा मर गईल छुतका परल बा आ रऊआ अंडा खा रहल बानी ? उ ओही रोब में कहलन "उ बेटा हमार रहे, हमरा से बेसी तोहनी के दुख बा का लेकिन जाय वाला तऽ चल गईल। अब ओह कारण हमहुं मर जाईं ?" आज समझ में आवेला अईसन संकल्पी आदमी ही देस ला लड सकत रहे। खैर हम बड़का बाबा से पुछनी - बाबा ,नील

www.bhojpurisahityangan.com

तऽ कपड़ा के चमकावेला फ़ेर रऊआ, बाबा पर काहे खिसिअईनी हं ? बड़का बाबा अबकी खिसिअईलन ना बड़ा शांति से कहलन - परपोता, नील के नाम सुनते पारा गरम हो जाला। चाहे उ कवनो रूप में होखे। फ़ेर उ जे कहानी सुनवलन हमरा आज ले इयाद बा। नील के खेती ला हमनी कोड़ा खईले बानी जा। अंग्रेजन से बिद्रोह कईले बानी जा।जब देस गुलाम रहे नील के खेती ला सबसे मुलायम खेत तैयार करे के पड़े अग्रेजन के सिपाही घोडा से खेत में आवऽसन। आ घोड़ा प बईठले बईठल डंटा से खेत के ढ़ेला पर एक डंटा मारऽ सन अगर ढ़ेला फ़ूट जाये मतलब खेत तईयार बा।आ जवना खेत के ढेला ना फ़ुटे ओह खेत के मालिक के कोड़ा से खाल खिचा जाउ। अंगेरजन के इ अत्याचार दिन पर दिन बढ़त जात रहे लेकिन बिरोध करे के हिम्मत केकरो में ना होखे। नील बनावे वाला फ़ैक्ट्री खुल गईल रहे। जेतना ज्यादा हो सके अंगेरजन के ओर से नील के खेती करावल जात रहे। फ़ेर उ खेती के व्यवसाय बिहार के संगे संगे उत्तर – प्रदेश में भी फ़ईल गईल रहे। फ़ेर कुछ दिन बाद अग्रेजन के वैज्ञानिक खेत में आवे लगलन सन जवनन से इ बात के पता चलल कि अगर इ खेती अईसही लगातार होत रहल तऽ खेत कुछ साल में बंजर हो जइहन स। हमनी के जीये के आसरा बस खेत रहे अब ओह खेत प दोसरा के कब्जा ! बरदास्त से बेसी हो गईल। बाकि जे भी तनी – मनी बिरोध करे के कोसिस कईलक ओकर, अंगरेजवा सब उ हाल कईलन सन कि बाकि लोग के हिम्मत टुटे लागल। लेकिन तबले देस में और जगह से भी और सब बात ला अंगरेजन के बिरोध होखे लागल रहे। येही बीच एक दिन परबाबा के सबसे छोट भाई अपना खेत पर गईल रहलन , आ ओही दिन एगो अंग्रेज सिपाही खेत प आ गईल। खेत अभी तईयार ना रहे। ये बात के ले के उनकरा उपर कोड़ा बरसावे लागल बाकि उ बर्दाश्त ना कईलन। सिपाही के घोड़ा से घींच के खेत में पटक देहलन आ कुदारी के दु छेव में ओकर काम तमाम कई देहलन। एह बात के बाद पूरा इलाका में मामला गरमा गईल।छोटका बाबा के अंगेजन से छुप छुप के केतना दिन तक रहे के परल। तबले और भी कई जगह से नील के खेती के ले के बिरोध शुरू हो गईल रहे। इ बिरोध प गांधी जी के नज़र परल आ उ सत्याग्रह ला चम्पारण आवे के फ़ैसला कईलन। येही बीच कई जगह से नील के उपज तैयार रहे कई जगह नील बनावे वाला फ़ैक्ट्री भी खुल चुकल रहे येही कारण जहां बेसी उपज होखे उहां नील के नीलामी कईल जाय , आ उहां इ सब अंगरेजन के देख – रेख में होखे लेकिन गांधी जी चम्पारण आ के सत्याग्रह शुरू कईला के कारण , इ नीलामी के भरपूर बिरोध भईल। केतना लोग जेल गईल। केतना लोग मारल गईल आ अंत में अंगरेजन के एह निलामी पर रोक लगावे के पड़ल। ओकरा बाद कई साल के लड़ाई के बाद देस के आजादी मिलल। बड़का बाबा कहलन कि एही से जब हम नील के नाम भी सुनेनी त खून खौल जाला।

ओ समय तऽ हम बड़का बाबा के बात कहानी लेखा सुन लेनी लेकिन आज सोचेनी तऽ लागेला कि अईसन ना जाने केतना स्वतंत्रता सेनानी के लड़ाई के बाद देस के आजादी मिलल होई , जेकर कवनो किस्सा कहीं लिखाईल नईखे। बाकी सेनानी तऽ सेनानी होला कहानी के मोहताज़ ना। आज अचानक अपना भाई के बेटा के तईयारी देखनी ह उ गिनती गीन रहल बा कि कब पन्द्रह अगस्त आई। हम ओकरा से पुछनी का बात बा , पन्द्रह अगस्त ला कुछ अलग से तईयारी कईले बाड़ऽ का तऽ उ फ़टाक से कहलक हं चाचा ! ओह दिन मन भर बुनिया जलेबी मिली। दरअसल आज हमार चाचा स्कुल में हेडमास्टर बाड़न , आ उनकर पोता स्कुल जाये के तैयारी में बा। आज इ सब देख के एगो हमर अपन लिखल कविता भी मन पर रहल बाऽ -

अब लइकाईं के बात इयाद मत करावऽ
बुनिया के दुनिया अभियो गोल बा
जिनगी जिलेबी लेखा घनचक्कर हो गईल बाऽ
अब तिरंगा दू रूपया में।
रोड पर थोक के भाव बिक गईल बाऽ

का रहे उ दिन में।
जाड़ के दिन होखे चाहे गरमी
ईनार के पानी से हर – हर गंगे
केहु पूरा कपड़ा में केहु अधे नंगे
बस झंडा फ़हराईल
फ़ुल हवा में येने-ओने लहराईल-छितराईल
गप से दु मुट्ठी बुनिया
आ चार गो जिलेबी हाथ में आईल
लइका बंदे मातरम , भारत माता की जय चिल्लाईल

तबो बुनिया के दुनिया गोल रहे अभियो गोल बा
बस जिनगी जिलेबी लेखा घनचक्कर हो गईल बाऽ
अब तिरंगा दू रूपया में।
रोड पर थोक के भाव बिक गईल बाऽ

कहे के त अब
झंडा के मान बढ़ गईल बाऽ
सनिमा से पहिले जन-गण-मन के राग
कार, बस, आफ़िस हर बगीचा-बाग।
अब झंडा फ़हराता।
इंडिया से बेसी चाईनीज तिरंगा बीकाता
शवख से जिलेबी दही संगे खाईल जाता
उपर से बढ़ – बढ़ भाषण , महंगा रासन
देह के चर्बी कम करेला तरह -तरह के आसनमठ से बेसी

www.bhojpurisahityangan.com

जोगी हर घर में रोगी।

कवनो फ़रक नईखे
तबो बुनिया के दुनिया गोल रहे अभियो गोल बा
बस जिनगी जिलेबी लेखा घनचक्कर हो गईल बाऽ
अब तिरंगा दू रूपया में।
रोड पर थोक के भाव बिक गईल बाऽ

माई खर-जिउतिया करे चाहे छठ के पारन।
सैनिक तबो शहीद होखस।
अभीयो होखऽ तारन
उल्टा घर में द्रोही हो गईल बाऽ
नक्सल , माओवादी , उल्फ़ा के भेस में
जाने केतना बिद्रोही हो गईल बाऽ
अब मुट्ठी भींचला पर बुनिया के रस ना।
आपन लोगन के खुन चुअऽ ता।
लोग हर छन डर के जियता।
सबके पता बाऽ देस डुबत जा रहल बाऽ
बाकि कहे ला बदलाव के हवा आ रहल बाऽ
का फ़रक पडत बाऽ
तबो बुनिया के दुनिया गोल रहे अभियो गोल बा
बस जिनगी जिलेबी लेखा घनचक्कर हो गईल बाऽ
अब तिरंगा दू रूपया में।
रोड पर थोक के भाव बिक गईल बाऽ ।

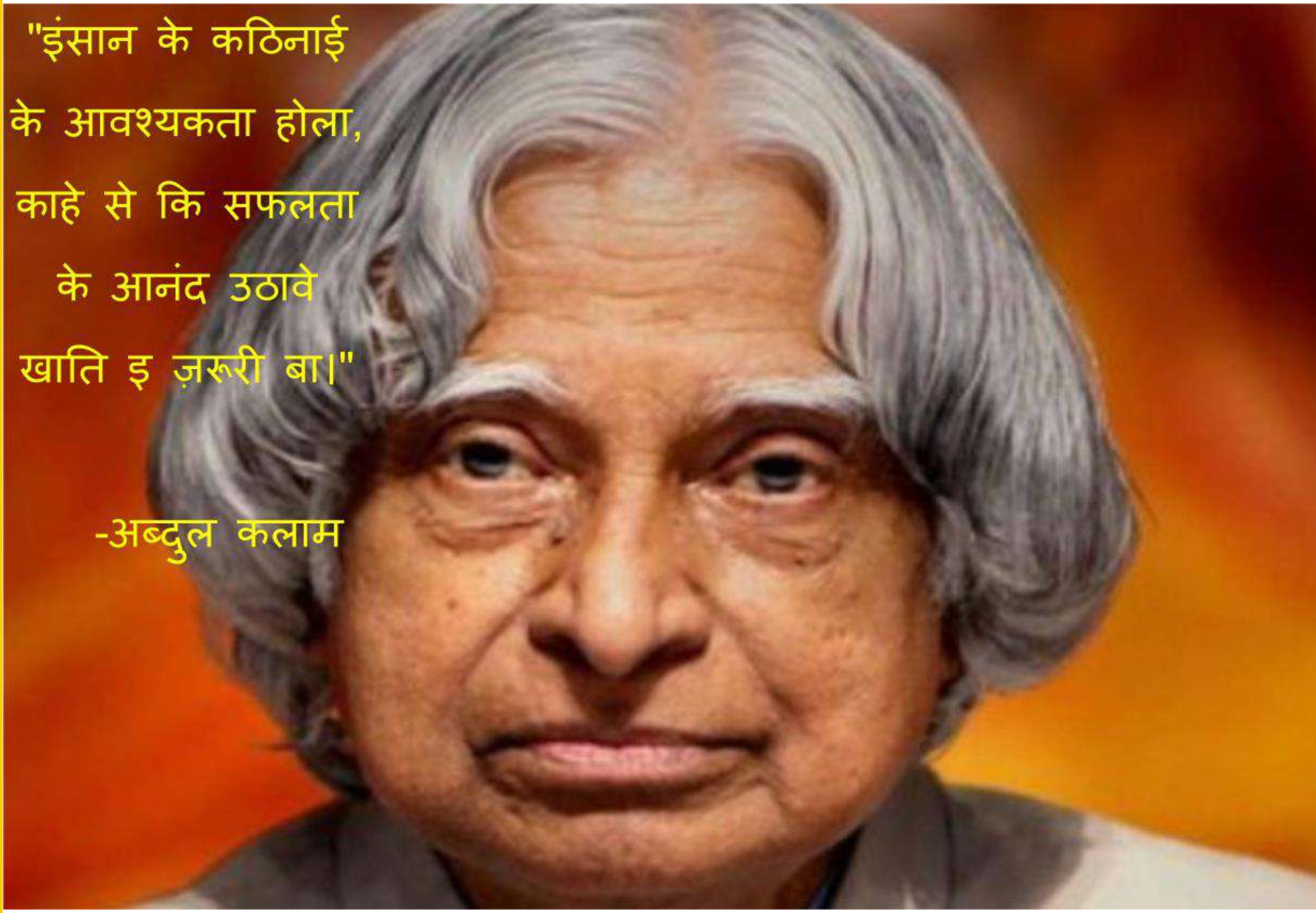

बृज किशोर तिवारी

चित्र - स्वयंबरा बक्सी

दिल, जब बच्चा था जी (भाग –7)

बात बचपन के ह। हमरा साथे के कुल लईका गंगा जी नहाए जासs, उंहवे गंगा जी के किनारे अखाड़ा रहे। ओही अखाड़ा में सब पहलवानी कर सन। देखा देखि हमरो मन कइल कि हमहूं पहलवानी करीं।

हमहूं अखाड़ा में उतर के कुश्ती लड़े लगनी। खाईल पियल देह, दम ख़म त रहबे कईल। लगभग साथे के कुल्ही लईकन के पटक दीं।

अखाड़ा पर जाए वाला कुल्ही लईका ,पहिले कसरत कर सन। पता ना काहे हमरा के कसरत करे में मन ना लागत रहे। सीधे अखाड़ा में जाके कुश्ती लड़े लागीं।

ओही अखाड़ा पर एगो पहलवान रहना। नाम रहे बच्चन यादव लेकिन उहाँ कहास "बच्चा जादो" ।उनका के बड़ा ख़राब लागे हमार बिना लंगोटा के अखाड़ा में कूदल आ सीधे सीधे अखाड़ा में उतरल। उ कहस कि पहिले लंगोटा पहिर के आवs ,रियाज मारs ,फेरु अखाडा में उतरs। आ, इ हमरा से होए ना। हमरा लगे लंगोटा रहे ना आ एतना हिम्मत ना रहे कि बाबू जी से कही कि लंगोटा लिया दीं हम कुश्ती लड़ेनी ।बाबूजी पहिलही हमार कचूमर निकाल दिहती, इ कुल्ही कहला पर।

दिक्कत इ रहे कि जब हम कुश्ती लड़ी ओही घरी "जादो जी" हमार रबड़ वाला चड्ढी खीच देस। हेने हम आपन चड्ढी सम्हारी तले हमरा के कुल पटक दs सन। अब हम आपन इज्जत बचाई कि कुस्ती बचाई बड़ा दुविधा रहे।

"जादो जी" के एगो औरी आदत रहे - कुलही लईकन से आपन देह में पियरका माटी रगरवावस। नहाए घरी भी आपन देह के माटी रगरवा के छोड़वावस आ फेरु गंगा जी में नहाए घरी आपन कपडवो साफ़ करवावस।

इहो कुल हम करत ना रही ,एह से हर बार उ हमार कुश्ती बिगाड़ देस।

धीरे धीरे हमरा इ बुझा गईल कि हम पहलवान ना बन पाईब। मने मन कहनी ठीक बा पहलवानी तs छोड़ देब हम ,लेकिन "जादो जी" के समझ में आ जाई कि केहू से पाला पड़ल रहे। हमहू उनका के माटी रगरल चालु कई दिहनी आ देही के माटी छोड़ावल भी।

एक दिन का भईल कि कुलही लईका पहिलही चल गईलन सन खाली हम बाँच गईनी। ओह दिन हमरा के उनका के देह में माटी भी लगावे के पड़ल आ गंगा जी में कुल देह के माटी भी छोड़ावे के पड़ल।

देह के सब माटी छोड़ववला के बाद "जादो जी" गंगा जी में उतर के कहनी कि हई हमार गमछवो भी साफ़ कर दs ।

उनकर गमछा साफ कई के पसार दिहनी। फेरु आ के उनका से कहनी- "जादो जी" आपन लंगोटवो दी तs,ओहू के साफ़ कर दीं। गंगा जी में पानी तs रहबे कईल। "जादो जी" के छाती तक पानी रहे। "जादो जी" दन से पनिये में लंगोटा खोल के हमरा ओरी फेक दिहनी, कहनी कि ल हई साफ़ कर दs आ हउ गमछवा दे दs हमरा के।

अब का मन में आईल - अब मत चुकिहा चौहानहम अभी ले नहईले ना रही ।जादो जी पानी में , एकहू कपड़ा ना उनकर देहि पs। कहनी अब आज घरही जा के नहायिब।

घाट पर काम चलाऊ भीड़ रहे। आपन कपड़ा लिहनी आ उनकर कुलही कपड़ा ले के भीड़ के बीच में लुकात-लुकात, ओहिजा से चलनी पराय। आ घाट ले उपरे जा के अखाड़ा में ले जाके उनकर कुलही कपड़वा फेक के चल दिहनी घरे।

अब “जादो जी” गंगा जी में कबले रही , कईसे बहरी अयिनी इ हमरा के आज ले पता ना लाग पायिल। बाकी हमहू ओह दिन के बाद, फेरु अखाड़ा के मुह ना देख पईनी।

ओकर दुस-परिणाम इ बा कि एशियाड आ ओलम्पिक में कई गो “स्वर्ण पदक” से भारत बंचित रह जात बा।

www.bhojpurisahityangan.com

सपना : हकीकत से अनजान (भाग -2)

जलज कुमार अनुपम

कहानी अब ले -
पिछला भाग में हमनी के देखनी सन की कइसे अपना पी एच डी ल गोपाल बाबू चंपारण के एगो गाव में अईले आ उनकर मुलाकात रमन जी से भईल ,रमन जी उनका के गाव के आबो हवा से परिचय करवले आज के गाँव के मौजूदा स्वरुप के वर्णन उ कईले , गाँव में सरकारी योजना के हाल ,आज के युवापीढ़ी के गाँव के प्रति सोच ,शहरीकरण के गाँव के जान जीवन पर असर आ अभी के वर्तमान गाव भी हमनी के देखे के मिलल ,गाँव में लोगन के दशा से भी हमनी के अवगत भयिनी जा **अब ओहिजा से आगे...**

पंचायत से वापस त हम आ गईनी , मने साच कही त पंचयित में भीं हमरा दिमाग के कवनो न कवनो कोना में गोपाल बाबू घूमत रहले . एक तरह से कही त गोपाल बाबू अइसन तार छू देले रहले जवन बहुत कुछ सोचे पर मजबूर करत रहे । भारत के आजादी मिलला आज ६५ साल हो गईल ,हर बार के चुनाव त विकाश के नाम पर ही लड़ल जाला लेकिन का साचो में विकास होला .... ना, ना होला, होइत त इहे हाल थोड़े रहित ,आज गाँव के ई दुर्दशा ना भईल रहित ,अगर गाँव के विकाश भईल रहित त गाँव के लईका शहर काहे जाइत अंजान सपना लेके ..? आखिर काहे उ अपना घर परिवार ,माई - बाबू से दूर रहित ? ना ना जी केहु शौक से ना चाहेला की हम गाँव छोड़ के जाइ ,मज़बूरी जे ना करावे ।

भोजन करे करे के समय हो गईल रहे ,पंचायत में से ऐसेही तेनी हम देर से ही आईल रहनी ,मन के समझावत बुझावत हम आगे बढ़नी खाए ला । रात जैसे तैसे बितल मन त गोपाल बाबू में ही लागल रहे की कब किरण उगी आ गोपाल बाबू अईहे मने अजीब उत्सुकता रहे . बिहान त निश्चित बा हम रही ना रही

देखे ला लेकिन बिहान त होई ई शाश्वत बा ,चिर काल के चलल आवत बा अउरी अनंत ले चली ,खैर मुर्गा आपन धुन छेड़लक भईल बिहान ,सब केहु उठ सूत से करे लागल आपन काम । नास्ता करिके जइसही आपन कदम हम बढवनी घोठा पर जाय ला तेले गोपाल बाबु पर नजर पड़ल गोड़ उहे रुक गइल ,ह्म उनकर इन्तेजार करे लगनी । गोपाल बाबु पहुचले , नमस्कार रमन जी ,नमस्कार ,नमस्कार गोपाल बाबु का हाल चाल बाटे अउरी सब बताइ रात कइसन गुजरल अउरी नास्ता पानी भइल बा किना अभी ले राउर ?

सब ठीक ठाक रहे , नास्ता भी अभी कर के ही चलनी ह ,आपन सुनाइ राउर का हाल बाटे ? चली पहिले घोठा पर चलल जाव तब हम बतायेम आपन हाल चाल । फिर हमनी के दुनु आदमी घोठा के तरफ बढ गइनी सन ।

हम घोठा पर पहुंच के खटिया गिरवनी आ कहनी की यह पर काम चल जाई की कुर्सी लगायी ,ना ना कुर्सिया ले, ई निमन बा गोपाल बाबू के मुह से हमरा ई बतिया सुन के निक लागल . तब अउरी बताई रमन जी काल्हु के पंचाईत कइसन रहल । जी ठीके रहल ,का कहले बानी गाँव के पंचाईत के अब जानते बानी जहा दू चार गो बर्तन रखल रहेला उहा से आवाज अईबे करेला एकरा के केहु नइखे रोक सकत ।

अछा रमन जी एगो बात बताई रउरा नजर में अगर पुछल जाव की शहरीकरण से सबसे जादा नुकसान गाँव के चाहे लोगन के का भईल त अपने का कहेम ,गोपाल बाबू एहपर त अगर हम बोले लागी त रात हो जाई लेकिन बात खत्म ना होई , लेकिन फिर भी जवन मोट-मोट बात बा ओहमे हमरा नजर में सबसे पहिलका बा की शहरीकरण भईला के आदमी के संस्कार धीरे धीरे खत्म होत जात बाटे ,लोग आधुनिकता के चक्कर में अपना अंदर कड़वाहट के घोल घोर लेले बा ,विनम्रता गायब बा ,मीठ मीठ बोली अच्छा विचार त कही लउकते नइखे.एगो समय रहे की लोग दोसरे में जियत मुअत रहे ,आज केहु के केहु

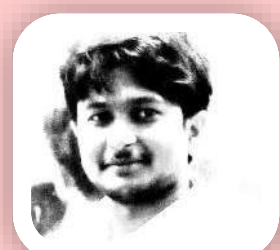

जलज कुमार अनुपम

बेतिया, बिहार के रहे वाला जलज जी भोजपुरी में लगातार लिख रहल बानी आ आखर के पेज पे भी इंहा के कविता-कहानी प्रकाशित होत रहेला। फिलहाल जलज जी दिल्ली रह रहल बानी।

www.bhojpurisahityangan.com

से कवनो मतलब नइखे रह गइल की के जियत बा की के मुए के कगरी पर पहुंच गईल बा . लोग धीरे धीरे विचार से कमजोर होत जा रहल बा , सब केहु के अब अपना से मतलब बा हित - परित के माने अब गायब बा लोगन के बीच से इंसान आपन घर बनावे के चक्कर में केतना निरीह जानवरन सन के घर उजाड़ देहलक ,अपना वर्तमान के सुरक्षित करे ला गाछ बृछ के काट कूट के खत्म कर देहलक ,जवना के असर आवे वालन पीढ़ी के उपर पड़ी . अछा रमन जी काल्हु जहा हम रुकल रहनी उँहा बातचीत चलत रहे की यह गाँव के ढेर लोग विदेश रहेला ,हमरा कहें के ई की एतना लोगन के विदेश जाये के पीछे के कारन का बा ,भारत में रोजगार के कमी बा का आ ओहसे का फरक पड़ल बा जन जीवन पर ?

बात ओइसन नइखे हमनी किहा एगो कहावत कहल जाला की दोसरा के मांग में सेनुर देख के आपन कपार ना फोड़ेके चाही ,लेकिन इहवा उल्टा हाल बा अगर फलनवा के बेटा विदेश चली गईले त हम कहें ना जायेम , बस बात बात में देखा देखि उ दू काठा बिकाईल आ विदेश भेजे वाला दलाल के पकड़ल गईल आ लईका सीधे विदेश ,लेकिन ओहसे जन जन में खासा कवनो बदलाव ना आयिल बल्कि अउरी हालत ख़राब हो गईल काहें की जवन परिवार पहिले पांच हज़ार में चल जात रल अब उ दसो हज़ार में नइखे चलत ,बबुआ जेतना काट छाट के विदेश में अपना घर परिवार से दूर बचावत बाड़े ओतना उनको भरतो में मेहनत करते त मिल जाइत लेकिन ई सपना जवन ना करवाये ,बिना हकीकत जनले सुनले लोग दउड़त बा।

गोपाल बाबू हमरा त लागेला की खाली ई इहवे ले नइखे आज कल हर केहु बस एक सूर से भागत बा दउड़त बा बिना कवनो लक्ष्य के बिना कवनो मंजिल के अनजान रास्ता पर ,अनजान सपना के पीछे ,सबसे मजेदार बात त ई बा की लोग मुहकुरिया गिरला के बादो नइखे मानत फेरु उठ के दौरे लागत बा। जी रउरा ई बात से त हमहू पूर्णतः सहमत बानी की आजकल लोग बिना मतलब के भी बहुत परेशान रहत बा। अच्छा हमरा के तेनी ई बताई की जैसे भारत कृषि प्रधान देश ह, आये दिन भारत सरकार चाहे राज्य सरकार भी तरह तरह के कृषि के विकास ला नया नया घोसणा करत रहे ले बाकि ओकर गाँव में केतना असर बा रउरा हिसाब से ?

देखी हम त खुद कृषि से सम्बंधित व्यसाय उर्वरक से जुड़ल बानी आ हमरा जहा ले बुझाला की चाहे उ राज्य सरकार होखो जाहे उ केंद्र सरकार होखो आज के दिन में भी कवनो विभाग पूर्णतः पारदर्शी नइखे ,अउरी जब ले ई पूर्णतः पारदर्शी ना होई तब ले धरातल पर ई उमीद कईल की सब ठीक बा चाहे सब ठीक हो जाई असंभव बा।

हमरा त अइसन लागेला की कही ना कही आज भी जवन विकास बा नु तवन किसान के कर्ज के नीचे दबा के कराह रहल बा लेकिन ओकर कराह सुने वाला केहु नइखे।

एहमे शहरीकरण के भी एगो बड़का योगदान बा आजकल विकास के नाम पर किसान के भूमि हथियावे के भी एगो फैसन चलल बा।

अभी हालही में एगो रिपोर्ट आयिल रहल, जेमे कहल गईल रहलS की सामाजिक-आर्थिक जनगणना के आंकडा के मुताबिक देश के कुल 24.39 करोड़ घर में से 17.91 करोड़ ग्रामीण घर बा। यानी शहरीकरण के तेज रफ्तार के बावजूद अभी भी देश के लगभग तीन चौथाई आबादी आज भी गांव-कस्बा में रहेला। एहमे भी करीब आधा आबादी, यानी 48.52 फीसदी घर कवनो न कवनो तरह के अभाव से जूझ रहल बा।

गांव में हर तीसरा परिवार भूमिहीन बा अउरी जीवन यापन ला शारीरिक श्रम पर निर्भर बा। 2.37 करोड़ परिवार त खाली एगो कमरा के कच्चा घर में रहेला, उहवें 51.14 फीसदी परिवार दिहाड़ी मजदूरी पर निर्भर बा। खेती पर निर्भर परिवार के तादाद 30.10 फीसदी बा।14.01 प्रतिशत परिवार अन्य स्रोतों पर निर्भर बा।एकरा अलावा चार फीसदी से भी ज्यादा परिवार कचरा बीने, भीख मांगे अउरी दान पर निर्भर बा। अछा रमन जी एगो बात बताई रउरा समझ से एकर उपाय का बा ?

हमरा त लागेला की जले केंद्र सरकार चाहे राज्य सरकार गाँव में स्वरोजगार के बढ़ावा पर ध्यान न दी तले कवनो मौलिक परिवर्तन नइखे आवे वाला। हमनी के सब केहु के आपन आपन दायित्व के समझे के पड़ी आ ओकरा के निर्वहन के भी प्रयास करे के पड़ी काहे की खाली सरकार के भी भरोसे रहला पर कुछु ना होई ,सब केहु के आपन भी एगो प्रत्यक्ष भूमिका निभावे के पड़ी काहे की भूमण्डलीकरण के चक्कर में अगर कही गाँव के स्थिति ना सुधरी त एहकर असर हिंदुस्तान के ऊपर भी लउकी। सब केहु १५ अगस्त के झंडा फहरावेला ओतने ले देशभक्ति ना होला ,असली देशभक्ति त उ बा की अपना समाज ला कुछ अच्छा करे के ठानी, गाँव के तरफ लौटी आ गाव ला कुछ करी।

बात त अपने एकदम सही कहनी हम भी एहसे सहमत बानी , गोपाल बाबू के मुह से ई बात सुन के हमरा संतुष्टि मिलल।

www.bhojpurisahityangan.com

गोपाल बाबू चाय लिहल जाई ,चाय मंगावत बानी ,ना ना रमन जी हम कुछु ना लेहम उ त अपने अपने से मिले के रहल ह एहसे अयिनी ह ,हमरा आजे निकले के बाटे इहवा से ,अपने से बात कइके मिल के हमके बहुत अच्छा लागल हम गाँव के स्थिति से रूबरू भयिनी यह खातिर बहुत बहुत धन्यवाद अपने के।

अइसे काहे कहत बानी हमरा भी रउरा से मिल के बहुत ख़ुशी भईल देश के भविष्य ओकरा नौजवान पर ही निर्भर करेला ,रउरा सभान आगे चल के बहुत कुछ कर सकत बानी जा एह समाज ला , एक आदमी काफी होला परिवर्तन के बीज बोवेला।

ठीक बाटे त रमन बाबू हमरा के अब आज्ञा देहल जव हम विदा लेम ,गोपाल सर हम आज्ञा त नइखी दे सकत बाकि ह एगो सुखद वादा के साथ की भविष्य में हमनी के दोबारा मुलाकात होई हम विदा जरूर कर सकत बानी। ठीक बा नमस्कार ,नमस्कार नमस्कार।

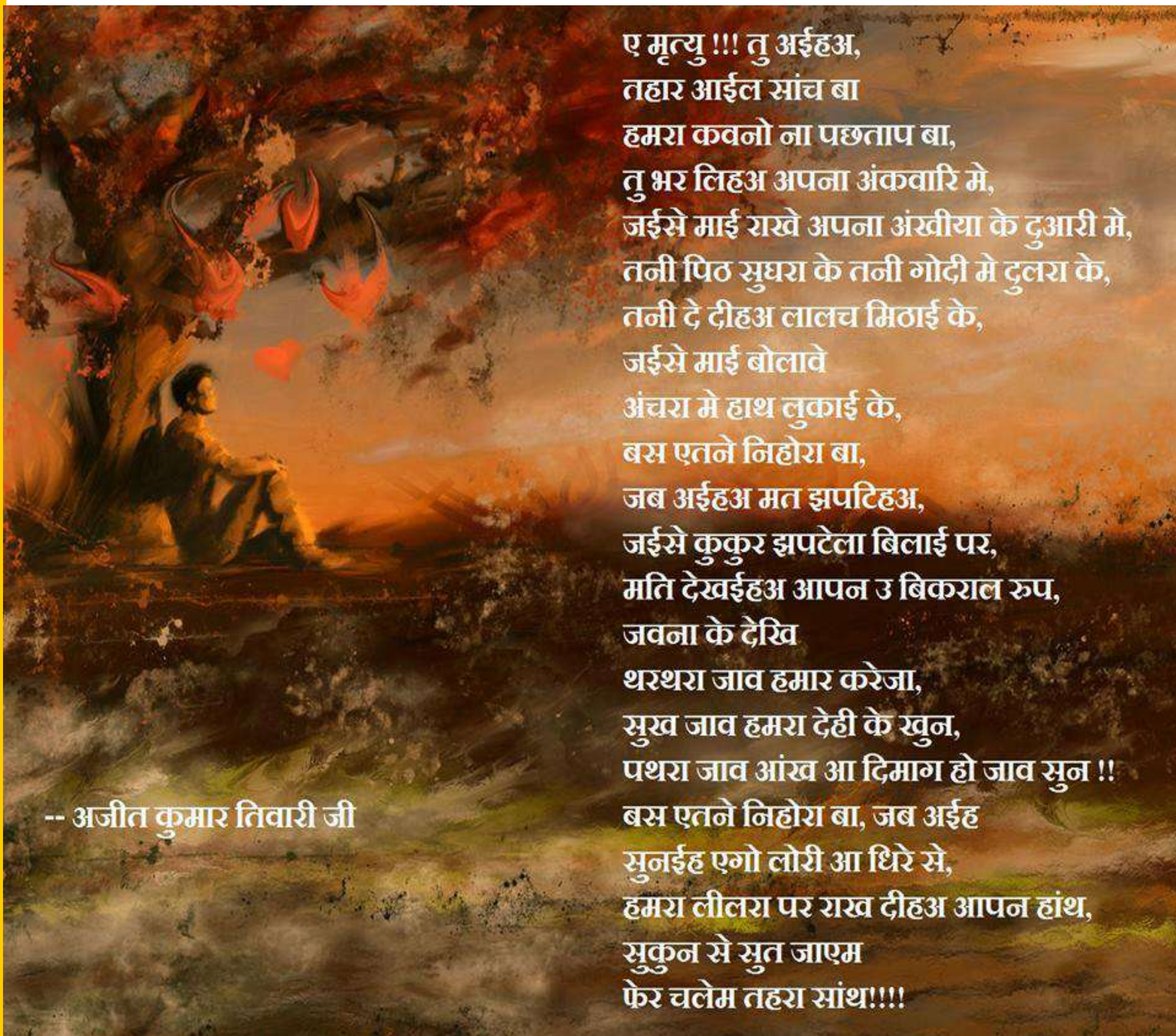

फोटो साभार-देसवा फिल्म

टुटही पलानी

नथुनी प्रसाद पाण्डेय

जेकर टुटही पलानी
चुए टिपिर टिपिर पानी
ओकरा सावन सुहाना सुहाई कईसे ?
घर मे नईखे एको दाना
हांथे ना बा एको आना
घर मे सावन के ख़ज़ाना ओकरा आई कईसे ?
जैसे बिधना खिसिआईल,
भागि छोट लिखि आईल,
सुख कबो ना भेंटाइल,
दुख कबो ना ओराइल,
सावन मोतिए लूटाओ मन भाई कईसे ?
तड़पे रोजो दिन-राती,
जरे बिरहा मे छाती,
नईखे जिनगी संघाती,
लोर बाटे जेकर थाती,
ओकर सावन से हियारा जुड़ाई कईसे ?
सभे लूटे सुख ढेरिया,
सुखि जाला ओकरा बेरिया,
सभे भोगेला सबेरे,
होला ओकरा बेर देरिया,
ओके प्रेम रसे सावन बुड़ाई कईसे ?
बीख सगरी बटोरी,
देहलस जिनगी मे घोरी,
टूटल जिनगी के डोरी,
काल देहलस झकझोरी,
ओकरा असरा के फूलवा गुहाई कइसे ?

नथुनी प्रसाद पाण्डेय

नथुनी प्रसाद पाण्डेय जी के जन्म-1जनवरी,1957 जे ह । गरीब आ पिछड़ल गाँव-परिवार में पालन पोषण आ पढ़ाई लिखाई जैसे तैसे कइला के बादों इहाँ के लगातार साहित्य सृजन कर रहल बानी । अप्रकाशित रचनाकार। हिंदी ,भोजपुरी,उर्दू,बंगला आ अंग्रेजी में लेखन। शिक्षक,हाई स्कूल,उजाँय।

मुजरिम

साल 1965, ई साल ना त हमरा मृत्यु के ह आ नाहीं जनम के। ई उ साल है जब हम भारत पकिस्तान के लड़ाई में पकिस्तान लाईल गईनी। हमरा के बॉर्डर के पास वाला जेल में रखल गईल जहाँ हमरा से पहिले भारत के कुछ देशभक्त सिपाही लोग मौजूद रहे। आ सबसे मजेदार बात ता ई रहे की उ सिपाहियन में से कुछ सिपाही के त हमारा देश में मृत घोषित कर दिहल गईल रहे आ कुछ के पहचाने से इनकार कर दीहल गईल रहे। अब चाहे जे कहीं हमरा खातिर होखो चाहे ना होखो लेकिन उ देशभक्त सिपाहियन खातिर ई कवनों नया बात ना रहे।

खैर कहे खातिर त आज 20 साल बीत चुकल बा लेकिन आजो उ तेज हवा जवन बॉर्डर के आर पार चलेला माने जइसे कवनों संदेश पहुंचावे के कोशिश करत होखो। आउर उ हवा के साथ उड़त-गिरत सुखल पत्ता जेमे से अपना देश के पतई हम आजो पहचान लेवेनि। हर रोज अईसन होखला के बाद अईसन लागेला जईसे अबो कुछ नईखे बदलल।मगर जब हम बीतल 20 साल के बुझे के कोशिश करेनी तब लागेला की "एतना काहे बदलल"। कहे खातिर त 20 साल बीत चुकल बा लेकिन आजो हमार मन सवाल करेला की का हमरो के हमरा देश में मृत घोषित कर दिहल गईल होखी ? का हमरो के पहचाने से इनकार कर दिहल गईल होखी ? का आजो हमार माई बाबूजी के उम्मीद ज़िन्दा होखी की उ उम्मीद आँख मूंद चुकल होखी ? सायद हम एतना चिन्ता ना करती अगर हम उ बड़का देश के एगो छोट हिस्सा ना रहिती। अगर हम एगो अदना सा सिपाही न रहिती। इ 20 साल में हमरा इहाँ कुछ मिलल की ना मिलल इ त हमरा इयाद नईखे बाकी हमरा एगो नाम मिलल इहाँ-"मुजरिम"। मगर हम नईखी जानत की ई नाम काहे मिलल लेकिन एतना त जान गईल बानी की एगो देश के सिपाही दोसरा देश खातिर मुजरिम होला।

जब ई जिनगी के लौ मौत के आंधी से लड़त रहे। जब हम आउर लोगन के तरह उम्मीद से मुह मोड़ लेले रहनी। जब कहीं ना कहीं एक दिन के इ मौत रोजमरा के जिनगी से ज्यादा अच्छा लागत रहे तब ओबेर हम पहिला बार "इकबाल" से मिलनी। इकबाल पाकिस्तानी फ़ौज में हमरे जईसन एगो सिपाही रहलें जे हमनी जईसन सिपाही के देखे खातिर रखल गईल रहलें। उ हमनी के खाए पिये से लेकर हमनी के हर जरुरत के खयाल रखस। इकबाल रोज रोज आवस आ आकर हमनी एने-ओन्ने के बात करस। इ सब चीज हमरा के इकबाल के करीब लावत रहे। इकबाल के साथ एगो अपनापन महसूस होखो। इकबाल के एको दिन ना आवल हमरा खातिर चिन्ता के विषय बन जाओ, आँख इकबाल के खोजे लागो जईसे अनजान भीड़ में कोई आपन के खोजत होखो। फेर एहींग कुछ दिन बीत गईल आ धीरे – धीरे हमरो चेहरा इकबाल खातिर एगो प्रमुख चेहरा बन गईल। उ रोज हमरा पास आवस हमार हाल पुछस आ फेर बदलत भारत देश के बारे में पुछस आ पुछते – पुछते पता ना काहे उनकर आँख भीग जाओ। आ फेर उ आँख पोंछत चल जास। एक दिन जब हमरा से रहल ना गईल तब हम इकबाल से पुछनी- "भारत में तहार कोई आपन रहेला का ?"

उ कहलें-"पंजाब के गली में हमार बचपन"

हम फेर पुछनी-"तू भारत आवे के कबो कोशिश ना कइल ?"

उ अपना तेज आवाज में बोलले-"आएब एक दिन सिर्फ ई देखे खातिर कि कहीं दीवार बहुत मजबूत त ना बन गईल ?"

आ फेर इकबाल जाए लागल आ जाते – जाते कहलस- " जब तू भारत लौटिह त पंजाब के गली में जईह आ देखिह की का आजो एगो पीपल के पेड़ नादान बचपन के छाह देता की उहो बटवारा में बंटा गईल"।

इकबाल चल गईलन आ फेर ओ दिन के बाद इकबाल ना अईले। कुछ दिन बीत गईला के बाद जब हमरा से ना रहल गईल तब हम जेलर साहब से इकबाल के बारे में पुछनी। तब जेलर साहब बतईलें की इकबाल एगो जंग में मार दिहल गईलें। कुछ देर

स्वस्ति आनयन

सिवान बिहार के रहे वाला स्वस्ति आनयन जी अभी इंजीन्यरिंग के पढ़ाई कर रहल बानी आ भोजपुरी, हिन्दी में लघुकथा लिखेनी। ए घरी इहाँ के भोपाल में बानी।

तक त हमरा विश्वास ना भईल। आ विश्वास भी होईत तब हम रोवती भी त केकरा खातिर एगो दोस्त जईसन भाई खातिर की एक दुश्मन खातिर जे हमार देश खातिर मुजरिम रहे। मगर इ आँख के लोर के, के समझाओ जवन हमार आँख भर देले रहे। लेकिन हम नईखी जानत केकरा खातिर, खैर चाहे जवन होखो लेकिन कुछ लोगन के सोंच हमरा के एक बार फेर अकेला कर गईल।

इकबाल के साथ–साथ केतना इयाद केतना बात केतना सपना दफन हो गईल। आ जीत गईल उ कुछ लोग जिनका खातिर इकबाल जईसन लोग के हार के कवनों कीमत ना होला। आउर जीत लेलस उ कुछ आपन–आपन सपना जिनका खातिर इकबाल जईसन लोग के सपना के कवनों कीमत ना होला।

हम नईखी जानत कि हमरा के भारत कब भेजल जाई आ चाहे फेर हम इहें दम तोड़ देबा। बाकी एक बात त हम जानेनी की जईसे–जईसे इ दिन आगे बढ़ता सरहद के दीवार आउर भी मजबूत होत जाता।

www.bhojpurisahityangan.com

गौरव कुमार सिंह

असल मायने में डिजिटल इंडिया

गत महीने बड़ा ही जोरदार विज्ञापन के सहारे केंद्र सरकार डिजिटल इंडिया के उद्घाटन कईलस, जवन की राष्ट्रहित में एगो बरियार कदम बा, अगर ओकरा के सही ढंग से अमली जामा पहिरावल जाइ तब | अबकी बार एकरे पहलू पर झाके के कोशिश कईल जाई देखल जाई कि इ ह का ? एकर सकारात्मक पहलु का का हो सकेला ? एकर नकारात्मक पहलु का का हो सकेला ? एकरा सामने कवन कवन महत्वपूर्ण चुनौती आ सकेली सन ? वास्तविक जीवन के जमीनी स्तर प कारवाही के संभावना केतना बा ? एह सभ के मैदान से बहरी बईठ के दर्शक के रूप में देखल जाई अउरी ओकर छोटहन विश्लेषण कईल जाई |

सबसे पाहिले बात कईल जाव कि इ कार्यक्रम ह का ? इ अइसन कार्यक्रम ह जवना में भारत सरकार 1,13,000 करोड़ ₹ के बजट रखले बिया | एह कार्यक्रम में 2.5 लाख पंचायतन समेत छव लाख गाँव के ब्रॉडबैंड से जोड़े के लक्ष्य भी निर्धारित कईल गईल बा | सरकार, मूल रूप से 2017 तक यह लक्ष्य में पावे खातिर एगो निर्धारित समय के एलान भी कईले बिया | सरकार के ओर से एह बात के भी दावा कईल गईल बा कि लगभग 55 हजार पंचायत जोड़ल जा चुकल बा | एह सभ पंचायत के ब्रॉडबैंड से जोड़े प 70 हजार करोड़ रुपया के बजट के प्रस्ताव बा खैर एकर लक्ष्य 1.7 लाख आईटी पेशेवर तईयार करे के भी लक्ष्य रखल गईल बा | एह सभ करे खातिर इलेक्ट्रॉनिक डेवलपमेंट योजना के भी शुरुआत कईल गईल बा जवन की सरकार के जनता आ जनता के सरकार से जुड़े में आवे वाला समय में संभव हो सकेला | प्रधानमंत्री जी एकरा के किसानन खातिर एगो क्रांति के रूप में व्याख्या कईले बानी, जवना में डिजिटल इंडिया के तहत किसान के आईटी से जुड़े खातिर आवाहन भी कईले बानी |

अब तनी एकर ऐतिहासिक पहलु कावर देखे के कोशिश कईल जाव | 1970 में भारत सरकार इलेक्ट्रॉनिक विभाग के स्थापना कईलस जवन बाद में (1976) NIC (National Informatics Centre) के रूप लेलस | इंदिरा गाँधी जी के कार्यकाल में भारत में पहिला बेर कवनो सरकार तकनीक अउरी कम्युनिकेशन के संज्ञान में लेलस अउरी कुछ करे खातिर हरी झंडी देखावलस | फिर कुछ दशक बाद NICNET नामक सैटेलाइट आधारित कंप्यूटर बनावल गईल फिर तकनीकि विकास करके जिला स्तर

गौरव सिंह

रोहतास, बिहार के रहे वाला गौरव जी इंजीन्यरिंग के छात्र हईं। भोजपुरी में लगातार लिख रहल बानी। ए घरी गौरव जी VIT यूनिवर्सिटी वेल्लूर , तमिलनाडू से पढ़ाई कर रहल बानी।

www.bhojpurisahityangan.com

के ऑफिस में उपयोग होखे शुरू भईल | NICNET के माध्यम से स्टेट कैपिटल से जिला ऑफिस के बीच समन्वय स्थापित करे में अहम् भूमिका निभवलस | हम एगो बात से रउआ के अवगत करवावे चाहब कि NICNET के ही इ-गवर्नेंस के पीछे मेन ब्रेन कहल जाला | एही के मदद से पूरा भारत में कनेक्टिविटी आसान भईल, ओही ब्रेन के एकबार फिर अलग ढंग से उपयोग करके बेहतरीन सेवा देवे के प्रयास कईल जा रहल बा जवना के नाम ह 'डिजिटल इंडिया' |

डिजिटल इंडिया के सपना साकार करे खातिर इ-गवर्नेंस के चार लेवल में बाटल गईल बा - G2C(गवर्नमेंट टू सिटीजन), G2G(गवर्नमेंट टू गवर्नमेंट), G2E(गवर्नमेंट टू एम्प्लोई), G2B (गवर्नमेंट टू बिसिनेस) | कवनो समस्या के खाली राजनितिक हल ना होखे ओकर दू गो मायना होला एगो राजनितिक आ दूसरा तकनीकी| डिजिटल इंडिया एगो तकनीकी हल हो सकेला अगर एकरा के संज्ञान में लेके बढ़िया से काम होखो तब, काहे कि इ गवर्नेंस ही उ नीव ह जवना प ढेर कमरा बनावल जा सकेला चाहे उ कमरा CBCS(चॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम) के होखे, चाहे मेक इन इंडिया के लेके होखे, चाहे प्रधानमंत्री जन धन योजना के होखे, चाहे उ डायरेक्ट कैश ट्रान्सफर के होखे, चाहे नायका तकनीकी वाला सरकारी कामकाज के बात होखे | एह तरह के कवनो कमरा बनावे खातिर इ-गवर्नेंस जईसन नीव बहूत ही ज्यादा जरूरी बा | शिक्षा, स्वास्थ, सेना, सरकारी कामकाज, ब्यापार, आधार कार्ड, पासपोर्ट, हर जगह प इ रीढ़ के हड्डी साबित हो सकेला अगर इ सफलतापूर्वक आपन मुकाम पर पहुचे तब | न्यायिक प्रणाली के लेके बहूत तरह के चुनौती के चर्चा भईल ओह सभ के एगो साझा मंच पर लाके पुलिस विभाग, सीबीआई, फोरेंसिक आदि से जोड़ के ओह जटिलता से भरल चुनौती के चारो खाने चित कईल जा सकेला |

सबसे पाहिले बात कईल जाव G2C(गवर्नमेंट टू सिटीजन) के बारे में, गवर्नमेंट के सेवा जवन इ-गवर्नेंस के सहायता से नागरिक ओकर आसानी से उपयोग कर सके | उदहारण के रूप में बिजली, पानी, टेलीफोन, ट्रेन, हवाई जहाज, होटल आदि के ऑनलाइन बिल चुकावल जा सके | ऑनलाइन एप्लीकेशन, कवनो सुचना ऑनलाइन मुहईया होखे, राउर जमीन से सम्बंधित कागजात ऑनलाइन उपलब्ध होखे, ऑनलाइन शिकायत दर्ज करवावल जा सके, विद्यार्थिन के पढ़े के सामग्री ऑनलाइन मिले लागे | एह में काफी अइसन चीज बा जवन शहरी क्षेत्र में उपलब्ध बा अउरी लोग ओह सेवा के आनंद ले रहल बा | लेकिन हर गाँव तक पहुचावे खातिर एह नीति प विशेष ध्यान दिहल गईल बा | कृषि उत्पादन, मृदा संबंधी विवरण और बिक्री मूल्य के विश्व के कीमत के साथे तुलनात्मक अध्ययन, एह तीनो चीज के एकसाथे जोड़ के देखे के चाही जवना से सरकार के भी आसानी होई ताकी सरकार उत्पादन के स्वरूप के पता लगा पाई। एह से ढेर फायदा बा उचित मूल्य जवन किसान के नइखे मिल पावत ओकरा के तकनिकी सहारे भी हल निकल सकेला | इ वोटिंग के तहत छात्र जवन की काफी संख्या में वोट ना दे पावेले ओह लोग के मौका मिल सकेला, जवना से इलेक्शन प्रक्रिया में छात्रन के भागीदारी के पारदर्शी तरीका से मुक्कमल कईल जा सकेला |

अब बात कईल जाव दुसरका पहलु G2G(गवर्नमेंट टू गवर्नमेंट) के, एह तरह के मॉडल में राज्य सरकार आ केंद्र सरकार के बीच डिजिटल इंडिया के माध्यम एगो अच्छा गठजोड़ हो सकेला, जवना से केंद्र सरकार, आसानी से राज्य में आपन नीति के लागु अउरी निगरानी कर सकेला | उदहारण के रूप में पुलिस डिपार्टमेंट से संबंधित सुचना एक राज्य से दूसरा राज्य में आसानी से आदान प्रदान कईल जा सकेला | दूसरा उदहारण के रूप में लेवल जा सकेला जवना में केंद्र सरकार आ राज्य सरकार से गठ्बंधित क गो नीति लागू बा जईसे 'मिड डे मील' जवना में FCI से प्रदान कईल गईल आनाज के विवरण आ गुणवता के बारे में आसानी से अवगत भईल जा सकेला, एह से पौषिक भोजन ना मिले, आनाज में FCI से कीड़ा मिले वाला शिकायत से निपटारा पावल जा सकेला | इ त एगो उदहारण रहल ह, अइसन बहूत सारा नीतिगत चुनौती के हल इ-गवर्नेंस के मदद से कईल जा सकेला | PDS प्रणाली में ढेर शिकायत आवत रहे ओह सभ में सुधार कईल जा सकेला इ-गवर्नेंस के उपयोग करके, डीलर के चोरी प लगाम लाग सकेला अगर सब कुछ डिजिटलाइजड हो जाव तब एकर ताजा उदहारण बा कैश ट्रान्सफर के सहायता के गैस, किरासन के चोरी करे वाला डीलर प लगाम लाग गईल बा | कोई दोसरा के कार्ड प गैस लेवे में कवनो फायदा नईखे काहे कि ब्लैक वाला दाम लागी आ सब्सिडी कार्ड धारक के खाता में जाई |

अब बात आइल तीसरा पहलु यानी G2E(गवर्नमेंट टू एम्प्लोई) क्षेत्र में, एह में कर्मचारी के सरकारी कामकाज, ओह से जुडल मय चीझू जईसे हाजिरी , तनखाह, कर्मचारी के मय जानकारी अउरी बाकी के तमाम चीज जवना से सरकारी काम काज में पारदर्शिता आ गति में मिलो | उदहारण के रूप में ले ली सरकारी स्कूल में मूल रूप से देखल गईल बा कि शिक्षक समय पर ना आवसु आ कुछ अइबो ना करस अउरी महिना के अंतिम दिन भाई भतीजावाद के प्रक्रिया के तहत आके हस्ताक्षर करके पूरा सैलेरी उठा लेवेलन | खैर इ दिक्कत खाली सरकारी स्कूल ही ना बल्कि बहूत सारा सरकारी ऑफिस में होला ओह सभ प लगाम लग सकेला बायोमेट्रिक अटेंडेंस वाला प्रणाली के तहत,

एह से काम के सामर्थ्य आ सक्रियता बढ़ी | पांचो मिनट लेट भईली रउआ कि राउर अनुपस्तिथि लाग जाई, शिक्षक आ कर्मचारी लोग में जागरूकता बढ़ी जवना से समय के पाबंद भी हो जईहे जा | कर्मचारी आपन शिकायत बड़ा ही आसानी से एह मॉडल के तहत रख सकेला आ सुझाव भी साझा कर सकेला | सही कर्मचारी के न्युक्ति जवना से आतंकवादी गतिविधि पर भी लगाम लगावल जा सकेला एह सिस्टम से, काहे कि पूरा डाटा वैध रूप से डिजिटलाइजड मॉडल से रखल जा सकेला, थोडा ऑफिस में फाइल-फाइल खेल से भी सुकून मिली | नया तरह के सॉफ्टवेयर उपयोग कई के काम करे वाला कर्मचारी आपन पूरा विवरण अपडेट (छुट्टी आदि से जुड़ल) रख सकेला | ओवरटाइम काम करे वाला लोग के अपना मने सबकुछ अपडेट हो सकेला इ सब संभव बा काहे कि हमारा यूनिवर्सिटी में एह तरह के एप्प बा जवना में राउर मार्क्स, अटेंडेंस, समय सारणी सब बढ़िया ढंग से बा ओह एप्प में |

चौउथा स्तंभ बा एह मॉडल के G2B(गवर्नमेंट टू बिजिनेस) जवन इकोनोमिकल दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण बा | एह मॉडल के तहत गवर्नमेंट आ बिज़नसमैन से एगो संवाद के जरिया हो सकेला जवना से बिज़नस से सम्बंधित सुचना निरंतर सरकार के मिलत रही | कुछ चुनौती रहल बा एह सेक्टर में जवना चलते बचाव के राहि निकाल के भ्रष्टाचार भईल बा, 2G स्पेक्ट्रम एकर बरियार उदहारण बा, निलामी के बेर डिजिटलाइजड रहित आ पूरा प्रक्रिया ओकर मैकेनिज्म से भईल रहित त शायद ओह तरह के घटना ना घटित या आशंका कम हो जाईत ओइसन घोटाला होखे के | टैक्स कलेक्शन प्रक्रिया में आसानी मिलित आ एगो आकड़ा सामने आ सकत रहे जवना छोट ब्यापारीन के जेकर हिसाब सरकार बही-खाता में लगभग ना के बराबर रहेला | किसान खेती करेला लेकिन ओकर दाम या त सरकार तय करेले या ब्यापारी | ब्यापरिन के मनमुताबिक दाम लेवे वाला प्रक्रिया प लगाम लग सकेला, जवना में सरकार के धन के कुछ उचित हिस्सा ब्यापारी के खाता में भेजे आ उचित कीमत किसान के खाता में, बिचौलिया लोग के प्रभाव कम होईत त निश्चित रूप से किसान के अच्छा दाम मिले लागी |

सबसे पाहिला एह देश में सूचना प्रेषित करे वाला संस्था NIC(नेशनल इनफार्मेशन सेंटर) लगे एह टास्क के पूरा करे के क्षमता नईखे एह से एकर पुनर्निर्माण बहुत जरूरी बा,

अब बात कईल जाव एह से सम्बंधित चुनौती के जवन की एह मॉडल के सफलता में बाधा बन सकेला | सबसे पाहिला एह देश में सुचना प्रेषित करे वाला संस्था NIC(नेशनल इनफार्मेशन सेंटर) लगे एह टास्क के पूरा करे के क्षमता नईखे एह से एकर पुनर्निर्माण बहूत जरूरी बा, जवना के कई गो अलग अलग हिस्सा मे बाँट के काम करे के परी, ओतना ऑफिसर के नया नियुक्ति करे के पड़ी | दूसरा चुनौती जतना बड चादर होखे ओतने पैर फैलावे के चाही यानी के थोडा थोडा क्षेत्र लेके कवर करे के चाही एकरा पीछे कारन इ देब कि इ मामला बा वित्तमंत्रालय से जुडल, ढाई लाख पंचायत ब्रॉडबैंड से जोड़े में बीस हजार करोड़ से ज्यादा ही लागी पईसा, ओह से अर्थव्यवस्था हिल जाई अगर ई अचानक भईल तब | दुसरका चुनौती बा कि भारत के इंफ्रास्ट्रक्चर ओतना बेहतर नईखे, पूरा देश में बैंडविड्थ के बरियार कमी बा जवना चलते इन्टरनेट धीरे चलेला | फिलहाल हमनी के देश अवसरंचना के मामला में विदेशी प ज्यादा निर्भर बा | अगर छोटा ब्यपारी आपन सेटअप लगावे के चाही त ओकरा बड़ा मुश्किल होई | भले दावा लोग २ mbps स्पीड देवे के बात करत होखे लेकिन इ कईसे संभव होई भगवांन जाने काहे कि भारत इन्टरनेट स्पीड के मामले में 118वां स्थान प बा। एह से बेहतर स्पीड थाईलैंड, इंडोनेशिया वियतनाम आ एकर अलावा 114 देश के बा |

नेट न्यूट्रलिटी के मामला विभाग के डाटा के मानी तब भारत बेशक नेट यूजर में तीसरा स्थान होखे लेकिन भारत में पूरा आबादी के मात्र 20 प्रतिशत लोग ही लाभ उठा पावता | एगो अउर रोचक जानकारी देत बानी 0.7 प्रतिशत यूजर ही मात्र 10 एमबीपीएस के स्पीड से नेट यूज़ करेला अउरी 4.9 प्रतिशत लोग ही 4 एमबीपीएस के स्पीड के लुफ्त उठा पावेला | अभी गाँव में ढंग से मोबाइल के टावर तक ना रहेला, बिजली के समस्या हमनी से कहाँ छुपल बा, सिर्फ ब्रॉडबैंड गाँव तक पहुंचावला से कुछ खास फायदा ना होई | बल्कि इ तय कईल जरूरी बा कि लोग एह सेवा के उपयोग करे में केतना सक्षम बा | अंत में निष्कर्ष के रूप मे इहे कहल चाहब कि मॉडल बहूत अच्छा बा बहूत सारा समस्या हल हो सकेला लेकिन ओकरा से पाहिले जरूरी बा गाँव आ शहर के बीच सुविधा के नजरिया से असमानता कम कईल चाहे बिजली के बात होखे या मोबाइल टावर के, बिना बेसिक के अगर एकरा के संभव करे के कोई कोशिश होई त एकर हाल उत्तरप्रदेश के बाटल लैपटॉप वाला मिनी डिजिटल उ.प्र. लेखा हो जाई |

www.bhojpurisahityangan.com

अन्हार

आलोक पाण्डेय

जेकरा से ना रहे आँखी के देखा देखउवल
आज ओकरे से ठेहुन भर प्यार भइल बा

हंसी हंसी के होता बात दुनो दयाद में
जरूर काल्ह के कवनो करार भइल बा

जिनगी भर अगोरलस उ जेकर दुआर
ओकरे घर के सामान लेके फरार भइल बा

जोगी बनल फिरता जे दुआरी दुआरी
ओकरो छोट प बड़ा दुलार भइल बा

पूजावाला घरवा में जरता चर-चर गो दीया बाकिर
आजी वाला घरवा में कहिये से अन्हार भइल बा

अलोक पाण्डेय

बलिया युपी के रहे वाला , लेखन के क्षेत्र से जुड़ल , आखर पेज से शुरु से ही लिख रहल बानी , इँहा के कई गो लेख रचना आखर पेज प पोस्ट हो चुकल बा। एह घरी इँहा के दिल्ली मे बानी।

www.bhojpurisahityangan.com

समीक्षा - शशि रंजन मिश्र

बेटी मरे त मरे कुँआर: उदय प्रकाश

-"सुनीं, मत मांगीं दहेज
मंगला से हाथ नीचे हो जाला जी !"
-"रउआ फिकिरिआई जनि
हम उपरे से उठा लेब लाला जी !"

ऊपर के चार लाइन पढे में बुझात बा कि दू जाना के बीच के बतकही ह। अब एकरा के बतकही कहीं, टोना कहीं भा व्यंग्य बाकी इ चार लाइन समाज में फैलल दहेज के काँट के बेअंग करत बा। दहेज के कुरीति पे ना जाने केतना कथा कहानी कविता आ लेख आइल बाकी ऊपर के लिखल चार लाइन के बजन तनी जादे बा। बात उहे जे सीध होखे आ करेजा में बींध जाए, बात उहे जे हंसोड़ होखे आ राउर मगज के कचोट जाये। आ बतकही उहे जे जनता जनार्दन के जबानी होखे आ समझ में आवे। कवनों बात के चुनल छांटल सब्दन के चासनी में तर करके गुलाब जामुन जईसन सोन्ह बना के कहब त बात के बतंगड़ बनी आ राउर बेमतलब के उतजोग के मेहनत हवा हो जायी ।अब बात के छंद्बद्ध करके कहब त गीत गजल बन के जबान पे भले चढ़ जाये बाकी हियरा मे हिलोर मारे एकर गारंटी नईखे । बात उहे जे देखे सुने में सुन्नर लाल भटकोइयाँ होखे आ मुंह में जाते लवंगीया मिरचाई बन जाये। दहेज के विरोध कईल कवनों आसान काम नईखे आ उ समाज के बीच में रह के। राउर बात के मानी जी? रावा चिंता करत बानी दहेज के ओरियावे के आ दोसरका गज भ के जीभ निकाल के बईठल बा दहेज हंसोते खाति।

कइसे ओरिआई ई दहेज ?
आतऽ -- लेत-लेत !

एह बतकही में कवनों लगाव बझाव नईखे। कविता के लय बा , व्यंग्य के बान बा आ उहो अईसन कि समाज बेअंग होके घवाहिल हो जाये। बात लमहर आ लछेदार नईखे, ठेंठ गंवई बा। आ एह बातन के कविता संग्रह के रूप में कलमबद्ध करत कवि प्रकाश उदय जी समाज के ऐनक देखा दिहले। आपन कविता से समाज आ दहेज के बेपर्द कर दीहले। कवि कल्पनाशील होले, उदय जी व्यवस्था आ वर्तमान के साँच उकेर दिहनी। आ एह समस्या के समाधान समाज के भीरी बा एह से कवि उपदेशक नईखन बनत आ आपन बात के कहे में कवनों लाग लपेट , शक सुबहा नईखन राखत। इंहा तक की व्यंग्य के बान से अपनो के नईखन बाँचे देत-

दहेज प अतना पितपिताइल बाड़ऽ काहे
तहरा खाली बेटिए बाड़ी स का ए उदै पाँड़े ?

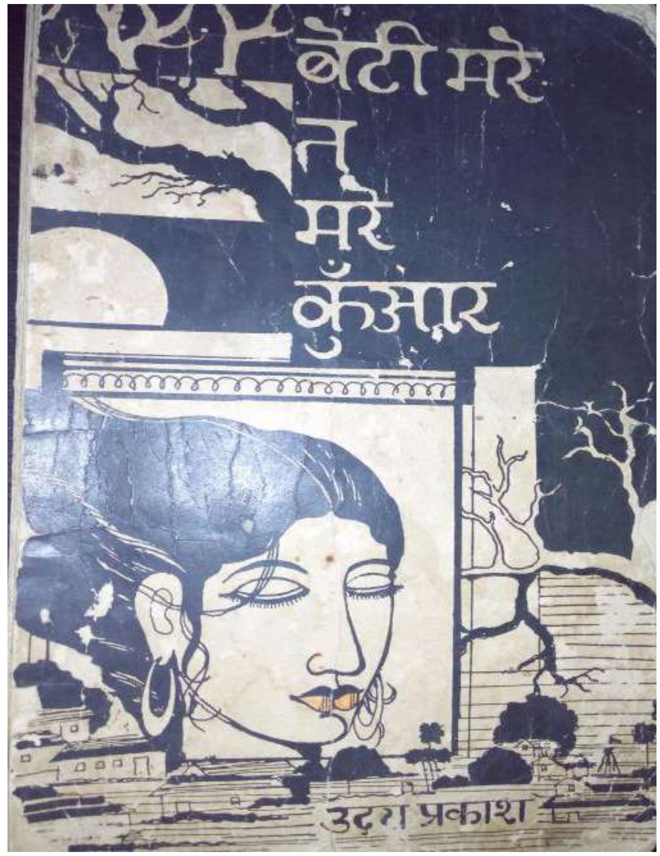

पुस्तक: बेटी मरे त मरे कुँवार
लेखक– उदय प्रकाश **प्रथम संस्करण: 1988**
कौशल्या प्रकाशन, आरा **मूल्य: अप्रकाशित**

कविता संग्रह आपन नावें से गहिर बात कह जात बा। दहेज के लालची समाज में एगो गरीब बाप के मुंह से इहे नू निकली - "बेटी मरे त मरे कुँआर" । एह किताब के प्रस्तावना श्री रामेश्वर सिंह "कश्यप" जी लिखले बानी। उंहा के शब्दन में प्रकाश उदय जी के कविता में तेजाब के गुण बा। जे छनकत रही, घाव करी आ ताउम्र खाति निशान छोड़ी।

भोजपुरी साहित्य से हमार पहिलका परिचय जवन किताब से भईल उ प्रकाश उदय जी के "बेटी मरे त मरे कुंआर" कविता संग्रह ही रहे । एह किताब के पहिला प्रकाशन 1988 में भईल आ भोजपुरी साहित्य प्रेमी लोग एकरा के आंखे माथे चढ़इले । कौशल्या प्रकाशन आरा से प्रकाशित एह किताब के प्रकाशन अब नईखे। कवि उदयप्रकाश जी के सहमति से जल्द ही एह किताब के डिजिटल कापी आखर के वेबसाइट पे आई।

समीक्षा - यशवंत कुमार सिंह 'यश'

कसौटी प : कबिरा खड़ा बाजार में

कबिरा खड़ा बाजार में ई एगो अइसन व्यंग्य कौशल के किताब बा, जवना में सामाजिक मुल्यन पर प्रकाश डालल गइल बा, त जीवन सूत्रन के गहिराई से समुझे परखे के मंत्रो दिहल गइल बा। एगो जीवंत व्यंग्यकार जब कलम उठावेला त अइसने सच्चाई पड़ोसे ला, काहे कि व्यंग्य जीवन के प्रतिरोध के ताकत देला। प्रतिकार के आवाज ह व्यंग्य। विसंगतियन के चुपचाप सह गइल एक तरह के कायरता ह, लेकिन जब कवनों व्यक्ति अन्याय के विरूद्ध खड़ा होला त ऊ इंसानियत के फर्ज अदा करेला।

इतिहास गवाह बा कि कई गो महानायक लोग भी अपना-अपना दायरा में मानवीय अत्याचारन के विरूद्ध आवाज बुलंद कइले आ शहिदों भइले । व्यंग्यकार ओही बलिदानी परंपरा के अनुगमन करेला । एह समय में मसखरापन बढ़ल बा। हंसे के प्रवृति में बढ़ोतरी भइल बा। मूर्खन के डिब्बा के सामने बइठ के समय बितावे वाला समाज के तटस्थ वर्ग के अपना समय के विद्रोप से कुछ लेन-देन नइखे बाचल। एह समय में सूतल चेतना के जगावे के काम व्यंग्यकार ही सही ढ़ंग से कर सकेला । चाहे ऊ हिन्दी के व्यंग्यकार होखे भा लोकभाषा के। व्यंग्यकार कबीर के परंपरा के अनुगामी होला। कबीर साँच कहे के कीमत चुकवले रहलन। ऊ पिटइलन उनकर घरो जलावल गइल । एकरा बावजूद भी ऊ बाजार में खड़ा होखे साँच कहे से पीछा ना हटलें । एही रास्ता पर चल रहल बानी डा० जौहर शफियाबादी जी । ऊ सूफी संत हई, भोजपुरी के उत्कृष्ट लेखक हई। खूबसुरत शायर भी हई आ समय-समय पर व्यंग्य भी लिखेनी। जवना के उहाँ का भोजपुरी में नूतन ललित निबंध कहेनी। जवन उर्दू के सशक्त विद्या भा शैली इंशाइया ह ।

डा० जौहर शफियाबादी अपना वाणी से लोग के वाचिक रूप से सुप्तबोध के जागृत करत रहेनी । बाकिर नूतन ललित निबंध के संकलन 'कबिरा खड़ा बाजार में' हमरा सामने बा । एह रचनन के देख के हम सहज-सरल भाषा में लालित्यपूर्ण लेखन के जरिए समकालीन कुरीतियन, कुविचारन आ द्रूपताअन के विरूद्ध प्रहार करे वाला डा० जौहर शफियाबादी जी प्रकारांतर से भोजपुरी साहित्य के एह नया विद्या से समृद्ध कइले बानी । ई नूतन ललित निबंध जरूर बा, बाकिर एह में व्यंग्यात्मक बोध भी सूचना गहनता के साथ उपस्थित बा । ललित के सुमन में व्यंग्य के सुवास के कारण रचना पाठक के अपना ओर खीचेला । अइसे भी भोजपुरी भाषा में हमरा हमेशा गहिरा आत्मीयता के दर्शन होला । एह भाषा के सहारे व्यंग्य-विनोद अधिक संप्रषणीय बन जाला । ओह में भी जौहर साहब जइसन मनीषी सृजन करे त रचना के प्रभविष्णुता

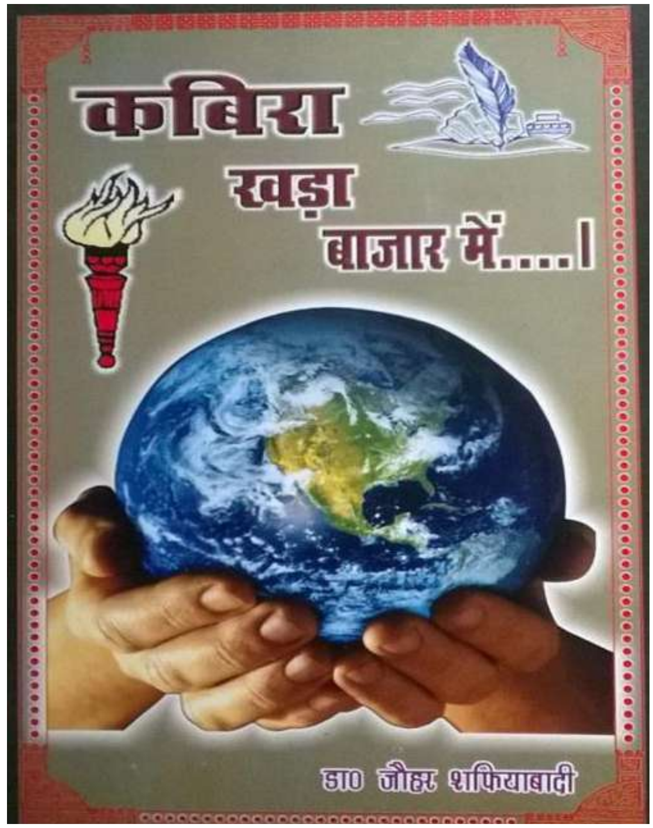

आउर बढ़ जाले । डा० विवेकी राय जइसन सफल शब्द-शिल्पियन अपना ललित निबंध के कारण हिन्दी आ भोजपुरी साहित्य के ऊच्चाई प्रदान कइले बानीं । डा० जौहर शफियाबादी जी भी एही परंपरा के गति देले बानी । अइसे इहाँ के निबंध विशुद्ध ललित निबंध नइखे, काहेकि एह में विनोदी-तत्व भी प्रचुर मात्रा में बा। एही से ई सब रचना 'नूतन ललित निबंध' के रूप लेले बा। भोजपुरी खातिर संभवतः ई एगो नया विद्या ह आ एकरा के शुरूआत करे के श्रेय जौहर साहब के ही जाता। उम्मीद बा कि भोजपुरी के नया लेखक एह विद्या के ओर आकर्षित होखिहन आ डा०जौहर शफियाबादी के शैली के आगे ले जइहन ।

एह पुस्तक में सात व्यंग्य बा। सबके आपन-आपन रंग बा । समाज के विभिन्न बुराइयन पर लेखक गहिरा चोट कइले बानी। बाकिर उहाँ के शैली एतना लालित्यपूर्ण बा कि पाठक कड़वी दवा भी सहजता के साथे पचा जालन । पहिला रचना 'बिआह' के ही लेली। 'बिआह' में पइसा के खेल होला । हिन्दू होखे भा मुसलमान हर धर्म के अधिकांश लोग शादी-बिआह के समय अपना लालची चरित्र के उजागर कर देला । अपना इमान धर्म के भी छोड़ देला लोग । अइसन दहेज पिपासुअन पर जौहर शफियाबादी जी जम के प्रहार कइले बानी । दूसरका रचना भरवितन के चटकी भी धारदार कृति बा । छत्तीसगढ़ी में एक शब्द बा 'मिठलबरा' मीठा-मीठा बोलल

www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर झूठ, लबारी, आचरण कइल । एही वजन के शब्द ह भरवितन। चालाकी के साथे जुगाड़ कर के ऐश करे वाला के प्रवृति वाला भरवितन हर जगह मिलेलन। जौहर साहब एक जगह लिखले बानी कि 'भरवितन' जात-पात, ऊँच-नीच, भेद-भाव, हिन्दू-मुसलमान के संकीर्णता, साम्प्रदायिकता के आधार बना के महान जोगाड़ी के भूमिका में सफलता प्राप्त कर चुकल बारना' साँचो, समाज में अइसन लोग के बढ़ोतरी हो रहल बा। एह में ई जरूरी बा, कि अइसन प्रवृति पर गहिरा मार होखे। लेखक दू टूक कहत बानी कि 'हो सकत बा रउवो आस-पास में दू-चार जाना अइसन भरवितन मिल जास तनीं ध्यान दी। आ अपनो में झाँकी ? ई साहसिक आ सुन्दर कटाक्ष ह। आदमी दुनिया भर के बुराइयन के देखेला बाकिर अपना भीतर बइठल भरवितन के ना देख पावे।

'बूटी नं0 चार सौ बीस' नामक रचना भी धर्म मजहब के नाम पर आपन दुकानदारी चलावे वाला लोग पर व्यंग्य बा । आपस में लड़ावले-भिड़ावे के हथकंडा के खुलासा एह रचना में भइल बा। लेखक एगो फंतासी गढ़ले बानी । एगो संगठन बा, जवन चंडालिस्तन में चलत बा । ई संगठन सबके बूटी देला कि किस्म-किस्म के भ्रष्टाचार कइसे कइल जाए । डा० जौहर शफियाबादी राजनीति, धर्म आतंकवाद, शिक्षातंत्र आदि में सक्रिय भ्रष्ट लोग पर मखमली प्रहार कइले बानी। बूटी नं0 चार सौ बीस से ही बहुत कुछ ध्वनित हो जाला। जौहर साहब कहेनी कि 'एह औषधि बूटी नं0 चार सौ बीस के सेवन करते रहेब आ लाभ उठाएब। संगही हमरा संस्था के जिनगी भर गुणगान करते रहेब।' कुल मिला के एह नूतन ललित निबंध रंजकता के साथे आक्रमण करेला आ शातिरन के जमके खबर लेला। समाज में चार सौ बीसी करे वाला भरल पड़ल बारना खाँटी व्यंग्य के चाश्नी में डूबल ई रचना पूरा संग्रह के आत्मा ह। एकरा एक-एक पंक्ति में गहिरा व्यंग्य बा । एही कारण रचना असाधारण बन गइल बा।

पेट नामक रचना भी रोचक बा । पेट त पेटे बा । एह विषय पर स्वतंत्र रूप से बहुत कम रचना लिखल गइल बा। हिन्दू-मुसलमान के पेट गुंडन के पेट, नेतवन के पेट अफसरन के पेट, पत्रकार-लेखकन के पेट, खिलाड़ियन के पेट आ डॉक्टरन के पेट। सबके पेट में बेइमानी के माल समाला। एह मानसिकता पर जौहर साहब जम के हमला कइले बानी। आ अंत में पेट महराज की जम के साथ पूर्ण विराम लगावत आत्ममंथन खातिर बाध्य कर देत बानी कि मनुष्य पेट खातिर कइसे अच्छाइयन से दूर होत जा रहल बा।

अपना निबंध लोहा के माध्यम से डा० जौहर शफियाबादी जी एह कटु सत्य के बेबाकी के साथ पेश कइले बानी कि आज कम्प्यूटर-इंटरनेट के दौर में मनुष्य के कीमत घट गइल बा । महात्मा गाँधी अपना किताब हिंद स्वराज में जे तरे शैतानी सभ्यता के ओर इशारा कइले बानी। ऊ एही लोहा से ही त उपजे ला। सचमुच आज लोहा के कीमत बढ़ल बा आ इंसान के किमत घट गइल बा। भौतिकता के कारण हमनी के जीवन मूल्य तिरोहित होते जा रहल बा। एह से जरूरी बा कि दुनिया लोहा से लोहा लेव। आँख नामक भी रचना भी रंजक बा। आँख, नयन, नजर, नेत्र आ दृष्टि ई शब्द भोजपुरी में खूब प्रयोग होला। डा०जौहर शफियाबादी जी आँख के बेहद रूमाली विश्लेषण भी करिले आ गंभीर हो के कहिले कि 'कवनो भाषा का आँख में रतौंधी हो जाए तब ? ई एगो बड़ बात बा। भाषा के शुद्धता भी साहित्यिक बहस के मुद्दा रहल बा। भाषा के समझे खातिर आँख माने दृष्टि जरूरी ह। ई रचना भोजपुरी अस्मिता पर भी गंभीर विमर्श करेले। भोजपुरी भाषी लोग पुरा दुनिया में छइले बा। जौहर साहब हिंदी के वर्णन के भोजपुरी में आत्मसात करे के वकालत करीले। उर्दू के शब्द भी अगर आवे त ओकरो स्वागत होखे के चाहीं । ई औदार्य ही कवनो भाषा के त्वरित विकास में सहायक होला । जौहर साहब कहेनी कि 'आँख देशी होखे भा विदेशी आँख आँखे होला ।' अपना अनुवाद के प्रवृति के भी प्रोत्साहित करे के बात कइले बानी। अनुवाद के जरिए ही आज विश्व के साहित्य एक-दूसरा तक पहुँच सकेला।

संग्रह के अंतिम आ बेहद धारदार रचना 'महात्मा जी के नरक यात्रा' में डा० जौहर शफियाबादी जी पहले त पूरा गंभीरता के साथ पर्यटन के महत्व पर प्रकाश डलले बानी, बाकि फेर एगो फंतासी के सहारा लेके ऊ एगो महात्मा के सीधे नरक पहुँचा देत बानी, जहाँ ऊ देखत बाड़ेन कि नरक में त देश के अनेक नामी-गिरामी घूसखोर, कलेक्टर, एसपी, नेता आ अनेक महापुरुषन विद्यमान बाड़े। ई दृश्य देख के महात्मा जी बेहोश हो जात बारन। पूरा रचना से इहे ध्वनित होता कि दुर्जन लोग अंततः नर्क भोगेलन। भले ही ऊ धरती पर बड़'बड़ पदन में शोभायमान रहस । ई समूचा व्यंग्यात्मक कथा मनुष्य के पतित होखे के दुखद सत्य के उद्घाटित करेला। भारत के व्यवस्था देख के कई बार नरक के भयावह अहसास होला। लेखक एह ओर सार्थक कटाक्ष कइले बानी।

संग्रह के एह तमाम रचनन से गुजरत सचमुच बहुत अच्छा लागल। व्यंग्य के विद्यार्थी हई आ बहुत सारा भाषा में लिखल जाए वाला व्यंग्य रचना से गुजरत रहिले। बाकिर मुँह देखल बात हो जाई, लेकिन हम दावा के साथ कह सकत बानी कि अइसन नूतन ललित निबंध हम कमें देखले बानी, जवना में ललित तत्व के साथ-साथ एतना गहिरा व्यंग्य तत्व भी मौजूद बा। डा० जौहर शफियाबादी जी 'नूतन ललित निबंध' के नाम से भोजपुरी में लिख रहल बानी। हमरा पूरा विश्वास बा कि एह कृति के भोजपुरी जगत् में आत्मीय स्वागत होई आ नया लेखक एह नया विद्या का ओर आकृष्ट होके अइसने नूतन ललित निबंध लिखिहन। भोजपुरी में एह विद्या के जनक डा० जौहर शफियाबादी जी के हम शुभकामना दी, हम एह लायक त नइखी, लेकिन साहित्य के विनम्र विद्यार्थी होखे के नाते इहे चाहत बानी कि ऊहाँ का अइसही लिखत रही काहेकि अब जौहर साहब जइसन कबीरी तेवर वाला लेखक कम ही बाचल बा लोग। अइसन दौर में जब हर जगह रागदरबारी गावे वाला लेखक

बढ़ल बा भा अइसन लेखकन के संख्या बढ़ल बा जे कलावादी हो के समाज से कटत जा रहल बा। तब खाली व्यंग्य भा कहल जाव कि ई नूतन ललित निबंध प्रतिरोधी ताकत के रूप में समाज के जीवंत बनवले रहेला।

भोजपुरी गद्य साहित्य के एतना मजबूत भाषा आ शैली निश्चित रूप से भोजपुरी गद्य साहित्य के हिंदी-उर्दू गद्य साहित्य के आमने-सामने लाके खड़ा कर देवे में सक्षम सिद्ध हो रहल बा। ललित निबंध अपना सम्हरल लालित्य खातिर ख्यात बा, जवना में जीवन मूल्यन के दर्शन होला बाकिर जौहर साहब ओहू में नया प्रयोग कर के एगो आउर चमत्कार कर देले बानी जवना के नाम 'नूतन ललित निबंध' बा। ई आउर गहिरा व्यंग्य के धारदार शैली बा। एह पर पूरहर काम होखे के चाहीं, ताकि ई एगो नया विद्या आउर फलो-फूलों।

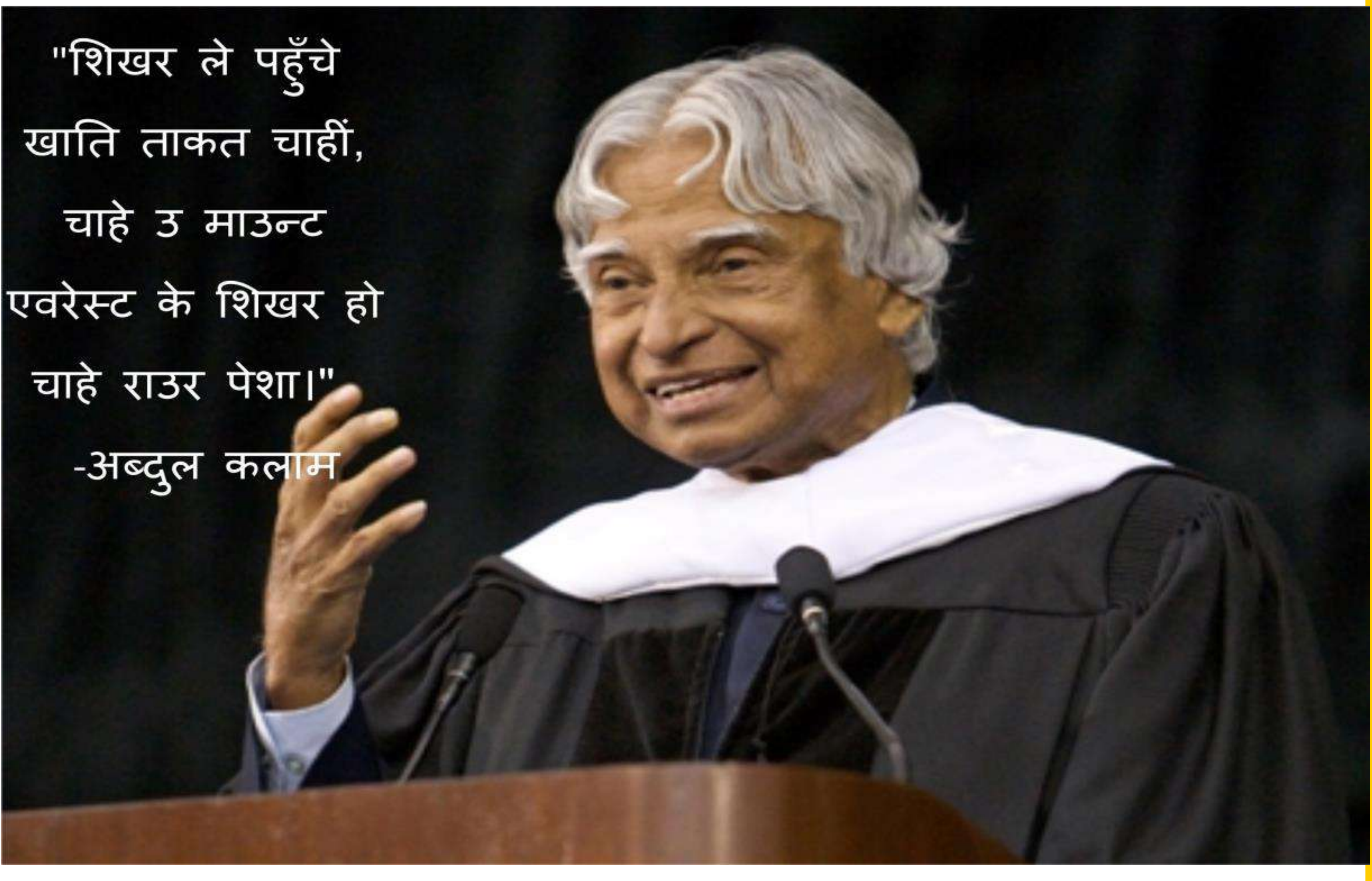

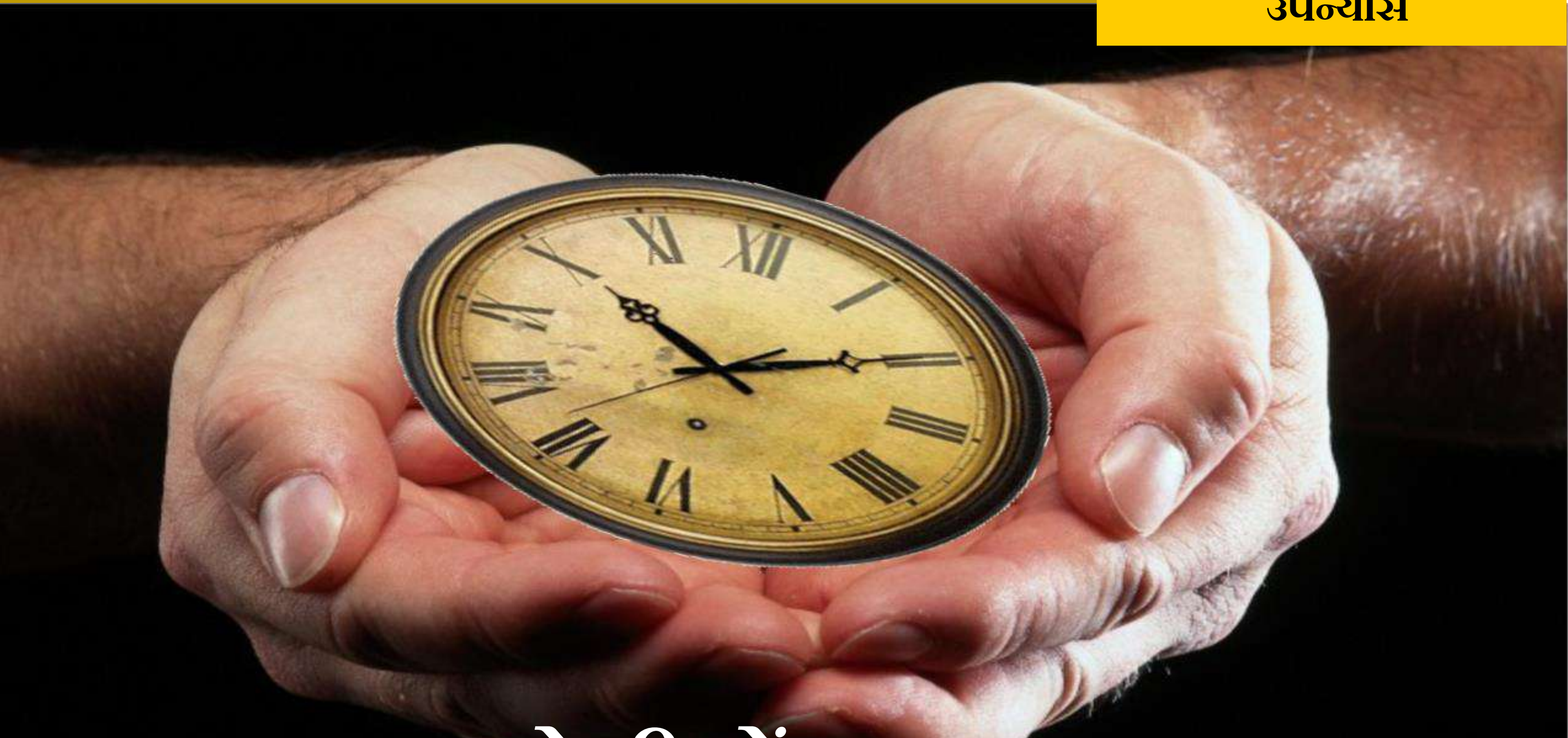

हथेली में समय-5

अनिल प्रसाद

कहानी अब ले – राजनीति में जातिवाद के प्रभाव इंद्रपुर में भी देखल जा रहल बा। इंद्रपुर के सामाजिक जीवन में एक तरह के अपनापन बा जेकरा के अभी तक ख़तम नइखे कर पइले। ओही परिवेश में कनिष्क बढ़ रहल बाड़े लेकिन ओही इंद्रपुर के सामाजिक परिवर्तन के दौर के एक काला पक्ष भी बा जेकर प्रभाव कइसन होई इ त कहानी में आवे वाला समय ही बताई ! **अब आगे पढ़ीं....**

ओहिबेरा एगो आउर घटना घटल इंद्रपुर के राजा के पुराना किला के भुइजबरा में खज़ाना मिलल। ओकरा के रखे खातिर बोरा के जरूरत पडल। बाबू कलिका चरण लाल दुगो चपरासी के संगे अपना आफिस से चलके ठाकुर-घर में अइले। कांता के बारात आवेके रहे ओकर राशन-पानी ठाकुर-घर में धइल रहे। ऊ बिना आगा -पीछा सोचले बोरा ले जाये खातिर सब बोरा के मुंह खोल देहले नतीजा इ भइल कि चाउर, दाल सब एके में मिल गइल आ जमीन पर छींटा गइल ! जबले राम सिंगारी हाँ हाँ कइली ओकरा पाहिले सब एक दूसरा में मिल गइल। राम सिंगारी माथा पर हाथ धके जमीन पर बैठ गइली । उनकर आवाज इंद्रपुर बाज़ार में गाँव देहात से आइल लोग के चुनावी चर्चा आ राजा के खजाना के मिलला के उत्सुकता के बीच में दब गइल । राम सिंगारी चुप चाप अपना दुःख के बाबू कालिका चरण लाल के खस्ता माली हालत से जोड़ के देखुई त उनका ठकुआ मार देहुवे । उनका ओह अन्हार में द्वारिका ही उनकर आशा के किरण लउकले। सुनला के बाद तुरत्ते द्वारिका अपना मित्र पंडित मंगल दत्त आ नारायणी प्रसाद के मदद से सब राशन-पानी के जुटान फेर से कइले । चुनावी चर्चा आ खजाना के मिलला के साथ-साथ इंद्रपुर बाजार में चिरंजी चायवाला के दूकान के पीछे जहाँ साग-सब्जी मांस-मछरी के हप्तावारी बाजार लागे ओहिजा जुआड़ी लोग के बाजार गर्म रहे। ऊ अपना दुनिया में मगन रहे लोग। दुपहर के भोजन के बाद जुआ खेले के गोल बन जाव आ कौड़ी के आउर तीन-पत्ती के रहस्य जमीन पर घुमा के फेके लोग। कुछ लोग छवे हs, नवे हs के मंतर पढ़े लागे लोग आ कुछ लोग पालथी मरले, दम सधले तीनु पत्ती के

अनिल प्रसाद

मूलतःहथुआ, बिहार के रहेवाला हयीं। अंग्रेजी साहित्य में शोध। साहित्य अकादमी खातिर यशपाल के 'झूठा सच' के कुछ अंशन के अंग्रेजी में अनुवाद। भारत, मिडिल ईस्ट, अमेरिका, चाइना, कनाडा अउरी ऑस्ट्रिया में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनन में पेपर प्रेजेंटेशन अउरी कविता पाठ।अंग्रेजी, हिंदी अउरी भोजपुरी में लेखन। यमन, लीबिया, पटना अउरी मुंबई के विश्वविद्यालयन में अध्यापन। सऊदी अरेबिया में अंग्रेजी भाषा आ साहित्य के प्रोफेसर बानी।

आँख के नीचे सटवले धीरे-धीरे खोल के ओकर रहस्य जाने के कोशिश करे लोग।

एही सब चीजन से दूर कालिका बाबू के परिवार के सबसे बड़ पतोह गार्गी परिवार के जिम्मेवारी उठवले रहली। कांता के अब एह घर से विदा होखेके समय आ गइल रहे। एही बीच में सुबह-सुबह बाप-बेटा में राजनीतिक बहस शुरू हो जाव। ओकरा बा एक दूसरा से रूसल। घर में निःशब्द शांति हो जाव। लेकिन दुनू आदमी के शतरंज आ ताश साथे-साथे खेले में कवनो परहेज ना रहे। अइसन दिने राम सिंगारी कांता के भेजस ओ लोग के खाना खाएके बुलावे खातिर लेकिन ऊ जाए में डेरास। आखिर में गार्गी के भेजल जाव लेकिन ऊ लोग अपना खेल में इतना व्यस्त रहे कि खाना खाए के बारे में सोचबे ना करे लोग। आ इहो चिंता ना करे लोग कि ओ लोग के खइला के बाद ही घर के मेहरारू लोग खाई। गार्गी हार-पाछ के लौउट आवास आ चौका के चौकठ पर बइठ के इन्तेजार करस। शतरंज के खेल में रानी आ राजा के बचावे के रहे। गर्मी के मौसम रहे, गार्गी चुपचाप आम के लदराइल पेड़ के देखत रहली सोचत रहली कि दही-चिउरा से अब टिन के छत पर नइखे चढ़ल जात सांझी खान जब किसुन कोला में कल से पानी देबे अइहें तब उनका के टिन पर चढवा के आम तुरवा लेब...लेकिन तबले त अन्हार हो जाई!

गार्गी कनिष्क के भेजली किसुन के बुलावे खातिर, किसुन जे लड़िकन के देख के कई तरह के मुंह बनावस। गार्गी के इहो चिंता रहे की आम तुरा जाएके चाहीं एकरा पाहिले कि बानर आ कौआ ओकरा के बर्बाद कर द सन। किसुन के खोजे कनिष्क सीधे चिरंजी के चाय के दूकान पर गइले। ओहिजा न मिलले त सुखी मियां के दूकान पर गइले। लेकिन किसुन ओहिजा भी ना मिलले। तब तक कनिष्क देखले की किसुन थोड़ी दूर पर खड़ा होके मुंह बना रहल बाड़े आ इंद्रपुर बाजार के कुछ लोग उनका के घेर के तमाशा देख रहल बा। किसुन पहिले अपना के खूब कड़ा क के आ मुंह बना के बाए दायें घूम जा तारे। किसुन के बड़ी मुश्किल से कनिष्क गार्गी के सन्देश देहले ओकरा बाद कनिष्क आगे आगे आ किसुन पीछे पीछे घर के और बढ़े लागल लोग। कनिष्क करियक्का बानर के बारे में सोचत रहले जे झुण्ड में आके आम के बर्बाद क द सन। ओकनी के आवेके पाहिले किसुन के घरे पहुँच जाये के चाहीं। अचानक भोला दर्जी के दूकान के पीछे से बबुन्ना के बाबूजी, हनुमानदास हलवाई उनका के स्नेह से पुकरले। ऊ कनिष्क के हमेशा बोला के मिठाई खिआवास। उनकर छोटका लड़िका कनिष्क के संगे पढ़त रहे। हनुमानदास इंद्रपुर के सबसे नामी आ धनिक हलवाई रहले। कनिष्क किसुन के आगे बढे के कह के रुक गइले। हनुमानदास कनिष्क के एगो कुर्सी के ओर इशारा कर के बइठे के कहले। ऊ ओह्बेरा जिलेबी बनावत रहले। कनिष्क के जिलेबी बहुत पसंद रहे सुबह खाए में खास करके। उनका जिलेबी के बनावट आ बनावल बड़ा आकर्षित करे। देखते देखते एगो टेल्हा पत्ता के प्लेट में गरम गरम जिलेबी कनिष्क के सामने टेबल पर रख दिहलस। कनिष्क हमेशा के तरह थोडा लजा गइले लेकिन हनुमानदास कनिष्क के अपना बेटा से कम ना मानस आ उनका के बहुत स्नेह से जिलेबी खिआवास। ई सोच के कनिष्क के बहुत अच्छा लागे आ ऊ खाए लागस।

बचपने से कनिष्क के जिलेबी के बनावट बहुत रहस्यमय लागे। जिलेबी जवन ऊपर से आ अन्दर से रस से भरल रहे! जब कनिष्क बी० ए० के विद्यार्थी रहले ऊ बराबर सोचस कि जिनगी के रूप भी शायद जिलेबी जइसन बा – घुमावदार, एक दोसरा के काटत रास्ता लेकिन कुछ दिन के बाद ना ओकर आदि बा ना अंत। कनिष्क खातिर जिलेबी के आकार एक शाश्वत प्रतीक रहे जिनगी के निरंतरता के जे मीठ गरम चाशनी में तैरता (अगर हडबडा के काटीं त गरम चाशनी से मुँहे जर जाई!) – अपना आप में एक छोटहन ब्रह्माण्ड! **(क्रमशः)**

www.bhojpurisahityangan.com

अनिमेष कुमार वर्मा

राखी डे – एगो दिन बहन-भाई के रिश्ता के नाम

उपर के शीर्षक पढ़ के रउरा आश्चर्य मत करीं की हम राखी डे काहे लिखले बानी । असल में ए घड़ी कवनों दिन के साथे डे लिख देहला से नवका पीढ़ी के लोग ओकरा खातिर तनी उत्सुक रहेला आ मनावेला । आ राखी अइसन त्योहार के मनावे के जेतना जरूरत आज के समाज में बा, हमरा जाने अउर दुसर कवनों समाज में पर्व के नईखे । हर पर्व के एगो आपन विशेषता होला जवन कबो कवनों भगवान त कबो कवनों दूसर धार्मिक मान्यता पे निर्भर करे ला । रक्षाबंधन पर्व के राखी भी कहल जाला । असल में राखी एगो धागा होला जेकरा के बहिन लोग सावन के पूर्णिमा के दिन भाई के कलाई पर बान्हेला आ माथा पे तिलक लगा के ओकर दीर्घायु होखे के प्रार्थना करे ला । जेकरा पे भाई आपन बहिन के आजीवन रक्षा करे के बचन देला । बाकी देखल जाओ त राखी के पर्व खाली भाई-बहिन ले सीमित नईखे । पुरोहित लोग आपन यजमान के राखी बान्हेला आ । महाभारत में भी राखी के उल्लेख मिलेला । सावन मास के पूर्णिमा के दिन, शिशुपाल के वध करत बेरा कृष्ण जी के अंगुरी में चोट लाग गइल रहे आ खून निकले लागल रहे । ई देख के द्रौपदी आपन साड़ी के टुकड़ा फाड़ के उनकर चोट पर बान्ह देहली । आ कृष्ण जी जे हिसाब से द्रौपदी के लाज बचवले रहनी उ सभे जानता । एगो अउरी कहानी अलेक्ज़ेंडर आ राजा पुरू के समय के बा । राजा पुरू के शौर्य आ पराक्रम से अलेक्ज़ेंडर बड़ी परेशान रहलें । तब उनका मेहरारु से उनकर चिंता देखल ना जात रहे आ उहो परेशान रहली । ओ समय उ रक्षाबंधन के पर्व के बारे में सुनले रहली । एह से कूटनीतिक चाल के चलते उ राज पुरु के राखी भेजली जेकरा के उ स्वीकार कर लेहलें । तब जाके युद्ध के स्थिति ओराइल आ बहिन के सुहाग के खतरा टलल । हमनी के इतिहास में अइसन-अइसन अनेक किस्सा मिल जाई।

हमरा व्यक्तिगत रूप से एगो किस्सा याद बा । हमनी के दशम कक्षा में रहनी सन । ओ घड़ी के उमिर भी टीनहा उमिर रहे । हमनी के ट्यूशन पढ़े जाईं सन त साथे कुछ लइकी लोग भी आओ । बातचीत में पता चलल कि रास्ता में एक जगह दू-तीन गो लफुआ सब कुछ कमेंटबाजी करो सन । राखी के एक दिन पहिले के बात रहल एगो लइकी हिम्मत करके आगे बढ़ल आ लफुअन में से एगो के हाथ धs के ओकरा पे राखी बान्ह देहलस । मालूम चलल की ओह दिन के बाद से खाली कमेंटबाजीए ना रुकल, ओकरा बाद उ लईका साँचहु के ओकरा के बहिन मान लेहलस आ माफी भी मंगलस । एतने ना, हमनी के बाद में पता चलल की लईका के धरम भी अलग रहे । खैर, ई बहुत आम बात ना ह, आ आज के माहौल देखत हम केहु के ना कंही की अइसन काम करो । बाकी हमनी के भारतीय लोग के संस्कार में दबल, हीन सही बाकी राखी के बहुत बड़ा सम्मान बा । हमनी के तीन भाई बानी जा, आपन बहिन नइखी, एकरा बावजूद राखी के दिन कबों अइसन महसूस ना भइल । जेतना लगाव फुफेरी-चचेरी बहिन लोग से बा शायद आपन बहिन से भी ओतने रहित । राखी के दिने कंधा ले राखी भर जाओ हमनी

अनिमेष कुमार वर्मा

सीवान के रहे वाला अनिमेष कुमार वर्मा जी भोजपुरी भाषा आ साहित्य में लगातार सिरजना कई रहल बानी । आखर पेज से जुडल अनिमेष जी भोजपुरी में गीत, कविता कहानी के संगे-संगे अपना फोटोग्राफी खातिर मानल जानी । फिलहाल इहाँ के अबूधाबी, यू॰ ए॰ ई॰ में रह रहल बानी ।

के। राखी अइसन त्यौहार बा जे भारतीय समाज के दूरदर्शिता के भी परिचय देला। भाई-बहिन के संबंध के अउर मजबूत करेला ई पर्व। समाज के हर लईका अगर आपन बहिन के अलावा एगो अउरी लईकी से राखी बन्हवा के रक्षा के बचन देउ त महिला के प्रति होखे वाला अपराध में बहुत कमी आ जाई।

आज के समय में वाकई बहुत चिंता के बात बा पुरुष-महिला के अनुपात में आवत गिरावट। आ एकर सबसे बेसी कारण बा कन्या-भ्रूण हत्या। अब जरूरत बा की राखी के दिन भाई के कलाई पर राखी बान्हे के बेरा बहिन भाई से बचन लेउ की तू ई कुरीति के आजीवन खिलाफ रहबs। आज के समय में महिला अपराध में जे हिसाब से इजाफा होता, हमनी के चाहीं की लईकन में एह पर्व के प्रति जागरूकता अउरी बढ़ावल जाउ आ महिला के प्रति संस्कार के बीज बचपन में ही बो दिहल जाउ। राखी पर्व कवनों एगो धर्म-जाति के त्योहार ह अइसनको नईखे आ हम ढेर गैर-हिन्दू लोग के भी राखी बान्हल आ आजीवन बचन निभावल देखले बानी। ओ हिसाब से देखल जाओ त ई एगो बड़का सामाजिक पर्व बा जेकरा के बढ़ावा जरूर देवे के चाहीं।

हालांकि आज के समय में एह पर्व प भी बाजारीकरण खूब हावी हो रहल बा। भाई-बहिन के बीच, सभे के, बस तोहफा के अदान-प्रदान पे ज्यादा ध्यान रहता। त्योहार में राखी के धागा मन से जुड़े खाती बान्हल जाला ना की खाली एगो औपचारिकता खाति। ई त्योहार भाई-बहिन के नेह के अउरी बरीआर करे खाति मनावे के चाहीं। आ बहिन के बचन लेवे के चाहीं की ओकर भाई ओकरा साथे समस्त नारी-जाति के सम्मान के भाव से देखी। राखी के एह पावन पर्व प हर भाई-बहिन के बधाई आ शुभकामना।

चित्र- शायक आलोक

www.bhojpurisahityangan.com

पाठक कोना

राउर बात

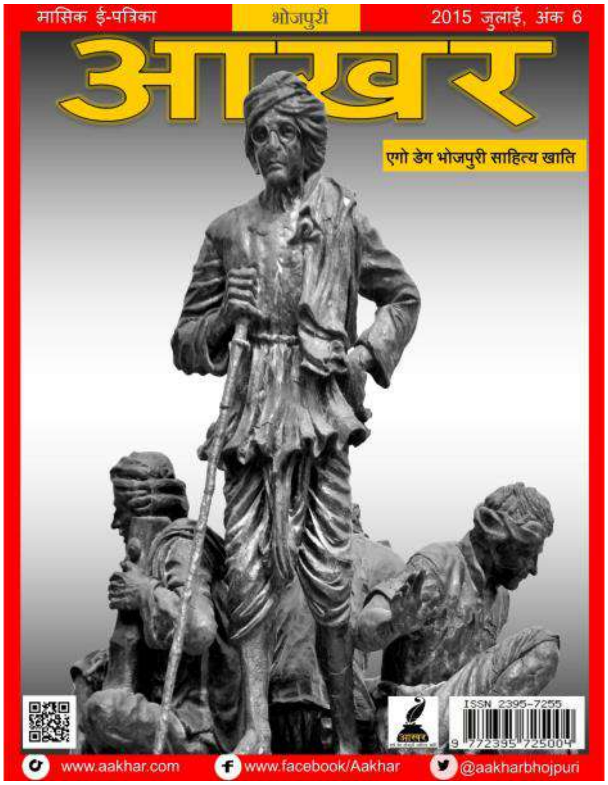

आखर टीम के अइसन सराहनीय प्रयास खातिर बहुत बहुत अभिनंदन। अगर सब कोई पूरा मन से एकरा उत्थान खातिर लागल रही त हमरा पक्का विश्वास बा कि एक दिन उच्चाई के शिखर छूए मे देर ना लागी।

● **एस. के. पाण्डेय, कैलिफोर्निया**

बधाई, आखर परिवार के सभे नेही-छोही के, संपादन मंडल के जे हेतना बरियार पत्रिका के रूप देले बा, सराहनीय, संग्रहणीय, आभार।

● **संतोष पटेल , दिल्ली**

सचमे आखर बेजोड़ बा आ बेजोड़ बा एकर हर लेख। हम आखर के हर अङ्क के पढले बानी, बहोत उच्च कोटी के रचना रहेला। भोजपुरी साहित्य के एह ओहदा तक लियावे लाए मनसे धन्यबाद बा। अइसेही लागल रही हमनी सारा नेपाल के भोजपुरीया लोग के तरफ से बहुत बहुत शुभकामना बा ।

● **मिथिलेश चौरसिया, नेपाल**

आखर पत्रिका के कारन हमरा अइसन परदेशी लोग के आपन भाषा पढे के मिलेला ।पुरे आखर परिवार के धन्यवाद।

● **सिसोदिया कृष्णा**

हम नया-नया फेसबुक प अईनी आ आखर से जुड़ल भाई-बंधु के मार्फत आखर के बारे में सुननी, हम एगो बात बोलम कि आखर पत्रिका के कभर पेज देखिए के बुझा जाला कि ई एगो इंटरनेशनल लेभल के काम हो रहल बा, सुभकामना पूरा टीम के ।

● **मदन मोहन**

आखर ई-पत्रिका के पूरा टीम के बहुत बहुत बधाई ।

● **राजीव कुमार सिंह**

आखर पहिला साहित्यिक पत्रिका देखनी जेकर संपादक लोग आपन परिचय पे ना बल्की लेखक के परिचय पे जोर देता लोग। जवन पत्रिका अपना के ना अपितु , भाषा के साहित्यकार के प्राथमिकता देवे उ जरूर सफल होइ । शुभकामना बा।

● **बी. एन. पाण्डेय (पटना)**

भोजपुरी साहित्य के संभारे खाती आ नया ऊंचाई देवे खाती राउर सहयोग के जरूरत बा। भोजपुरी में लिखीं आ "आखर" के साथे भोजपुरी साहित्य के बढ़ावे में सहयोग करीं।

~आखर परिवार

लेखक कोना

निहोरा

जय भोजपुरी,

माई, माई, मातृभाषा आ मातृभूमि के कवनो विकल्प नइखे। इनका आँचर के नीचे जवन सुख के अनुभुति होखेला ऊहे स्वर्गिक सुख हऽ। रोजी-रोटी के मजबूरी में ना चाहते करीब सभे अपना माई आ माटी से दूर बा। एह कमी के तऽ ना भरल जा सकेला बाकि मातृभाषा से दूरी के पाटे के काम आखर करत बा।

आखर के नींव भी एही उद्देश्य के पूरा करे खाति रखल गइल बा। आखर रउआ सभे से बा, रउआ सभे खाति बा। इ राउर आपन मंच हऽ जहाँ रउआ आपन माई, माटी आ मातृभाषा भोजपुरी से जुड़ल अनुभव यथा -कथा कहानी, व्यंग्य, संस्मरण, रिपोतार्ज, गीत-गज़ल, कविता, चित्रकारी भेज सकत बानी।

भोजपुरी शुरु से ही लोक भाषा के रुप मे जानल जाले जवन आधुनिक युग मे आपन पहचान हर क्षेत्र हर रुप मे हर तरह से देखा रहल बिआ। भोजपुरिया क्षेत्र मे माई बेटा के ले के कई गो त्योहार बा , सितम्बर महीना मे कुछ एक अईसन ही त्योहार भी परे वाला बा।

आखर ई पत्रिका के सितम्बर अंक भोजपुरी भाषा के लोक पहचान प केंद्रित बा , आ अगिला अंक खाति विषय चुनाईल बा , लोक कथा / जातक कथा / दन्त कथा / लोक साहित्य / लोक संगीत / लोक नृत्य / लोक गीत / लोक नाटक/ लोक कला , अर्थात लोक भाषा से जुड़ल लोक से जुड़ल लेख रचना। जन्माष्टमी से जुड़ल लेख , संस्मरण , भोजपुरियन के पावन पर्व जिउतिया से जुड़ल पारम्परिक शैली मे लेख के स्वागत बा।

रउवा सभ से निहोरा बा कि आपन अगिला लेख, एहि बिंदुअन प केंद्रित कई के लिखी जवना से बेसी से बेसी लोग भोजपुरी भाषा आ एह भाषा से जुड़ल पारम्परिक , सांस्कारिक , सांस्कृतिक , लोक शैली से **आपन परिचय करा सके ।**

रचना भेजे के कुछ जरुरी नियम -

- आपन मौलिक रचना युनिकोड फॉन्ट/कृतिदेव फॉन्ट में टाइप करके भेजीं।
- रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार अपने से प्रूफ रीडिंग जरुर कर लीं। कौमा, हलंत, पूर्णविराम पे विशेष ध्यान दीं। रचना में डॉट के जगहा सिर्फ पूर्णविराम राखीं।
- ध्यान रहे राउर रचना में कवनो असंसदीय आ अश्लील भाषा भा उदाहरण ना होखे।
- राउर रचना के स्वीकृति के सूचना मेल भा मैसेज से दियाई।
- रचना के साथे आपन पासपोर्ट साइज के फोटो आ आपन परिचय (नाम, पता, कार्य आ आपन प्रकाशित किताबन के बारे में यदि होखे त) जरुर भेजीं।
- रचना भेजे के पता बा-

aakharbhojpuri@gmail.com

- पत्रिका खातिर राउर हाथ के खींचल फोटोग्राफ, राउर बनावल रेखाचित्र, कार्टून जे विभिन्न विषय के अनुरूप होखे, उहो भेजीं।
- छोट-छोट लईकन के कलाकारी के भी प्रोत्साहित करे खातिर स्थान दियाई। ओहनी के लिखल रचना भा चित्र भेजीं।

www.bhojpurisahityangan.com

आखर

भोजपुरी ई -पत्रिका

ISSN 2395-7255

ISSN 2395-7255

www.aakhar.com www.facebook/Aakhar @aakharbhojpuri